2 इतिहास

सुलैमान बुद्धि की याचना करता है

1 सुलैमान एक बहुत शक्तिशाली राजा बन गया क्योंकि
यहोवा उसका परमेश्वर, उसके साथ था। यहोवा ने
सुलैमान को अत्यधिक महान बनाया।

2सुलैमान ने इस्राएल के सभी लोगों से बातें की। उसने
सेना के शतपतियों, सहस्त्रपतियों, न्यायाधीशों, सारे
इस्राएल के सभी प्रमुखों तथा परिवारों के प्रमुखों से बातें
की। 3तब सुलैमान और सभी लोग उसके साथ इकट्ठे
हुए और उस उच्चस्थान को गये जो गिबोन नगर में था।
परमेश्वर का मिलाप का तम्बू वहाँ था। यहोवा के
सेवक मूसा ने उसे तब बनाया था जब वह और इस्राएल
के लोग मरुभूमि में थे। 4दाऊद परमेश्वर के साक्षीपत्र
के सन्दूक को किर्यत्यारीम से यरुशलेम तक लाया था।
दाऊद ने यरुशलेम में इसको रखने के लिये एक स्थान
बनाया था। दाऊद ने यरुशलेम में साक्षीपत्र के सन्दूक
के लिए एक तम्बू लगा दिया था। 5बसलेल ने एक काँसे
की वेदी बनाई थी। बसलेल ऊरी का पुत्र था। वह काँसे
की वेदी गिबोन में पवित्र तम्बू के सामने थी। इसलिए
सुलैमान और वे लोग यहोवा से राय लेने गिबोन गए।
6मिलाप के तम्बू में यहोवा के सामने काँसे की वेदी
तक सुलैमान गया। सुलैमान ने एक हजार होमबलि वेदी
पर चढ़ाई।

7उस रात परमेश्वर सुलैमान के पास आया। परमेश्वर
ने कहा, "सुलैमान, मुझसे तुम वह माँगों जो कुछ तुम
चाहते हो कि मैं तुम्हें दूँ।"

8सुलैमान ने परमेश्वर से कहा, "तू मेरे पिता दाऊद
के प्रति बहुत कृपालु रहा है। तूने मुझे, मेरे पिता के
स्थान पर नया राजा होने के लिये चुना है। 9यहोवा
परमेश्वर, अब, तूने जो वचन मेरे पिता को दिया है उसे
बने रहने दे। तूने मुझे ऐसी प्रजा का शासक बनाया, जो
पृथ्वी के रेतकणों की तरह असंख्य है! 10अब तू मुझे
बुद्धि और ज्ञान दे। तब मैं इन लोगों को सही राह पर ले
चल सकूँगा। कोई भी तेरी सहायता के बिना इन पर
शासन नहीं कर सकता!"

11परमेश्वर ने सुलैमान से कहा, "तुम्हारी भावनायें
बिल्कुल ठीक हैं। तुमने धन या सम्पत्ति या सम्मान नहीं
माँगा है। तुमने यह भी नहीं माँगा है कि तुम्हारे शत्रु मर
जायें। तुमने लम्बी उम्र भी नहीं माँगी है। किन्तु तुमने
अपने लिये बुद्धि और ज्ञान माँगा है। जिससे तुम मेरी
प्रजा के सम्बन्ध में बुद्धिमता से निर्णय ले सको, जिसका
मैंने तुमको राजा बनाया है। 12इसलिये मैं तुम्हें बुद्धि
और ज्ञान दूँगा। मैं तुम्हें धन, वैभव और सम्मान भी
दूँगा। तुम्हारे पहले होने वाले राजाओं के पास इतना धन
और इतना सम्मान कभी नहीं था और तुम्हारे बाद होने
वाले राजाओं के पास भी इतना धन और सम्मान नहीं
होगा।"

13इस प्रकार, सुलैमान आराधना के स्थान गिबोन
को गया। तब सुलैमान ने उस मिलापवाले तम्बू को
छोड़ा और यरूशलेम लौट गया और इस्राएल पर राज्य
करने लगा।

सुलैमान धन-संग्रह और अपनी सेना खड़ी करता है

14सुलैमान ने घोड़े और रथ अपनी सेना के लिये
एकत्रित करना आरम्भ किया। सुलैमान के पास एक
हजार चार सौ रथ और बारह हजार घुड़सवार थे।
सुलैमान ने उनको रथ नगरों में रखा। सुलैमान ने
यरुशलेम में भी उनमें से कुछ को रखा, अर्थात वहाँ
जहाँ राजा का निवास था। 15सुलैमान ने यरुशलेम में
बहुत सा चाँदी और सोना इकट्ठा किया। उसने इतना
अधिक चाँदी और सोना इकट्ठा किया कि वह चट्टानों
सा सामान्य हो गया। सुलैमान ने देवदार की बहुत सी
लकड़ी इकट्ठी की। उसने देवदार की इतनी अधिक
लकड़ी इकट्ठी की, कि वह पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश के
गूलर के वृक्ष समान सामान्य हो गयी। 16सुलैमान ने
मिस्र और कुए (या कोये देश से) से घोड़े मँगाए। राजा
के व्यापारियों ने घोड़े कोये में खरीदे। 17सुलैमान के
व्यापारियों ने मिस्र से एक रथ चाँदी के छ: सौ शेकेल में
और घोड़ा चाँदी के एक सौ पचास शेकेल में खरीदा।
तब व्यापारियों ने घोड़ों और रथों को हित्ती लोगों के
राजाओं तथा अराम के राजाओं के हाथ बेच दिया।

सुलैमान मन्दिर बनाने की योजना बनाता है

2 सुलैमान ने यहोवा के नाम की प्रतिष्ठा के लिये
एक मन्दिर और अपने लिये एक राजमहल बनाने
का निश्चय किया। 2सुलैमान ने चीज़े लाने के लिए
सत्तर हजार व्यक्तियों को चुना और पहाड़ी प्रदेश में

पत्थर खोदने के लिये अस्सी हजार व्यक्तियों को चुना
और उसने तीन हजार छ: सौ व्यक्ति मज़दूरों की निगरानी
के लिये चुने।
3तब सुलैमान ने हूराम को संदेश भेजा। हूराम सोर
नगर का राजा था। सुलैमान ने संदेश दिया था, "मुझे
वैसे ही सहायता दो जैसे तुमने मेरे पिता दाऊद को
सहायता दी थी। तुमने देवदार के पेड़ों से उनको
लकड़ी भेजी थी जिससे वे अपने रहने के लिए महल
बना सके थे। 4मैं अपने यहोवा परमेश्वर के नाम का
सम्मान करने के लिये एक मन्दिर बनाऊँगा। मैं यह
मन्दिर यहोवा को अर्पित करुँगा जिसमे हमारे लोग
उसकी उपासना कर सकेंगे। मैं उसको इस कार्य के
लिये अर्पित करूँगा कि उसमे इस्राएली जाति के स्थायी
धर्मप्रथा के अनुसार हमारे यहोवा परमेश्वर के पवित्र
विश्राम दिवसों और नवचन्द्र तथा निर्धारित पर्वो पर
सवेरे और शाम सुगन्धित धूप द्रव्य जलाये जायें, भेंट की
रोटियाँ अर्पित की जायें और अग्निबलि चढ़ायी जाये।
5"जो मन्दिर मैं बनाऊँगा वह महान होगा, क्योंकि
हमारा परमेश्वर सभी देवताओं से बड़ा है। 6किन्तु कोई
भी व्यक्ति सही अर्थ में हमारे परमेश्वर के लिये भवन
नहीं बना सकता। स्वर्ग हाँ, उच्चतम स्वर्ग भी परमेश्वर
को अपने भीतर नहीं रख सकता! मैं परमेश्वर के
लिये मन्दिर नहीं बना सकता। मैं केवल एक स्थान
परमेश्वर के सामने सुगन्धि जलाने के लिये बना सकता
हूँ।
7"अब, मेरे पास सोना, चाँदी, काँसा और लोहे के
काम करने में एक कुशल व्यक्ति को भेजो। उस व्यक्ति
को इसका ज्ञान होना चाहिए कि बैंगनी, लाल, और
नीले कपड़ों का उपयोग कैसे किया जाता है। उस
व्यक्ति को यहाँ यहूदा और यरूशलेम में मेरे कुशल
कारीगरों के साथ नक्काशी करनी होगी। मेरे पिता
दाऊद ने इन कुशल कारीगरों को चुना था। 8मेरे पास
लबानोन देश से देवदार, चीड़ और चन्दन और सनोवर
की लकड़ियाँ भी भेजो। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे सेवक
लबानोन से पेड़ों को काटने में अनुभवी हैं। मेरे सेवक
तुम्हारे सेवकों की सहायता करेंगे। 9क्योंकि मुझे प्रचुर
मात्रा में इमारती लकड़ी चाहिये। जो मन्दिर मैं बनवाने
जा रहा हूँ वह विशाल और अद्भुत होगा। 10मैंने एक
लाख पच्चीस हजार बुशल गेहूँ भोजन के लिये, एक
लाख पच्चीस हजार बुशल जौ, एक लाख पन्द्रह हजार
गैलन दाखमधु और एक लाख पन्द्रह हजार गैलन तेल
तुम्हारे उन सेवकों के लिये दिया है जो इमारती लकड़ी
के लिए पेड़ों को काटते हैं।"
11तब सोर के राजा हूराम ने सुलैमान को उत्तर दिया।
उसने सुलैमान को एक पत्र भेजा। पत्र में यह कहा गया
था: "सुलैमान, यहोवा अपने लोगों से प्रेम करता है। यही
कारण है कि उसने तुमको उनका राजा चुना।"
12हूराम ने यह भी कहा, "इस्राएल के यहोवा, परमेश्वर
की प्रशंसा करो! उसने धरती और आकाश बनाया।
उसने राजा दाऊद को बुद्धिमान पुत्र दिया। सुलैमान,
तुम्हें बुद्धि और समझ है। तुम एक मन्दिर यहोवा के
लिये बना रहे हो। तुम अपने लिए भी एक राजमहल
बना रहे हो। 13मैं तुम्हारे पास एक कुशल कारीगर
भेजूँगा। उसे विभिन्न प्रकार की बहुत सी कलाओं की
जानकारी है। उसका नाम हूराम–अबी है। 14उसकी माँ
दान के परिवार समूह की थी और उसका पिता सोर
नगर का था। हूराम–अबी सोना, चाँदी, काँसा, लोहा,
पत्थर और लकड़ी के काम में कुशल है। हूराम–अबी
बैंगनी, नीले, तथा लाल कपड़ों और बहुमूल्य मलमल
को काम में लाने में भी कुशल है और हूराम–अबी
नक्काशी के काम में भी कुशल है। हर किसी योजना
को, जिसे तुम दिखाओगे, समझने में वह कुशल है। वह
तुम्हारे कुशल कारीगरों की सहायता करेगा और वह
तुम्हारे पिता राजा दाऊद के कुशल कारीगरों की सहायता
करेगा।
15"तुमने गेहूँ, जौ, तेल और दाखमधु भेजने का जो
वचन दिया था, कृपया उसे मेरे सेवकों के पास भेज दो
16और हम लोग लबानोन देश से लकड़ी काटेंगे। हम
लोग उतनी लकड़ी काटेंगे जितनी तुम्हें आवश्यकता है।
हम लोग समुद्र में लकड़ी के लट्ठों के बेड़े का उपयोग
जापा नगर तक लकड़ी पहुँचाने के लिये करेंगे। तब
तुम लकड़ी को यरूशलेम ले जा सकते हो।"
17तब सुलैमान ने इस्राएल में रहने वाले सभी बाहरी
लोगों को गिनवाया। यह उस समय के बाद हुआ जब
दाऊद ने लोगों को गिना था। दाऊद, सुलैमान का पिता
था। उन्हें एक लाख तिरपन हजार बाहरी लोग देश में
मिले। 18सुलैमान ने सत्तर हजार बाहरी लोगों को चीज़ें
ढोने के लिये चुना। सुलैमान ने अस्सी हजार बाहरी
लोगों को पर्वतों में पत्थर काटने के लिए चुना और
सुलैमान ने तीन हजार छ: सौ बाहरी लोगों को काम
पर लगाये रखने के लिए निरीक्षक रखा।

सुलैमान मन्दिर बनाता है

3 सुलैमान ने यहोवा का मन्दिर मोरिय्याह पर्वत पर
यरूशलेम में बनाना आरम्भ किया। पर्वत मोरिय्याह
वह स्थान है जहाँ यहोवा ने सुलैमान के पिता दाऊद को
दर्शन दिया था। सुलैमान ने उसी स्थान पर मन्दिर
बनाया जिसे दाऊद तैयार कर चुका था। यह स्थान उस
खलिहान में था जो ओर्नान का था। ओर्नान यबूसी लोगों
में से एक था। 2सुलैमान ने इस्राएल में अपने शासन के
चौथे वर्ष के दूसरे महीने में मन्दिर बनाना आरम्भ
किया।
3सुलैमान ने परमेश्वर के मन्दिर की नींव के निर्माण
के लिये जिस माप का उपयोग किया, वह यह है: नींव

साठ हाथ लम्बी और बीस हाथ चौड़ी थी। सुलैमान ने
प्राचीन हाथ की माप का ही उपयोग तब किया जब
उसने मन्दिर को नापा। 4मन्दिर के सामने का द्वार
मण्डप बीस हाथ लम्बा और बीस हाथ ऊँचा था। सुलैमान
ने द्वार मण्डप के भीतरी भाग को शुद्ध सोने से मढवाया
5सुलैमान ने बड़े कमरों की दीवार पर सनोवर लकड़ी
की बनी चौकोर सिल्लियाँ रखीं। तब उसने सनोवर की
सिल्लियों को शुद्ध सोने से मढ़ा और उसने शुद्ध सोने
पर खजूर के चित्र और जंजीरें बनाई। 6सुलैमान ने
मन्दिर की सुन्दरता के लिये उसमें बहुमूल्य रत्न
लगाए। जिस सोने का उपयोग सुलैमान ने किया वह
पर्वैम से आया था। 7सुलैमान ने मन्दिर के भीतरी
भवन को सोने से मढ़ दिया। सुलैमान ने छत की कड़ियाँ,
चौखटों, दीवारों और दरवाजों पर सोना मढ़वाया। सुलैमान
ने दीवारों पर करूब (स्वर्गदूतों) को खुदवाया।

8तब सुलैमान ने सर्वाधिक पवित्र स्थान बनाया।
सर्वाधिक पवित्र स्थान बीस हाथ लम्बा और बीस हाथ
चौड़ा था। यह उतना ही चौड़ा था जितना पूरा मन्दिर
था। सुलैमान ने सर्वाधिक पवित्र स्थान की दीवारों पर
सोना मढ़वाया। सोने का वजन लगभग बीस हजार चार
सौ किलोग्राम था। 9सोने की कीलों का वजन पाँच सौ
पच्हत्तर ग्राम था सुलैमान ने ऊपरी कमरों को सोने से
मढ़ दिया। 10सुलैमान ने दो करूब (स्वर्गदूत) सर्वाधिक
पवित्र स्थान पर रखने के लिये बनाये। कारीगरों ने
करूब स्वर्गदूतों को सोने से मढ़ दिया। 11करूब (स्वर्गदूतों)
का हर एक पँख पाँच हाथ लम्बा था। पंखों की पूरी
लम्बाई बीस हाथ थी। पहले करूब (स्वर्गदूत) का एक
पंख कमरे की एक ओर की दीवार को छूता था। दूसरा
पंख दूसरे करूब (स्वर्गदूत) के पंख को छूता था।
12दूसरे करूब (स्वर्गदूत) का दूसरा पंख कमरे की
दूसरी ओर की दूसरी दीवार को छूता था। 13करूब
(स्वर्गदूत) के पंख सब मिलाकर बीस हाथ फैले थे।
करूब (स्वर्गदूत) भीतर पवित्र स्थान की ओर देखते
हुए खड़े थे।

14उसने नीले, बैंगनी, लाल और कीमती कपड़ों तथा
बहुमूल्य सूती वस्त्रों से मध्यवर्ती पर्दे को बनवाया। परदे
पर करुबों के चित्र काढ़ दिए।

15सुलैमान ने मन्दिर के सामने दो स्तम्भ खड़े किये।
स्तम्भ पैंतिस हाथ ऊँचे थे। दोनों स्तम्भों का शीर्ष भाग
दो पाँच हाथ लम्बा था। 16सुलैमान ने जंजीरों के हार
बनाए। उसने जंजीरों को स्तम्भों के शीर्ष पर रखा।
सुलैमान ने सौ अनार बनाए और उन्हें जंजीरों से
लटकाया। 17तब सुलैमान ने मन्दिर के सामने स्तम्भ
खड़े किये। एक स्तम्भ दायीं ओर था। दूसरा स्तम्भ
बाँयी ओर खड़ा था। सुलैमान ने दायीं ओर के स्तम्भ
का नाम "याकीन" और सुलैमान ने बाँयी ओर के
स्तम्भ का नाम "बोअज़" रखा।

मन्दिर की सज्जा

4 सुलैमान ने वेदी बनाने के लिये काँसे का उपयोग
किया। वह काँसे की वेदी बीस हाथ लम्बी, बीस
हाथ चौड़ी और दस हाथ ऊँची थी। 2तब सुलैमान ने
पिघले काँसे का उपयोग एक विशाल हौज बनाने के
लिये किया। विशाल हौज गोल था और एक सिरे से
दूसरे सिरे तक इसकी नाप दस हाथ थी और यह पाँच
हाथ ऊँचा और दस हाथ घेरे वाला था। 3विशाल काँसे
के तालाब के सिरे के नीचे और चारों ओर तीस हाथ
की बैलों की आकृतियाँ ढाली गई थी। जब तालाब
बनाया गया तब उस पर दो पंक्तियों में बैल बनाए गए।
4वह विशाल काँसे का तालाब बारह बैलों की विशाल
प्रतिमा पर स्थित था। तीन बैल उत्तर की ओर देखते
थे। तीन बैल पश्चिम की ओर देखते थे। तीन बैल
दक्षिण की ओर देखते थे। तीन बैल पूर्व की ओर देखते
थे। विशाल काँसे का तालाब इन बैलों के ऊपर था।
सभी बैल अपने पिछले भागों को एक दूसरे के साथ
तथा केन्द्र के साथ मिलाए हुए खड़े थे। 5विशाल काँसे
का तालाब आठ सेंटीमीटर मोटा था। विशाल तालाब
का सिरा एक प्याले के सिरे की तरह था। सिरा खिली
हुई लिली की तरह था। इसमें छियासठ हजार लीटर आ
सकता था।

6सुलैमान ने दस चिलमचियाँ बनाई। उसने विशाल
काँसे के तालाब की दायीं ओर पाँच चिलमचियाँ रखीं
और सुलैमान ने काँसे के विशाल तालाब की बाँयी ओर
पाँच चिलमचियाँ रखीं। इन दस चिलमचियों का उपयोग
होमबलि के लिए चढ़ाई जाने वाली चीज़ों को धोने के
लिये होना था। किन्तु विशाल तालाब का उपयोग बलि
चढ़ाने के पहले याजकों के नहाने के लिये होना था।

7सुलैमान ने निर्देश के अनुसार सोने के दस दीपाधार
बनाए और उनको मन्दिर में रख दिया: पाँच दाहिनी
ओर और पाँच बाँयी ओर। 8सुलैमान ने दस मेज़ें बनाई
और उन्हें मन्दिर में रखा। मन्दिर में पाँच मेज़े दायीं थीं
और पाँच मेज़ें बाँयी। सुलैमान ने सौ चिलमचियाँ बनाने
के लिये सोने का उपयोग किया। 9सुलैमान ने एक
याजकों का आँगन, महाप्रांगन, और उसके लिए द्वार
बनाए। उसने आँगन में खुलने वाले दरवाज़ों को मढ़ने
के लिए काँसे का उपयोग किया। 10तब उसने विशाल
काँसे के तालाब को मन्दिर के दक्षिण पूर्व की ओर
दायीं ओर रखा।

11हूराम ने बर्तन, बेल्चे और कटोरों को बनाया। तब
हूराम ने परमेश्वर के मन्दिर में सुलैमान के लिये
अपने काम खतम किये। 12हूराम ने दोनों स्तम्भों और
दोनों स्तम्भों के शीर्षभाग के विशाल दोनों कटोरों को
बनाया था। हूराम ने दोनों स्तम्भों के शीर्ष भाग के
विशाल दोनों कटोरों को ढकने के लिये सज्जाओं के
जाल भी बनाए थे। 13हूराम चार सौ अनार दोनों सज्जा

जालों के लिये बनाए। हर एक जाल के लिए अनारों की
दो पत्तियाँ थीं। दोनों स्तम्भों के शीर्षभाग पर के विशाल
कटोरे जाल से ढके थे। 14हूराम ने आधार दण्ड और
उनके ऊपर के प्यालों को भी बनाया। 15हूराम ने एक
विशाल काँसे का तालाब और तालाब के नीचे बारह
बैल बनाए। 16हूराम ने बर्तन, बेल्चे, काँटे और सभी
चीज़ें राजा सुलैमान के यहोवा के मन्दिर के लिये बनाई।
ये चीज़ें कलई चढ़े काँसे की बनी थीं। 17राजा सुलैमान
ने पहले इन चीज़ों को मिट्टी के साँचे में ढाला। ये साँचे
सुक्कोत और सरेदा नगरों के बीच यरदन घाटी में बने
थे। 18सुलैमान ने ये इतनी अधिक मात्रा में बनाई कि
किसी व्यक्ति ने उपयोग में लाए गए काँसे को तोलने का
प्रयत्न नहीं किया।

19सुलैमान ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये भी चीज़ें
बनाई। सुलैमान ने सुनहली वेदी बनाई। उसने वे मेज़ें
बनाई जिन पर उपस्थिति की रोटियाँ रखी जाती थीं।
20सुलैमान ने दीपाधार और उनके दीपक शुद्ध सोने के
बनाए। बनी हुई योजना के अनुसार दीपकों को पवित्र
स्थान के सामने भीतर जलना था। 21सुलैमान ने फूलों,
दीपकों और चिमटे को बनाने के लिए शुद्ध सोने का
उपयोग किया। 22सुलैमान ने सलाईयाँ, प्याले, कढ़ाईयाँ
और धूपदान बनाने के लिये शुद्ध सोने का उपयोग
किया। सुलैमान ने मन्दिर के दरवाजों, सर्वाधिक पवित्र
स्थान और मुख्य विशाल कक्ष के भीतरी दरवाजों को
बनाने के लिये शुद्ध सोने का उपयोग किया।

5 तब सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के लिए किये गए
सभी काम पूरे कर लिए। सुलैमान उन सभी चीज़ों
को लाया जो उसके पिता दाऊद ने मन्दिर के लिये दी
थी। सुलैमान सोने चाँदी की बनी हुई वस्तुएँ तथा और
सभी सामान लाया। सुलैमान ने उन सभी चीज़ों को
परमेश्वर के मन्दिर के कोषागार में रखा।

पवित्र सन्दूक मन्दिर में पहुँचाया गया

2सुलैमान ने इस्राएल के सभी अग्रजों, परिवार समूहों
के प्रमुखों और इस्राएल में परिवार प्रमुखों को इकट्ठा
किया। उसने सभी को यरुशलेम में इकट्ठा किया।
सुलैमान ने यह इसलिये किया कि लेवीवंशी साक्षीपत्र
के सन्दूक को दाऊद के नगर से ला सकें। दाऊद का
नगर सिय्योन है। 3राजा सुलैमान से इस्राएल के सभी
लोग सातवें महीने के पर्व के अवसर पर एक साथ
मिले। 4जब इस्राएल के सभी अग्रज आ गए तब लेवीवंशियों
ने साक्षीपत्र के सन्दूक को उठाया। 5तब याजक और
लेवीवंशी साक्षीपत्र के सन्दूक को मन्दिर में ले गए।
याजक और लेवीवंशी मिलापवाले तम्बू तथा इसमें जो
पवित्र चीज़ें थीं उन्हें भी यरूशलेम ले आए।

6राजा सुलैमान और इस्राएल के सभी लोग साक्षीपत्र
के सन्दूक के सामने मिले। राजा सुलैमान और इस्राएल
के सभी लोगों ने भेड़ों और बैलों की बलि चढ़ाई। वहाँ
इतने अधिक मेढ़े व बैल थे कि कोई व्यक्ति उन्हें गिन
नहीं सकता था। 7तब याजकों ने यहोवा के साक्षीपत्र के
सन्दूक को उस स्थान पर रखा, जो इसके लिये तैयार
किया गया था। वह सर्वाधिक पवित्र स्थान मन्दिर के
भीतर था। साक्षीपत्र के सन्दूक को करुब (स्वर्गदूत) के
पंखों के नीचे रखा गया। 8साक्षीपत्र के सन्दूक के स्थान
के ऊपर करूबों के पंख फैले हुये थे, करूब (स्वर्गदूत)
साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर खड़े थे। बल्लियाँ सन्दूक
को ले जाने में प्रयोग होती थी। 9बल्लियाँ इतनी लम्बी
थीं कि सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने से उनके सिरे
देखे जा सकें। किन्तु कोई व्यक्ति मन्दिर के बाहर से
बल्लियों को नहीं देख सकता था। बल्लियाँ, अब तक
आज भी वहाँ हैं। 10साक्षीपत्र के सन्दूक में दो शिलाओं
के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था। मूसा ने दोनों शिलाओं
को होरेब पर्वत पर साक्षीपत्र के सन्दूक में रखा था।
होरेब वह स्थान था जहाँ यहोवा ने इस्राएल के लोगों के
साथ वाचा की थी। यह उसके बाद हुआ जब इस्राएल के
लोग मिस्र से चले आए।

11तब वे सभी याजक पवित्र स्थान से बाहर आए।
सभी वर्ग के याजकों ने अपने को पवित्र कर लिया था
12और सभी लेवीवंशी गायक वेदी के पूर्वी ओर खड़े
थे। सभी आसाप , हेमान और यदूतून के गायक समूह
वहाँ थे और उनके पुत्र तथा उनके सम्बन्धी भी वहाँ
थे। वे लेवीवंशी गायक सफेद बहुमूल्य मलमल के वस्त्र
पहने हुए थे। वे झाँझ, वीणा और सांरगी लिये थे। उन
लेवीवंशी गायकों के साथ वहाँ एक सौ बीस याजक थे।
वे एक सौ बीस याजक तुरही बजा रहे थे। 13जो तुरही
बजा रहे थे और गा रहे थे, वे एक व्यक्ति की तरह थे।
जब वे यहोवा की स्तुति करते थे और उसे धन्यवाद
देते थे तब वे एक ही ध्वनि करते थे। तुरही, झाँझ तथा
अन्य वाद्य यन्त्रों पर वे तीव्र घोष करते थे, उन्होंने
यहोवा की स्तुति में यह गीत गाया

"यहोवा की स्तुति करो क्योंकि वह भला है। उसका
प्रेम शाश्वत है।"

तब यहोवा का मन्दिर मेघ से भर उठा। 14मेघ के
कारण याजक सेवा कर न सके, इसका कारण था–
यहोवा की महिमा मन्दिर में भर गई थी।

6 तब सुलैमान ने कहा, "यहोवा ने कहा कि वह
काले घने बादल में रहेगा। 2हे यहोवा, मैंने एक
भवन तेरे रहने के लिये बनाया है। यह एक भव्य भवन
है। यह तेरे सर्वदा रहने का स्थान है!"

सुलैमान का भाषण

3राजा सुलैमान मुड़ा और उसने अपने सामने खड़े
सभी इस्राएल के लोगों को आशीर्वाद दिया। 4सुलैमान ने
कहा, "इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा की प्रशंसा करो!

यहोवा ने वह कर दिया है जो करने का वचन उसने
तब दिया था जब उसने मेरे पिता दाऊद से बातें की थी।
परमेश्वर यहोवा ने यह कहा था: 5‘जब से मैं अपने
लोगों को मिस्र से बाहर लाया तब से अब तक मैंने
इस्राएल के किसी परिवार समूह से कोई नगर नहीं चुना
है, जहाँ मेरे नाम का एक भवन बने। मैंने अपने निज
लोगों इस्राएलियों पर शासन करने के लिए भी किसी
व्यक्ति को नहीं चुना है। 6किन्तु अब मैंने यरुशलेम को
अपने नाम के लिये चुना है और मैंने दाऊद को अपने
इस्राएली लोगों का नेतृत्व करने के लिये चुना है।’

7“मेरे पिता दाऊद की यह इच्छा थी कि वह इस्राएली
राष्ट्र के यहोवा परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए
एक मन्दिर बनवाये। 8किन्तु यहोवा ने मेरे पिता से
कहा, ‘दाऊद, जब तुमने मेरे नाम पर मन्दिर बनाने की
इच्छा की तब तुमने ठीक ही किया। 9किन्तु तुम मन्दिर
बना नहीं सकते। किन्तु तुम्हारा अपना पुत्र मेरे नाम पर
मन्दिर बनाएगा।’ 10अब, यहोवा ने वह कर दिया है जो
उसने करने को कहा था। मैं अपने पिता के स्थान पर
नया राजा हूँ। दाऊद मेरे पिता थे। अब मैं इस्राएल का
राजा हूँ। यहोवा ने यही करने का वचन दिया था। मैंने
इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के नाम पर मन्दिर बनवाया
है। 11मैंने साक्षीपत्र के सन्दूक को मन्दिर में रखा है।
साक्षीपत्र का सन्दूक वहाँ है जहाँ यहोवा के साथ की
गई वाचा रखी जाती है। यहोवा ने यह वाचा इस्राएल के
लोगों के साथ की।”

सुलैमान की प्रार्थना

12सुलैमान यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ।
वह उन इस्राएल के लोगों के सामने खड़ा हुआ जो वहाँ
इकट्ठे हुए थे। तब सुलैमान ने अपने हाथों और अपनी
भुजाओं को फैलाया। 13सुलैमान ने एक काँसे का मंच
पाँच हाथ लम्बा, पाँच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊँचा
बनाया था और इसे बाहरी आँगन के बीच में रखा था।
तब वह मंच पर खड़ा हुआ और इस्राएल के जो लोग
वहाँ इकट्ठे हुए थे उनकी उपस्थिति में घुटने टेके।
सुलैमान ने आकाश की ओर हाथ फैलाया। 14सुलैमान
ने कहा:

“हे इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा, तेरे समान कोई भी
परमेश्वर न तो स्वर्ग में है, न ही धरती पर है। तू प्रेम
करने और दयालु बने रहने की वाचा का पालन करता
है। तू अपने उन सेवकों के साथ वाचा का पालन
करता है जो पूरे हृदय की सच्चाई से रहते हैं और तेरी
आज्ञा का पालन करते हैं। 15तूने अपने सेवक दाऊद
को दिये गए वचन को पूरा किया। दाऊद मेरा पिता था।
तूने अपने मुख से वचन दिया था, और आज तूने
अपने हाथों से इस वचन को पूरा किया है। 16अब, हे
यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर! तू अपने सेवक दाऊद
को दिये गये वचन को बनाये रख। तूने यह वचन दिया
था: तूने कहा था, ‘दाऊद, तुम अपने परिवार से, मेरे
सामने इस्राएल के सिंहासन पर बैठने के लिए, एक
व्यक्ति को पाने में कभी असफल नहीं होगे। यही होगा
यदि तुम्हारे पुत्र उन सभी बातों में सावधान रहेंगे जिन्हें
वे करेंगे। उन्हें मेरे नियमों का पालन वैसे ही करना
चाहिए जैसा तुमने मेरे नियमों का पालन किया है।’
17अब, हे यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर अपने वचन को
पूरा होने दे। तूने यह वचन अपने सेवक दाऊद को
दिया था।

18“हे परमेश्वर, हम जानते हैं कि तू यथार्थ में, लोगों
के साथ धरती पर नहीं रहेगा। स्वर्ग, सर्वोच्च स्वर्ग भी
तुझको अपने भीतर रखने की क्षमता नहीं रखता और
हम जानते हैं कि यह मन्दिर जिसे मैंने बनाया है तुझको
अपने भीतर नहीं रख सकता। 19किन्तु हे यहोवा,
परमेश्वर तू हमारी प्रार्थना और कृपा याचना पर ध्यान
दे। हे यहोवा, मेरे परमेश्वर! तेरे लिये की गई मेरी
पुकार तू सुन। मैं तुझसे जो प्रार्थना कर रहा हूँ, सुन। मैं
तेरा सेवक हूँ। 20मैं प्रार्थना करता हूँ कि तेरी आँखे
मन्दिर को देखने के लिये दिन रात खुली रहें। तूने कहा
था कि तू इस स्थान पर अपना नाम अंकित करेगा।
मन्दिर को देखता हुआ जब मैं तुझसे प्रार्थना कर रहा हूँ
तो तू मेरी प्रार्थना सुन। 21मेरी प्रार्थनाएँ सुन और तेरे
इस्राएल के लोग जो प्रार्थना कर रहे हैं, उन्हें भी सुन।
जब हम तेरे मन्दिर को देखते हुए प्रार्थना कर रहे हैं तो
तू हमारी प्रार्थनाएँ सुन। तू स्वर्ग में जहाँ रहता है वहीं
से सुन और जब तू हमारी प्रार्थनाएँ सुने तो तू हमे क्षमा
कर।

22“कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ कुछ
बुरा करने का दोषी हो सकता है। जब ऐसा होगा तो
दोषी व्यक्ति को, यह सिद्ध करने के लिए कि वह
निरपराध है, तेरा नाम लेना पड़ेगा। जब वह तेरी वेदी
के सामने शपथ लेने मन्दिर में आए तो 23स्वर्ग से सुन।
तू अपने सेवकों का फैसला कर और उसे कार्यान्वित
कर। दोषी को दण्ड दे और उसे उतना कष्ट होने दे
जितना कष्ट उसने दूसरे को दिया हो। यह प्रमाणित कर
कि जिस व्यक्ति ने ठीक कार्य किया है, वह निरपराध
है।

24“तेरे इस्राएलियों को किसी भी शत्रुओं से पराजित
होना पड़ सकता है, क्योंकि तेरे लोगों ने तेरे विरुद्ध पाप
किया है तब यदि इस्राएल के लोग तेरे पास लौटें और
तेरे नाम पर पाप स्वीकारें और इस मन्दिर में तुझसे
प्रार्थना और याचना करें 25तो स्वर्ग से सुन और अपने
लोगों, इस्राएल के पापों को क्षमा कर। उन्हें उस देश में
लौटा जिसे तूने उन्हें और उनके पूर्वजों को दिया था।

26“आसमान कभी ऐसे बन्द हो सकता है कि वर्षा न
हो। वह तब होगा जब इस्राएल के लोग तेरे विरुद्ध पाप

करेंगे और यदि इस्राएल के लोगों को इसका पश्चाताप होगा और मन्दिर को देखते हुए प्रार्थना करेंगे, तेरे नाम पर पाप स्वीकार करेंगे और वे पाप करना छोड़ देंगे क्योंकि तू उन्हें दण्ड देता है। 27तो स्वर्ग से तू उनकी सुन। तू उनकी सुन और उनके पापों को क्षमा कर। इस्राएल के लोग तेरे सेवक हैं। तब उन्हें सही मार्ग का उपदेश दे जिस पर वे चलें। तू अपनी भूमि पर वर्षा भेज। वही देश तूने अपने लोगों को दिया था।

28"देश में कोई अकाल या महामारी, या फसलों को बीमारी, या फफूँदी, या टिड्डी, या टिड्डे हो जाये या यदि इस्राएल के लोगों के नगरों में उनके शत्रु घेरा डाल दें, या यदि इस्राएल में किसी प्रकार की बीमारी हो 29और तब तेरे लोग अर्थात इस्राएल का कोई व्यक्ति प्रार्थना या याचना करे तथा हर एक व्यक्ति अपनी आपत्ति और पीड़ा को जानता रहे एवं यदि वह व्यक्ति इस मन्दिर को देखते हुए अपने हाथ और अपनी भुजायें उठाए 30तो तू उनकी स्वर्ग से सुन। स्वर्ग वही है जहाँ तू है। सुन और क्षमा कर। हर एक व्यक्ति को वह दे जो उसे मिलना चाहिये क्योंकि तू जानता है कि हर एक व्यक्ति के हृदय में क्या है। केवल तू ही जानता है कि व्यक्ति के हृदय में क्या है। 31तब लोग तुझसे डरेंगे और तेरी आज्ञा मानेंगे जब तक वे उस देश में रहेंगे जिसे तूने हमारे पूर्वजों को दिया था।

32"कोई ऐसा अजनबी हो सकता है जो इस्राएल के लोगों में से न हो, किन्तु वह उस देश से आया हो जो बहुत दूर हो और वह अजनबी तेरी प्रतिष्ठा, तेरी असीम शक्ति और तेरी दण्ड देने की क्षमता के कारण आया हो। जब वह व्यक्ति आए और इस मन्दिर को देखता हुआ प्रार्थना करे 33तब स्वर्ग से जहाँ तू रहता है, सुन और तू उसकी प्रार्थना का उत्तर दे। तब सारे संसार के राष्ट्र तेरा नाम जानेंगे और तेरा आदर वैसे करेंगे जैसे तेरे लोग अर्थात इस्राएली करते हैं और संसार के सभी लोग जानेंगे कि जिस मन्दिर को मैंने बनवाया है वह तेरे नाम से जाना जाता है।

34"जब तू अपने लोगों को किसी स्थान पर उनके शत्रुओं के साथ लड़ने के लिये भेजे और वे इस नगर की ओर देखकर प्रार्थना करें, जिसे तूने चुना है तथा इस मन्दिर की ओर देखें जिसे मैंने तेरे नाम पर बनाया है। 35तो उनकी प्रार्थना स्वर्ग से सुन। उनकी सहायता कर।

36"लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे–कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो पाप न करता हो और तू उन पर क्रोधित होगा। तू किसी शत्रु को उन्हें हराने देगा और उनसे पकड़े जाने देगा तथा बहुत दूर या निकट के देश में जाने पर मजबूर किये जाने देगा। 37किन्तु जब वे अपना विचार बदलेंगे और वे याचना करेंगे जबकि वे बन्दी बनाये जाने वाले देश में ही हैं। वे कहेंगे, 'हम लोगों ने पाप किया है, हम लोगों ने बुरा किया है तथा हम लोगों ने दुष्टता की है।' 38तब वे उस देश में जहाँ वे बन्दी हैं, अपने पूरे हृदय व आत्मा से तेरे पास लौटेंगे और इस देश की ओर जो तूने उनके पूर्वजों को दिया है, इस नगर की ओर जिसको तूने चुना है, और इस मन्दिर की ओर जो मैंने तेरे नाम की महिमा के लिए निर्मित किया है, उसकी ओर मुख करके प्रार्थना करेंगे। 39जब ऐसा हो तो तू स्वर्ग से उनकी सुन। स्वर्ग तेरा आवास है। उनकी प्रार्थना और याचना को स्वीकार कर और उनकी सहायता कर और अपने उन लोगों को क्षमा कर दे जिन्होंने तेरे विरुद्ध पाप किया है। 40अब, मेरे परमेश्वर, मैं तुझसे माँगता हूँ, तू अपने आँख और कान खोल ले। तू हम लोगों की, जो प्रार्थना इस स्थान पर कर रहे हैं उसे सुन और उस पर ध्यान दे।

41"अब, हे यहोवा परमेश्वर उठ और अपने विशेष स्थान पर आ, जहाँ साक्षीपत्र का सन्दूक, तेरी शक्ति प्रदर्शित करता है।अपने याजकों को मुक्ति धारण करने दे। हे यहोवा, परमेश्वर! अपने पवित्र लोगों को अपनी अच्छाई में प्रसन्न होने दे।

42हे यहोवा, परमेश्वर अपने अभिषिक्त राजा को स्वीकार कर। अपने सेवक दाऊद की स्वामी भक्ति को याद रख!"

मन्दिर यहोवा को अर्पित

7 जब सुलैमान ने प्रार्थना पूरी की तो आकाश से आग उतरी और उसने होमबलि और बलियों को जलाया। यहोवा के तेज ने मन्दिर को भर दिया। 2याजक यहोवा के मन्दिर में नहीं जा सकते थे क्योंकि यहोवा के तेज ने उसे भर दिया था। 3इस्राएल के सभी लोगों ने आकाश से आग को उतरते देखा। इस्राएल के लोगों ने मन्दिर पर भी यहोवा के तेज को देखा। उन्होंने अपने चेहरे को चबूतरे की फर्श तक झुकाया। उन्होंने यहोवा की उपासना की तथा उसे धन्यवाद दिया। उन्होंने गाया, "यहोवा भला है, और उसकी दया सदा रहती है।"*

4तब राजा सुलैमान और इस्राएल के सभी लोगों ने बलि यहोवा के सामने चढ़ाई। 5राजा सुलैमान ने बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ें भेंट कीं। राजा और सभी लोगों ने परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र बनाया। इसका उपयोग केवल परमेश्वर की उपासना के लिये होता था। 6याजक अपना कार्य करने के लिये तैयार खड़े थे। लेवीवंशी भी यहोवा के संगीत के उपकरणों के साथ खड़े थे। ये उपकरण राजा दाऊद द्वारा यहोवा को धन्यवाद देने के लिये बनाए गए थे। याजक और लेवीवंशी कह रहे थे, "यहोवा का प्रेम सदैव रहता है!"

यहोवा भला ... रहती है देखें भजन. 136

जब लेवीवंशियों के दूसरी ओर याजक खड़े हुए तो
याजकों ने अपनी तुरहियाँ बजाई और इस्राएल के सभी
लोग खड़े थे।

7सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के सामने वाले आँगन
के मध्य भाग को भी पवित्र किया। यह वही स्थान है
जहाँ सुलैमान ने होमबलि और मेलबलि की चर्बी चढ़ाई।
सुलैमान ने आँगन का मध्य भाग काम में लिया क्योंकि
काँसे की वेदी पर जिसे सुलैमान ने बनाई थी, सारी
होमबलि, अन्नबलि और चर्बी नहीं आ सकती थी वैसी
भेंटें बहुत अधिक थीं।

8सुलैमान और इस्राएल के सभी लोगों ने सात दिनों
तक दावतों का उत्सव मनाया। सुलैमान के साथ लोगों
का एक बहुत बड़ा समूह था। वे लोग उत्तर दिशा के
हमथ नगर के प्रवेश द्वार तथा दक्षिण के मिस्र के झरने
जैसे सुदूर क्षेत्रों से आये थे। 9आठवें दिन उन्होंने एक
धर्मसभा की क्योंकि वे सात दिन उत्सव मना चुके थे।
उन्होंने वेदी को पवित्र किया और इसका उपयोग केवल
यहोवा की उपासना के लिये होना था और उन्होंने सात
दिन दावत का उत्सव मनाया। 10सातवें महीने के तेईसवें
दिन सुलैमान ने लोगों को वापस उनके घर भेज दिया।
लोग बड़े प्रसन्न थे और उनका हृदय आनन्द से भरा
था क्योंकि यहोवा दाऊद, सुलैमान और अपने इस्राएल
के लोगों के प्रति बहुत भला था।

यहोवा सुलैमान के पास आता है

11सुलैमान ने यहोवा का मन्दिर और राजमहल को
पूरा कर लिया। सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर और
अपने आवास में जो कुछ करने की योजना बनाई थी
उसमें उसे सफलता मिली। 12तब यहोवा सुलैमान के
पास रात को आया। यहोवा ने उससे कहा, "सुलैमान,
मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है और मैंने इस स्थान को
अपने लिए बलि के गृह के रूप में चुना है। 13जब मैं
आकाश को बन्द करता हूँ तो वर्षा नहीं होती या मैं
टिड्डियों को आदेश देता हूँ कि वे देश को नष्ट करें या
अपने लोगों में बीमारी भेजता हूँ, 14और मेरे नाम से
पुकारे जाने वाले लोग यदि विनम्र होते तथा प्रार्थना
करते हैं, और मुझे ढूढ़तें हैं और अपने बुरे रास्तों से दूर
हट जाते हैं तो मैं स्वर्ग से उनकी सुनूँगा और मैं उनके
पाप को क्षमा करुँगा और उनके देश को अच्छा कर
दूँगा। 15अब, मेरी आँखे खुली हैं और मेरे कान इस
स्थान पर की गई प्रार्थनाओं पर ध्यान देंगे। 16मैंने इस
मन्दिर को चुना है और मैंने इसे पवित्र किया है जिससे
मेरा नाम यहाँ सदैव रहे। हाँ, मेरी आँखे और मेरा हृदय
इस मन्दिर में सदा रहेगा।

17"अब सुलैमान, यदि तुम मेरे सामने वैसे ही रहोगे
जैसे तुम्हारा पिता दाऊद रहा, यदि तुम उन सभी का
पालन करोगे जिनके लिए मैंने आदेश दिया है और यदि
तुम मेरे विधियों और नियमों का पालन करोगे। 18तब
मैं तुम्हें शक्तिशाली राजा बनाऊँगा और तुम्हारा राज्य
विस्तृत होगा। यही वाचा है जो मैंने तुम्हारे पिता दाऊद
से की है। मैंने उससे कहा था, 'दाऊद, तुम अपने
परिवार में एक ऐसा व्यक्ति सदा पाओगे जो इस्राएल में
राजा होगा।'

19"किन्तु यदि तुम मेरे नियमों और आदेशों को नहीं
मानोगे जिन्हें मैंने दिया है और तुम अन्य देवताओं की
पूजा और सेवा करोगे, 20तब मैं इस्राएल के लोगों को
अपने उस देश से बाहर करुँगा जिसे मैंने उन्हें दिया है।
मैं इस मन्दिर को अपनी आँखों से दूर कर दूँगा। जिसे
मैंने अपने नाम के लिये पवित्र बनाया है। मैं इस मन्दिर
को ऐसा कुछ बनाऊँगा कि सभी राष्ट्र इसकी बुराई
करेंगे। 21हर एक व्यक्ति जो इस प्रतिष्ठित मन्दिर के
पास से गुजरेगा, आश्चर्य करेगा। वे कहेंगे, 'यहोवा ने
ऐसा भयंकर काम इस देश और इस मन्दिर के साथ
क्यों किया?' 22तब लोग उत्तर देंगे, 'क्योंकि इस्राएल के
लोगों ने यहोवा, परमेश्वर जिसकी आज्ञा का पालन
उनके पूर्वज करते थे, उसकी आज्ञा पालन करने से
इन्कार कर दिया। वह ही परमेश्वर है जो उन्हें मिस्र
देश के बाहर ले आया। किन्तु इस्राएल के लोगों ने अन्य
देवताओं को अपनाया। उन्होंने मूर्ति रूप में देवताओं
की पूजा और सेवा की। यही कारण है कि यहोवा ने
इस्राएल के लोगों पर इतना सब भयंकर घटित कराया
है।'"

सुलैमान के बसाए नगर

8 यहोवा के मन्दिर को बनाने और अपना महल
बनाने में सुलैमान को बीस वर्ष लगे। 2तब सुलैमान
ने पुन: उन नगरों को बनाया जो हूराम ने उसको दिये
और सुलैमान ने इस्राएल के कुछ लोगों को उन नगरों
में रहने की आज्ञा दे दी। 3इसके बाद सुलैमान सोबा के
हमात को गया और उस पर अधिकार कर लिया।
4सुलैमान ने मरुभूमि में तदमोर नगर बनाया। उसने
चीज़ों के संग्रह के लिए हमात में सभी नगर बनाए।
5सुलैमान ने उच्च बेथोरोन और निम्न बेथोरोन के
नगरों को पुन: बनाया। उसने उन नगरों को शक्तिशाली
गढ़ बनाया। वे नगर मजबूत दीवारों, फाटकों और
फाटकों में छड़ों वाले थे। 6सुलैमान ने बालात नगर को
फिर बनाया और अन्य नगरों को भी जहाँ उसने चीजों
का संग्रह किया। उसने सभी नगरों को बनाया जहाँ रथ
रखे गए थे तथा जहाँ सभी नगरों में घुड़सवार रहते थे।
सुलैमान ने यरूशलेम, लबानोन और उन सभी देशों में
जहाँ वह राजा था, जो चाहा बनाया।

7-8जहाँ इस्राएल के लोग रह रहे थे वहाँ बहुत से
अजनबी बचे रह गए थे। वे हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी
और यबूसी लोग थे। सुलैमान ने उन अजनबियों को

दास–मजदूर होने के लिये विवश किया। वे लोग इस्राएल
के लोगों में से नहीं थे। वे लोग उनके वंशज थे जो देश
में बचे रह गये थे और तब तक इस्राएल के लोगों द्वारा
नष्ट नहीं किये गए थे। यह अब तक चल रहा है।
9सुलैमान ने इस्राएल के किसी भी व्यक्ति को दास
मजदूर बनने को विवश नहीं किया। इस्राएल के लोग
सुलैमान के योद्धा थे। वे सुलैमान की सेना के सेनापति
और अधिकारी थे। वे सुलैमान के रथों के सेनापति
और सारथियों के सेनापति थे **10**और इस्राएल के कुछ
लोग सुलैमान के महत्वपूर्ण अधिकारियों के प्रमुख थे।
ऐसे लोगों का निरीक्षण करने वाले ढाई सौ प्रमुख थे।

11सुलैमान दाऊद के नगर से फिरौन की पुत्री को
उस महल में लाया जिसे उसने उसके लिये बनाया था।
सुलैमान ने कहा, “मेरी पत्नी राजा दाऊद के महल में
नहीं रह सकती क्योंकि जिन स्थानों पर साक्षीपत्र का
सन्दूक रहा हो, वे स्थान पवित्र हैं।”

12तब सुलैमान ने यहोवा को होमबलि यहोवा की
वेदी पर चढ़ायी। सुलैमान ने उस वेदी को मन्दिर के द्वार
मण्डप के सामने बनाया। **13**सुलैमान ने हर एक दिन
मूसा के आदेश के अनुसार बलि चढ़ाई। यह बलि सब्त
के दिन नवचन्द्र उत्सव को और तीन वार्षिक पर्वों को
दी जानी थीं। ये तीन वार्षिक पर्व अख़मीरी रोटी का पर्व
सप्ताहों का पर्व और आश्रय का पर्व थे। **14**सुलैमान ने
अपने पिता दाऊद के निर्देशों का पालन किया। सुलैमान
ने याजकों के वर्ग उनकी सेवा के लिये चुने। सुलैमान
ने लेवीवंशियों को भी उनके कार्य के लिये चुना।
लेवीवंशियों को स्तुति में पहल करनी होती थी और
उन्हें मन्दिर की सेवाओं में जो कुछ नित्य किया जाना
होता था उनमें याजकों की सहायता करना था और
सुलैमान ने द्वारपालों को चुना जिनके समूहों को हर
द्वार पर सेवा करनी थी। इस पद्धति का निर्देश परमेश्वर
के व्यक्ति दाऊद ने दिया था। **15**इस्राएल के लोगों ने
सुलैमान द्वारा याजकों और लेवीवंशियों को दिये गए
निर्देशों को न बदला, न ही उनका उल्लघंन किया।
उन्होंने किसी भी निर्देश में वैसे भी परिवर्तन नहीं किये
जैसे वे बहुमूल्य चीजों को रखने में करते थे।

16सुलैमान के सभी कार्य पूरे हो गए। यहोवा के
मन्दिर के आरम्भ होने से उसके पूरे होने के दिन तक
योजना ठीक बनी थी। इस प्रकार यहोवा का मन्दिर
पूरा हुआ।

17तब सुलैमान एस्योनगेबेर और एलोत नगरों को
गया। वे नगर एदोम प्रदेश में लाल सागर के निकट थे।
18हूराम ने सुलैमान को जहाज भेजे। हूराम के अपने
आदमी जहाजों को चला रहे थे। हुराम के व्यक्ति समुद्र
में जहाज चलाने में कुशल थे। हूराम के व्यक्ति सुलैमान
के सेवकों के साथ ओपीर गए और सत्रह टन सोना
लेकर राजा सुलैमान के पास लौटे।

शीबा की रानी सुलैमान के यहाँ आती है

9 शीबा की रानी ने सुलैमान का यश सुना। वह
यरूशलेम में कठिन प्रश्नों से सुलैमान की परीक्षा
लेने आई। शीबा की रानी अपने साथ एक बड़ा समूह
लेकर आई थी। उसके पास ऊँट थे जिन पर मसाले,
बहुत अधिक सोना और बहुमूल्य रत्न लदे थे। वह
सुलैमान के पास आई और उसने सुलैमान से बातें कीं।
उसे सुलैमान से अनेक प्रश्न पूछने थे। **2**सुलैमान ने
उसके सभी प्रश्नों के उत्तर दिये। सुलैमान के लिए
व्याख्या करने या उत्तर देने के लिये कुछ भी अति
कठिन नहीं था। **3**शीबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धि
और उसके बनाए घर को देखा। **4**उसने सुलैमान के
मेज के भोजन को देखा और उसके बहुत से महत्वपूर्ण
अधिकारियों को देखा। उसने देखा कि उसके सेवक
कैसे कार्य कर रहे हैं और उन्होंने कैसे वस्त्र पहन रखे
हैं उसने देखा कि उसके दाखमधु पिलाने वाले सेवक
कैसे कार्य कर रहें हैं और उन्होंने कैसे वस्त्र पहने हैं
उसने होमबलियों को देखा जिन्हें सुलैमान ने यहोवा
के मन्दिर में चढ़ाया था। जब शीबा की रानी ने इन
सभी चीजों को देखा तो वह चकित रह गई!

5तब उसने राजा सुलैमान से कहा, “मैंने अपने देश
में तुम्हारे महान कार्यो और तुम्हारी बुद्धिमत्ता के बारे
में जो कहानी सुनी है, वह सच है। **6**मुझे इन
कहानियों पर तब तक विश्वास नहीं था जब तक मैं
आई नहीं और अपनी आँखों से देखा नहीं। ओह!
तुम्हारी बुद्धिमत्ता का आधा भी मुझसे नहीं कहा
गया है। तुम उन सुनी कहानियों में कहे गए रूप से
बड़े हो! **7**तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे अधिकारी
बहुत भाग्यशाली हैं! वे तुम्हारे ज्ञान की बातें तुम्हारी
सेवा करते हुए सुन सकते हैं! **8**तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा की प्रशंसा हो! वह तुम पर प्रसन्न है और उसने
तुम्हें अपने सिंहासन पर, परमेश्वर यहोवा के लिये,
राजा बनने के लिये बैठाया है। तुम्हारा परमेश्वर इस्राएल
से प्रेम करता है और इस्राएल की सहायता सदैव करता
रहेगा। यही कारण है कि यहोवा ने उचित और
ठीक–ठीक सब करने के लिये तुम्हें इस्राएल का राजा
बनाया है।”

9तब शीबा की रानी ने राजा सुलैमान को साढ़े चार
टन सोना, बहुत से मसाले और बहुमूल्य रत्न दिये।
किसी ने इतने अच्छे मसाले राजा सुलैमान को नहीं दिये
जितने अच्छे रानी शीबा ने दिये।

10हूराम के नौकर और सुलैमान के नौकर ओपीर
से सोना ले आए। वे चन्दन की लकड़ी और बहुमूल्य
रत्न भी लाए। **11**राजा सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर एवं
महल की सीढ़ियों के लिये चन्दन की लकड़ी का
उपयोग किया। सुलैमान ने चन्दन की लकड़ी का उपयोग
गायकों के लिये वीणा और तम्बूरा बनाने के लिये भी

किया। यहूदा देश में चन्दन की लकड़ी से बनी उन जैसी सुन्दर चीजें किसी ने कभी देखी नहीं थीं।

12जो कुछ भी शीबा देश की रानी ने राजा सुलैमान से माँगा, वह उसने दिया। जो उसने दिया, वह उससे अधिक था जो वह राजा सुलैमान के लिए लाई थी। तत्तपश्चात् वह अपने सेवक सेविकाओं के साथ विदा हुई। वह अपने देश लौट गई।

सुलैमान की प्रचुर सम्पत्ति

13एक वर्ष में सुलैमान ने जितना सोना पाया, उसका वजन पच्चीस टन था। 14व्यापारी और सौदागर सुलैमान के पास और अधिक सोना लाए। अरब के सभी राजा और प्रदेशों के शासक भी सुलैमान के लिये सोना चाँदी लाए। 15राजा सुलैमान ने सोने के पत्तर की दो सौ ढालें बनाई। लगभग 3.3 किलोग्राम पिटा सोना हर एक ढाल के बनाने में उपयोग में आया था। 16सुलैमान ने तीन सौ छोटी ढालें भी सोने के पत्तर की बनाई। लगभग 1.65 किलोग्राम सोना हर एक ढाल के बनाने में उपयोग में आया था। राजा सुलैमान ने सोने की ढालों को लबानोन के वन–महल में रखा।

17राजा सुलैमान ने एक विशाल सिंहासन बनाने के लिये हाथी–दाँत का उपयोग किया। उसने सिंहासन को शुद्ध सोने से मढ़ा। 18सिंहासन पर चढ़ने की छ: सीढ़ियाँ थीं और इसका एक पद–पीठ था। वह सोने का बना था। सिंहासन में दोनों ओर भुजाओं को आराम देने के लिए बाजू लगे थे। हर एक बाजू से लगी एक–एक सिंह की मूर्ति खड़ी थी। 19वहाँ छ: सीढ़ियों से लगे बगल में बारह सिंहों की मूर्तियाँ खड़ी थीं। हर सीढ़ी की हर ओर एक सिंह था। इस प्रकार का सिंहासन किसी दूसरे राज्य में नहीं बना था। 20राजा सुलैमान के सभी पीने के प्याले सोने के बने थे। लबानोन वन–महल की सभी प्रतिदिन की चीज़ें शुद्ध सोने की बनी थीं। सुलैमान के समय में चाँदी मूल्यवान नहीं समझी जाती थी। 21राजा सुलैमान के पास जहाज थे जो तर्शीश को जाते थे। हूराम के आदमी सुलैमान के जहाजों को चलाते थे। हर तीसरे वर्ष जहाज तर्शीश से सोना, चाँदी, हाथी–दाँत, बन्दर और मोर लेकर सुलैमान के पास लौटते थे।

22राजा सुलैमान धन और बुद्धि दोनों में संसार के किसी भी राजा से बड़ा हो गया। 23संसार के सारे राजा उसको देखने और उसके बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णयों को सुनने के लिये आए। परमेश्वर ने सुलैमान को वह बुद्धि दी। 24हर वर्ष वे राजा सुलैमान को भेंट लाते थे। वे चाँदी सोने की चीजें, वस्त्र, कवच, मसाले, घोड़े और खच्चर लाते थे।

25सुलैमान के पास चार हजार घोड़ों और रथों को रखने के लिये अस्तबल थे। उसके पास बारह हजार सारथी थे। सुलैमान उन्हें रथों के लिये विशेष नगरों में रखता था और यरूशलेम में अपने पास रखता था। 26सुलैमान फरात नदी से लगातार पलिश्ती लोगों के देश तक और मिस्र की सीमा तक के राजाओं का सम्राट था। 27राजा सुलैमान ने चाँदी को पत्थर जैसा सस्ता बना दिया और देवदार लकड़ी को पहाड़ी प्रदेश में गूलर के पेड़ों जैसा सामान्य। 28लोग सुलैमान के लिये मिस्र और अन्य सभी देशों से घोड़े लाते थे।

सुलैमान की मृत्यु

29आरम्भ से लेकर अन्त तक सुलैमान ने और जो कुछ किया वह नातान नबी के लेखों, शीलो के अहिय्याह की भविष्यवाणियों और इद्दो के दर्शनों में है। इद्दो ने यारोबाम के बारे में लिखा। यारोबाम नबात का पुत्र था। 30सुलैमान यरुशलेम में पूरे इस्राएल का राजा चालीस वर्ष तक रहा। 31तब सुलैमान अपने पूर्वजों के साथ विश्राम करने गया। लोगों ने उसे उसके पिता दाऊद के नगर में दफनाया। सुलैमान का पुत्र रहूबियाम सुलैमान की जगह नया राजा हुआ।

रहूबियाम मूर्खतापूर्ण काम करता है

10 रहूबियाम शकेम नगर को गया क्योंकि इस्राएल के सभी लोग उसे राजा बनाने के लिये वहीं गए। 2यारोबाम मिस्र में था क्योंकि वह राजा सुलैमान के यहाँ से भाग गया था। यारोबाम नबात का पुत्र था। यारोबाम ने सुना कि रहूबियाम नया राजा होने जा रहा है। इसलिये यारोबाम मिस्र से लौट आया। 3इस्राएल के लोगों ने यारोबाम को अपने साथ रहने के लिये बुलाया। तब यारोबाम तथा इस्राएल के सभी लोग रहूबियाम के यहाँ गए। उन्होंने उससे कहा, "रहूबियाम, 4तुम्हारे पिता ने हम लोगों के जीवन को कष्टकर बनाया। यह भारी वजन ले चलने के समान था। उस वजन को हल्का करो तो हम तुम्हारी सेवा करेंगे।"

5रहूबियाम ने उनसे कहा, "तीन दिन बाद लौटकर मेरे पास आओ।" इसलिए लोग चले गए।

6तब राजा रहूबियाम ने उन बुजुर्ग लोगों से बातें कीं जिन्होंने पहले उसके पिता की सेवा की थी। रहूबियाम ने उनसे कहा, "आप इन लोगों से क्या कहने के लिये सलाह देते हैं?"

7बुजुर्गों ने रहूबियाम से कहा, "यदि तुम उन लोगों के प्रति दयालु हो और उन्हें प्रसन्न करते हो तथा उनसे अच्छी बातें कहते हो तो वे तुम्हारी सेवा सदैव करेंगे।"

8किन्तु रहूबियाम ने बुजुर्गों की दी सलाह को स्वीकार नहीं किया। रहूबियाम ने उन युवकों से बात की जो उसके साथ युवा हुए थे और उसकी सेवा कर रहे थे। 9रहूबियाम ने उनसे कहा, "तुम लोग क्या सलाह देते हो जिसे मैं उन लोगों से कहूँ? उन्होंने मुझसे अपने काम को हल्का करने को कहा है और वे चाहते हैं कि मैं

अपने पिता द्वारा उन पर डाले गए वजन को कुछ कम
करुँ।"
10तब उन युवकों ने जो रहूबियाम के साथ युवा हुए
थे, उससे कहा, "जिन लोगों ने तुमसे बातें की उनसे तुम
यह कहो। लोगों ने तुमसे कहा, 'तुम्हारे पिता ने हमारे
जीवन को कष्टकर बनाया था। यह भारी वजन ले
चलने के समान था। किन्तु हम चाहते हैं कि तुम हम
लोगों के वजन को कुछ हल्का करो।' किन्तु रहूबियाम,
तुम्हें यही उन लोगों से कहना चाहिए। उनसे कहो, 'मेरी
छोटी उँगली भी मेरे पिता की कमर से मोटी होगी!
11मेरे पिता ने तुम पर भारी बोझ लादा। किन्तु मैं उस
बोझ को बढ़ाऊँगा। मेरे पिता ने तुमको कोड़े लगाने का
दण्ड दिया था। मैं ऐसे कोड़े लगाने का दण्ड दूँगा जिसकी
छोर पर तेज धातु के टुकड़े हैं।'"
12राजा रहूबियाम ने कहा था: "तीसरे दिन लौटकर
आना।" अत: तीसरे दिन यारोबाम और सब इस्राएली
जनता राजा रहूबियाम के पास आए। 13तब राजा रहूबियाम
ने उनसे नीचता से बात की। राजा रहूबियाम ने बुजुर्ग
लोगों की सलाह न मानी। 14राजा रहूबियाम ने लोगों से
वैसे ही बात की जैसे युवकों ने सलाह दी थी। उसने
कहा, "मेरे पिता ने तुम्हारे बोझ को भारी किया था,
किन्तु मैं उसे और अधिक भारी करुँगा। मेरे पिता ने
तुम पर कोड़े लगाने का दण्ड दिया था, किन्तु मैं ऐसे
कोड़े लगाने का दण्ड दूँगा जिनकी छोर में तेज धातु के
टुकड़े होंगे।"
15इस प्रकार राजा रहूबियाम ने लोगों की एक न
सुनी। उसने लोगों की एक न सुनी क्योंकि यह परिवर्तन
परमेश्वर के यहाँ से आया। परमेश्वर ने ऐसा होने
दिया। यह इसलिए हुआ कि यहोवा अपने उस वचन को
सत्य प्रमाणित कर सके जो उन्होंने अहिय्याह के द्वारा
यारोबाम को कहा था। अहिय्याह शीलो लोगों में से था
और यारोबाम नबात का पुत्र था।
16इस्राएल के लोगों ने देखा कि राजा रहूबियाम उनकी
एक नहीं सुनता। उन्होंने राजा से कहा, "क्या हम
दाऊद के परिवार के अंग हैं? नहीं! क्या हमें यिशै की
कोई भूमि मिलनी है? नहीं! इसलिये ऐ इस्राएलियों, हम
लोग अपने शिविर में चलें। दाऊद की सन्तान को
उसके अपने लोगों पर शासन करने दें!" तब इस्राएल
के सभी लोग अपने शिविरों में लौट गए। 17किन्तु
इस्राएल के कुछ ऐसे लोग थे जो यहूदा नगर में रहते थे
और रहूबियाम उनका राजा था।
18हदोराम काम करने के लिये विवश किये जाने
वाले लोगों का अधीक्षक था। रहूबियाम ने उसे इस्राएल
के लोगों के पास भेजा। किन्तु इस्राएल के लोगों ने
हदोराम पर पत्थर फेंके और उसे मार डाला। तब
रहूबियाम भागा और अपने रथ में कूद पड़ा तथा बच
निकला। वह भागकर यरूशलेम गया। 19उस समय से
लेकर अब तक इस्राएली दाऊद के परिवार के विरुद्ध
हो गए हैं।

11 जब रहूबियाम यरुशलेम आया, उसने एक लाख
अस्सी हजार सर्वोत्तम योद्धाओं को इकट्ठा
किया। उसने इन योद्धाओं को यहूदा और बिन्यामीन के
परिवार समूहों से इकट्ठा किया। उसने इन्हें इस्राएल के
विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार किया जिससे वह राज्य को
रहूबियाम को वापस लौटा सके। 2किन्तु यहोवा का
सन्देश शमायाह के पास आया। शमायाह परमेश्वर का
व्यक्ति था। यहोवा ने कहा, 3"शमायाह यहूदा के राजा,
सुलैमान के पुत्र रहूबियाम से बातें करो और यहूदा तथा
बिन्यामीन में रहने वाले सभी इस्राएल के लोगों से बातें
करो। 4उनसे कहो, यहोवा यह कहता है: 'तुम्हें अपने
भाईयों के विरुद्ध नहीं लड़ना चाहिये! हर एक व्यक्ति
अपने घर लौट जाये। मैंने ही ऐसा होने दिया है।' इसलिये
राजा रहूबियाम और उसकी सेना ने यहोवा का सन्देश
माना और वे लौट गए। उन्होंने यारोबाम पर आक्रमण
नहीं किया।

रहूबियाम यहूदा को शक्तिशाली बनाता है

5रहूबियाम यरुशलेम में रहने लगा। उसने आक्रमण
के विरुद्ध रक्षा के लिये यहूदा में सुदृढ़ नगर बनाए।
6उसने बेतलेहेम, एताम, तकोआ, 7बेत्सूर, सोको,
अदुल्लाम, 8गत, मारेशा, जीप, 9अदोरैम, लाकीश,
अजेका, 10सोरा, अय्यालोन, और हेब्रोन नगरों की
मरम्मत कराई। यहूदा और बिन्यामीन में ये नगर दृढ़
बनाए गए। 11जब रहूबियाम ने उन नगरों को दृढ़ बना
लिया तो उनमें सेनापति रखे। उसने उन नगरों में
भोजन, तेल और दाखमधु की पूर्ति की व्यवस्था की।
12रहूबियाम ने ढाल और भाले भी हर एक नगर में रखे
और उन्हें बहुत शक्तिशाली बनाया। रहूबियाम ने यहूदा
और बिन्यामीन के लोगों को अपने अधिकार में रखा।
13पूरे इस्राएल के याजक और लेवीवंशी रहूबियाम से
सहमत थे और वे उसके साथ हो गए। 14लेवीवंशियों ने
अपनी घास वाली भूमि और अपने खेत छोड़ दिए और
वे यहूदा तथा यरूशलेम आ गए। लेवीवंशियों ने यह
इसलिए किया कि यारोबाम और उसके पुत्रों ने उन्हें
यहोवा के याजक के रूप में सेवा कराने से इन्कार कर
दिया। 15यारोबाम ने अपने ही याजकों को वहाँ उच्च
स्थानों पर सेवा करने के लिये नियुक्त किया जहाँ
उसने बकरे और बछड़े की उन मूर्तियों को स्थापित
की जिन्हें उसने बनाया था। 16जब लेवीवंशियों ने इस्राएल
को छोड़ दिया तब इस्राएल के परिवार समूह के वे लोग
जो इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के प्रति विश्वास योग्य
थे, यरूशलेम में यहोवा, अपने पूर्वजों के परमेश्वर को
बलि चढ़ाने आए। 17उन लोगों ने यहूदा के राज्य को
शक्तिशाली बनाया और उन्होंने सुलैमान के पुत्र रहूबियाम

को तीन वर्ष तक समर्थन दिया। वे ऐसा करते रहे क्योंकि इस समय के बीच वे वैसे रहते रहे जैसे दाऊद और सुलैमान रहे थे।

रहूबियाम का परिवार

18रहूबियाम ने महलत से विवाह किया। उसका पिता यरीमोत था। उसकी माँ अबीहैल थी। यरीमोत दाऊद का पुत्र था। अबीहैल एलीआब की पुत्री थी और एलीआब यिशै का पुत्र था। 19महलत से रहूबियाम के ये पुत्र उत्पन्न हुए: यूश, शमर्याह और जाहम। 20तब रहूबियाम ने माका से विवाह किया। माका अबशलोम की पोती थी और माका से रहूबियाम के ये बच्चे हुए: अबिय्याह, अत्ते, जीजा और शलोमीत। 21रहूबियाम माका से सभी अन्य पत्नियों और दासियों से अधिक प्रेम करता था। माका अबशलोम की पोती थी। रहूबियाम की अट्ठारह पत्नियाँ और साठ रखैल थीं। रहूबियाम अट्ठाईस पुत्रों और साठ पुत्रियों का पिता था।

22रहूबियाम ने अपने भाईयों में अबिय्याह को प्रमुख चुना। रहूबियाम ने यह इसलिये किया कि उसने अबिय्याह को राजा बनाने की योजना बनाई। 23रहूबियाम ने बुद्धिमानी से काम किया और उसने अपने लड़कों को यहूदा और बिन्यामीन के पूरे देश में हर एक शक्तिशाली नगर में फैला दिया और रहूबियाम ने अपने पुत्रों को बहुत अधिक पुत्रियाँ भेजीं। उसने अपने पुत्रों के लिये पत्नियों की खोज की।

मिस्री राजा शीशक का यरूशलेम पर आक्रमण

12 रहूबियाम एक शक्तिशाली राजा हो गया। उसने अपने राज्य को भी शक्तिशाली बनाया। तब रहूबियाम और यहूदा के सभी लोगों ने यहोवा के नियम का पालन करने से इन्कार कर दिया। 2रहूबियाम के राज्यकाल के पाँचवें वर्ष शीशक ने यरूशलेम पर आक्रमण किया। शीशक मिस्र का राजा था। यह इसलिये हुआ कि रहूबियाम और यहूदा के लोग यहोवा के प्रति निष्ठावान नहीं थे। 3शीशक के पास बारह हजार रथ, साठ हजार अश्वारोही, और एक सेना थी जिसे कोई गिन नहीं सकता था। शीशक की सेना में लूबी, सुक्किय्यी और कूशी सैनिक थे। 4शीशक ने यहूदा के शक्तिशाली नगरों को पराजित कर दिया। तब शीशक अपनी सेना को यरूशलेम लाया।

5तब शमायाह नबी रहूबियाम और यहूदा के प्रमुखों के पास आया। यहूदा के वे प्रमुख यरूशलेम में इकट्ठे हुए थे क्योंकि वे सभी शीशक से भयभीत थे। शमायाह ने रहूबियाम और यहूदा के प्रमुखों से कहा, "यहोवा जो कहता है वह यह है: 'रहूबियाम, तुम और यहूदा के लोगों ने मुझे छोड़ दिया है और मेरे नियम का पालन करने से इन्कार कर दिया है। इसलिए मैं तुमको अपनी सहायता के बिना शीशक का सामना करने को छोड़ूँगा।'"

6तब यहूदा के प्रमुखों और राजा रहूबियाम ने ग्लानि का अनुभव करते हुये अपने को विनम्र किया और कहा कि, "यहोवा न्यायी है।"

7यहोवा ने देखा कि राजा और यहूदा के प्रमुखों ने अपने आप को विनम्र बनाया है। तब यहोवा का सन्देश शमायाह के पास आया। यहोवा ने शमायाह से कहा, "राजा और लोगों ने अपने को विनम्र किया है, इसलिये मैं उन्हें नष्ट नहीं करुँगा अपितु मैं उन्हें शीघ्र ही बचाऊँगा। मैं शीशक का उपयोग यरूशलेम पर अपना क्रोध उतारने के लिये नहीं करुँगा। 8किन्तु यरुशलेम के लोग शीशक के सेवक हो जाएंगे। यह इसलिये होगा कि वे सीख सकें कि मेरी सेवा करना दूसरे राष्ट्रों के राजाओं की सेवा करने से भिन्न है।"

9शीशक ने यरुशलेम पर आक्रमण किया और यहोवा के मन्दिर में जो खजाना था, ले गया। शीशक मिस्र का राजा था और उसने उस खजाने को भी ले लिया जो राजा के महल में था। शीशक ने हर एक चीज ली और उनके खजानों को ले गया। उसने सोने की ढ़ालों को भी लिया जिन्हें सुलैमान ने बनाया था। 10राजा रहूबियाम ने सोने की ढालों के स्थान पर काँसे की ढालें बनाई। रहूबियाम ने उन सेनापतियों को जो राजमहल के द्वारों की रक्षा के उत्तरदायी थे, काँसे की ढालें दीं। 11जब राजा यहोवा के मन्दिर में जाता था तो रक्षक काँसे की ढालें बाहर निकालते थे। उसके बाद वे काँसे की ढालों को रक्षक–गृह में वापस रखते थे।

12जब रहूबियाम ने अपने को विनम्र कर लिया तो यहोवा ने अपने क्रोध को उससे दूर कर लिया। इसलिये यहोवा ने रहूबियाम को पूरी तरह नष्ट नहीं किया। यहूदा में कुछ अच्छाई बची थी।

13राजा रहूबियाम ने यरूशलेम में अपने को शक्तिशाली राजा बना लिया। वह उस समय इकतालीस वर्ष का था, जब राजा बना। रहूबियाम यरूशलेम में सत्रह वर्ष तक राजा रहा। यरूशलेम वह नगर है जिसे यहोवा ने इस्राएल के सारे परिवार समूह में से चुना। यहोवा ने यरुशलेम में अपने को प्रतिष्ठित करना चुना। रहूबियाम की माँ नामा थी। नामा अम्मोन देश की थी। 14रहूबियाम ने बुरी चीजें इसलिये कीं क्योंकि उसने अपने हृदय से यहोवा की आज्ञा पालन करने का निश्चय नहीं किया।

15जब रहूबियाम राजा हुआ, अपने शासन के आरम्भ से अन्त तक, उसने जो कुछ किया वह शमायाह और इद्दो के लेखों में लिखा गया है। शमायाह एक नबी था और इद्दो दृष्टा। वे लोग परिवार इतिहास लिखते थे और रहूबियाम तथा यारोबाम जब तक शासन करते रहे उनके बीच सदा युद्ध चलता रहा। 16रहूबियाम ने अपने पूर्वजों के साथ विश्राम किया। रहूबियाम को दाऊद के

नगर में दफनाया गया। रहूबियाम का पुत्र अबिय्याह नया राजा हुआ।

यहूदा का राजा अबिय्याह

13 जब राजा यारोबाम इस्राएल के राजा के रूप में अट्ठारहवें वर्ष में था अबिय्याह यहूदा का नया राजा बना। 2अबिय्याह यरूशलेम में तीन वर्ष तक राजा रहा। अबिय्याह की माँ मीकायाह थी। मीकायाह, ऊरीएल की पुत्री थी। ऊरीएल गिबा नगर का था और वहाँ अबिय्याह और यारोबाम के बीच युद्ध चल रहा था। 3अबिय्याह की सेना में चार लाख वीर सैनिक थे। यारोबाम ने अबिय्याह के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयारी की। उसके पास आठ लाख वीर सैनिक थे।

4तब अबिय्याह एप्रैम के पर्वतीय प्रदेश में समारैम पर्वत पर खड़ा हुआ। अबिय्याह ने कहा, “यारोबाम और सारे इस्राएली मेरी बात सुनो! 5तुम लोगों को जानना चाहिए कि यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर ने दाऊद और उसकी सन्तानों को इस्राएल का राजा होने का अधिकार सदैव के लिये दिया है। यहोवा ने दाऊद को यह अधिकार नमकवाली वाचा के साथ दिया। 6किन्तु यारोबाम अपने स्वामी के विरुद्ध हो गया! यारोबाम जो नबात का पुत्र था, दाऊद के पुत्र सुलैमान के अधिकारियों में से एक था। 7तब निकम्मे, बुरे व्यक्ति यारोबाम के मित्र हो गए तथा यारोबाम और वे बुरे व्यक्ति सुलैमान के पुत्र रहूबियाम के विरुद्ध हो गये। रहूबियाम युवक था और उसे अनुभव नहीं था। इसलिये रहूबियाम यारोबाम और उसके बुरे मित्रों को रोक न सका।

8“तुम लोगों ने परमेश्वर के राज्य, जो दाऊद के पुत्रों द्वारा शासित है, हराने की योजना बनाई है। तुम लोगों की संख्या बहुत है और यारोबाम का तुम्हारे लिये बनाया गया सोने का बछड़ा तुम्हारा ईश्वर है! 9तुम लोगों ने हारून के वंशज यहोवा के याजकों और लेवीवंशियों को निकाल बाहर किया है। तुमने पृथ्वी के अन्य देशों के समान अपने याजकों को चुना है। तब तो कोई भी व्यक्ति जो एक युवा बैल और सात मेंढ़े लाये, उन ‘झूठे ईश्वरों’ की सेवा करने वाला याजक बन सकता है।

10“किन्तु जहाँ तक हमारी बात है यहोवा हमारा परमेश्वर है। हम यहूदा के निवासी लोगों ने यहोवा की आज्ञा पालन से इन्कार किया नहीं है! हम लोगों ने उसको छोड़ा नहीं है! जो याजक यहोवा की सेवा करते हैं, वे हारून की सन्तान हैं और लेवीवंशी यहोवा की सेवा करने में याजकों की सहायता करते हैं। 11वे होमबलि चढ़ाते हैं और धूप की सुगन्धि यहोवा को हर सुबह–शाम जलाते हैं। वे मन्दिर में विशेष मेज पर रोटियाँ पंक्तियों में रखते भी हैं और वे सोने के दीपाधार पर रखे हुए दीपकों की देखभाल करते हैं ताकि हर संध्या को वह प्रकाश के साथ चले। हम लोग यहोवा, अपने परमेश्वर की सेवा सावधानी के साथ करते हैं। किन्तु तुम लोगों ने उसको छोड़ दिया है। 12स्वयं परमेश्वर हम लोगों के साथ है। वह हमारा शासक है और उसके याजक हमारे साथ हैं। परमेश्वर के याजक अपनी तुरही तुम्हें जगाने और तुम्हें उसके पास आने को उत्साहित करने के लिये फूँकते हैं! ऐ इस्राएल के लोगों, अपने पूर्वजों के यहोवा, परमेश्वर के विरुद्ध मत लड़ो! क्योंकि तुम सफल नहीं होगे!”

13किन्तु यारोबाम ने सैनिकों की एक टुकड़ी को चुपके–चुपके गुप्त रूप से अबिय्याह की सेना के पीछे भेजा। यारोबाम की सेना अबिय्याह की सेना के सामने थी। यारोबाम की सेना के गुप्त सैनिक अबिय्याह की सेना के पीछे थे। 14जब अबिय्याह की सेना के यहूदा के सैनिकों ने चारों ओर देखा तो उन्होंने यारोबाम की सेना को आगे और पीछे से आक्रमण करते पाया। यहूदा के लोगों ने यहोवा को जोर से पुकारा और याजकों ने तुरहियाँ बजाई। 15तब अबिय्याह की सेना के लोगों ने उद्घोष किया। जब यहूदा के लोगों ने उद्घोष किया तो परमेश्वर ने यारोबाम की सेना को हरा दिया। इस्राएल की सारी यारोबाम की सेना अबिय्याह की यहूदा की सेना द्वारा हरा दी गई। 16इस्राएल के लोग यहूदा के लोगों के सामने भाग खड़े हुए। परमेश्वर ने यहूदा की सेना द्वारा इस्राएल की सेना को हरवा दिया। 17अबिय्याह की सेना ने इस्राएल की सेना को बुरी तरह हराया और इस्राएल के पाँच लाख उत्तम योद्धा मारे गए। 18इस प्रकार उस समय इस्राएल के लोग पराजित और यहूदा के लोग विजयी हुए। यहूदा की सेना विजयी हुई क्योंकि वह अपने पूर्वजों के परमेश्वर, यहोवा पर आश्रित रही।

19अबिय्याह की सेना ने यारोबाम की सेना का पीछा किया। अबिय्याह की सेना ने यारोबाम से बेतेल, यशाना तथा एप्रोन नगरों को ले लिया। उन्होंने उन नगरों और उनके आस पास के छोटे गावों पर अधिकार कर लिया।

20यारोबाम पर्याप्त शक्तिशाली फिर कभी नहीं हुआ जब तक अबिय्याह जीवित रहा। यहोवा ने यारोबाम को मार डाला। 21किन्तु अबिय्याह शक्तिशाली हो गया। उसने चौदह स्त्रियों से विवाह किया और वह बाईस पुत्रों तथा सोलह पुत्रियों का पिता था। 22अन्य जो कुछ अबिय्याह ने किया, वह इद्दो नबी की पुस्तकों में लिखा है।

14 अबिय्याह ने अपने पूर्वजों के साथ विश्राम लिया। लोगों ने उसे दाऊद के नगर में दफनाया। तब अबिय्याह का पुत्र आसा अबिय्याह के स्थान पर नया राजा हुआ। आसा के समय में देश में दस वर्ष शान्ति रही।

यहूदा का राजा आसा

2आसा ने यहोवा परमेश्वर के सामने अच्छे और ठीक काम किये। 3आसा ने उन विचित्र वेदियों को हटा दिया जिनका उपयोग मूर्तियों की पूजा के लिये होता था। आसा ने उच्च स्थानों को हटा दिया और पवित्र पत्थरों को नष्ट कर दिया और आसा ने अशेरा स्तम्भों को तोड़ डाला। 4आसा ने यहूदा के लोगों को पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर का अनुसरण करने का आदेश दिया। वह वही परमेश्वर है जिसका अनुसरण उनके पूर्वजों ने किया था और आसा ने लोगों को यहोवा के नियमों और आदेशों को पालन करने का आदेश दिया। 5आसा ने उच्च स्थानों को और सुगन्धि की वेदियों को यहूदा के सभी नगरों से हटाया। इस प्रकार जब आसा राजा था, राज्य शान्त रहा। 6आसा ने यहूदा में शान्ति के समय शक्तिशाली नगर बनाए। आसा इन दिनों युद्ध से मुक्त रहा क्योंकि यहोवा ने उसे शान्ति दी।

7आसा ने यहूदा के लोगों से कहा, "हम लोग इन नगरों को बनाएं और इनके चारों ओर चारदीवारी बनाऐं। हम गुम्बद, द्वार और द्वारों में छड़ें लगायें। जब तक हम लोग देश में हैं, यह करें। यह देश हमारा है क्योंकि हम लोगों ने अपने यहोवा परमेश्वर का अनुसरण किया है। उसने हम लोगों को सब ओर से शान्ति दी है।" इसलिये उन्होंने यह सब बनाया और वे सफल हुए।

8आसा के पास यहूदा के परिवार समूह से तीन लाख और बिन्यामीन के परिवार समूह से दो लाख अस्सी हजार सेना थी। यहूदा के लोग बड़ी ढालें और भाले ले चलते थे। बिन्यामीन के लोग छोटी ढालें और धनुष से चलने वाले बाण ले चलते थे। वे सभी बलवान और साहसी योद्धा थे।

9तब जेरह आसा की सेना के विरुद्ध आया। जेरह कूश का था। जेरह की सेना में एक लाख व्यक्ति और तीन सौ रथ थे। जेरह की सेना मारेशा नगर तक गई। 10आसा जेरह के विरुद्ध लड़ने के लिये गया। आसा की सेना मारेशा के निकट सापता घाटी में युद्ध के लिये तैयार हुई।

11आसा ने यहोवा परमेश्वर को पुकारा और कहा, "यहोवा, केवल तू ही बलवान लोगों के विरुद्ध कमजोर लोगों की सहायता कर सकता है! हे मेरे यहोवा परमेश्वर हमारी सहायता कर! हम तुझ पर आश्रित हैं। हम तेरे नाम पर इस विशाल सेना से युद्ध करते हैं। हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है! अपने विरुद्ध किसी को जीतने न दे!"

12तब यहोवा ने यहूदा की ओर से आसा की सेना का उपयोग कूश की सेना को पराजित करने के लिये किया और कूश की सेना भाग खड़ी हुई। 13आसा की सेना ने कूश की सेना का पीछा लगातार गरार नगर तक किया। इतने अधिक कूश के लोग मारे गए कि वे युद्ध करने योग्य एक सेना के रूप में फिर इकट्ठे न हो सके। वे यहोवा और उसकी सेना के द्वारा कुचल दिये गये। आसा और उसकी सेना ने शत्रु से अनेक बहुमूल्य चीज़ें ले ली। 14आसा और उसकी सेना ने गरार के निकट के सभी नगरों को हराया। उन नगरों में रहने वाले लोग यहोवा से डरते थे। उन नगरों में असंख्य बहुमूल्य चीज़ें थीं। आसा की सेना उन नगरों से इन बहुमूल्य चीज़ों को साथ ले आई। 15आसा की सेना ने उन डेरों पर भी आक्रमण किया जिनमें गड़रिये रहते थे। वे अनेक भेड़ें और ऊँट ले आए। तब आसा की सेना यरूशलेम लौट गई।

आसा के परिवर्तन

15 परमेश्वर का आत्मा अजर्याह पर उतरा। अजर्याह ओदेद का पुत्र था। 2अजर्याह आसा से मिलने गया। अजर्याह ने कहा, "आसा तथा यहूदा और बिन्यामीन के सभी लोगों मेरी सुनो! यहोवा तुम्हारे साथ तब है जब तुम उसके साथ हो। यदि तुम यहोवा को खोजोगे तो तुम उसे पाओगे। किन्तु यदि तुम उसे छोड़ोगे तो वह तुम्हें छोड़ देगा। 3बहुत समय तक इस्राएल सच्चे परमेश्वर के बिना था और वे शिक्षक याजक और नियम के बिना थे। 4किन्तु जब इस्राएल के लोग कष्ट में पड़े तो वे फिर इस्राएल के यहोवा परमेश्वर की ओर लौटे। उन्होंने यहोवा की खोज की और उसको उन्होंने पाया। 5उन विपत्ति के दिनों में कोई व्यक्ति सुरक्षित यात्रा नहीं कर सकता था। सभी राष्ट्र बहुत अधिक उपद्रव ग्रस्त थे। 6एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को और एक नगर दूसरे नगर को नष्ट करता था। यह इसलिए हो रहा था कि परमेश्वर हर प्रकार की विपत्तियों से उनको परेशान कर रहा था। 7किन्तु आसा, तुम तथा यहूदा और बिन्यामीन के लोगों, शक्तिशाली बनो। कमजोर न पड़ो, ढीले न पड़ो क्योंकि तुम्हें अपने अच्छे काम का पुरस्कार मिलेगा!"

8आसा ने जब इन बातों और ओदेद नबी के सन्देश को सुना तो वह बहुत उत्साहित हुआ। तब उसने सारे यहूदा और बिन्यामीन देश से घृणित मूर्तियों को हटा दिया और उसने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में अपने अधिकार में लाए गए नगरों में मूर्तियों को हटाया और उसने यहोवा की उस वेदी की मरम्मत की जो यहोवा के मन्दिर के द्वार मण्डप के सामने थी।

9तब आसा ने यहूदा और बिन्यामीन के सभी लोगों को इकट्ठा किया। उसने एप्रैम, मनश्शे और शिमोन परिवारों को भी इकट्ठा किया जो इस्राएल देश से यहूदा–देश में रहने के लिये आ गए थे। उनकी बहुत बड़ी संख्या यहूदा में आई क्योंकि उन्होंने देखा कि आसा का यहोवा परमेश्वर, आसा के साथ है।

10आसा के शासन के पन्द्रहवें वर्ष के तीसरे महीने में आसा और वे लोग यरुशलेम में इकट्ठे हुए। उस समय उन्होंने यहोवा को सात सौ बैलों और सात हजार भेड़ों और बकरों की बलि दी। आसा की सेना ने उन जानवरों और अन्य बहुमूल्य चीजों को अपने शत्रुओं से लिया था। 12तब उन्होंने पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर की सेवा पूरे हृदय और पूरी आत्मा से करने की वाचा की। 13कोई व्यक्ति जो यहोवा परमेश्वर की सेवा से इन्कार करता था, मार दिया जाता था। इस बात का कोई महत्व नहीं था कि वह व्यक्ति महत्त्वपूर्ण या साधारण है अथवा पुरुष या स्त्री है। 14तब आसा और लोगों ने यहोवा की शपथ ली। उन्होंने उच्च स्वर में उद्घोष किया। उन्होंने तुरही और मेढ़ों के सींगे बजाए। 15यहूदा से सभी लोग प्रसन्न थे क्योंकि उन्होंने पूरे हृदय से शपथ ली थी। उन्होंने पूरे हृदय से यहोवा का अनुसरण किया तथा यहोवा की खोज की और उसे पाया। इसलिये यहोवा ने उनके पूरे देश में शान्ति दी।

16राजा आसा ने अपनी माँ माका को राजमाता के पद से हटा दिया। आसा ने यह इसलिए किया क्योंकि माका ने एक भंयकर अशेरा–स्तम्भ बनाया था। आसा ने इस स्तम्भ को काट दिया और इसे छोटे–छोटे टुकड़ों में ध्वस्त कर दिया। तब उसने उन छोटे टुकड़ों को किद्रोन घाटी में जला दिया। 17उच्च स्थानों को यहूदा से नहीं हटाया गया, किन्तु आसा का हृदय जीवन भर यहोवा के प्रति श्रद्धालु रहा।

18आसा ने उन पवित्र भेंटों को रखा जिन्हें उसने और उसके पिता ने यहोवा के मन्दिर में दिये थे। वे चीजें चाँदी और सोने की बनीं थीं। 19आसा के शासन के पैंतीस वर्ष तक कोई युद्ध नहीं हुआ।

आसा के अन्तिम वर्ष

16 आसा के राज्यकाल के छत्तीसवें वर्ष* बाशा ने यहूदा देश पर आक्रमण किया। बाशा इस्राएल का राजा था। वह रामा नगर में गया और इसे एक किले के रूप में बनाया। बाशा ने रामा नगर का उपयोग यहूदा के राजा आसा के पास जाने और उसके पास से लोगों को आने से रोकने के लिये किया।

2आसाने यहोवा के मन्दिर के कोषागार में रखे हुए चाँदी और सोने को लिया और उसने राजमहल से चाँदी सोना लिया। तब आसा ने बेन्हदद को सन्देश भेजा। बेन्हदद अराम का राजा था और दमिश्क नगर में रहता था। आसा का सन्देश था: 3“बेन्हदद, मेरे और अपने बीच एक सन्धि होने दो। इस सन्धि को वैसे ही होने दो जैसा वह हमारे पिता और तुम्हारे पिता के बीच की गई थी। ध्यान दो, मैं तुम्हारे पास चाँदी सोना भेज रहा हूँ। अब तुम इस्राएल के राजा बाशा के साथ की गई सन्धि को तोड़ दो जिससे वह मुझे मुक्त छोड़ देगा और मुझे परेशान करना बन्द कर देगा।”

4बेन्हदद ने आसा की बात मान ली। बेन्हदद ने अपनी सेना के सेनापतियों को इस्राएल के नगरों पर आक्रमण करने के लिये भेजा। इन सेनापतियों ने इय्योन, दान और आबेल्मैम नगरों पर आक्रमण किया। उन्होंने नप्ताली देश में उन सभी नगरों पर आक्रमण किया जहाँ खजाने रखे थे। 5बाशा ने इस्राएल के नगरों पर आक्रमण की बात सुनी। इसलिए उसने रामा में किला बनाने का काम रोक दिया और अपना काम छोड़ दिया। 6तब राजा आसा ने यहूदा के सभी लोगों को इकट्ठा किया। वे रामा नगर को गये और लकड़ी तथा पत्थर उठा लाए जिनका उपयोग बाशा ने किला बनाने के लिये किया था। आसा और यहूदा के लोगों ने पत्थरों और लकड़ी का उपयोग गेवा और मिस्पा नगरों को अधिक मजबूत बनाने के लिये किया।

7उस समय दृष्टा हनानी यहूदा के राजा आसा के पास आया। हनानी ने उससे कहा, “आसा, तुम सहायता के लिये अराम के राजा पर आश्रित हुए, अपने यहोवा परमेश्वर पर नहीं। तुम्हें यहोवा पर आश्रित रहना चाहिए था। तुम यहोवा पर सहायता के लिए आश्रित नहीं रहे अत: अराम के राजा की सेना तुमसे भाग निकली। 8कूश और लूबी अति विशाल और शक्तिशाली सेना रखते थे। उनके पास अनेक रथ और सारथी थे। किन्तु आसा, तुम उस विशाल शक्तिशाली सेना को हराने में सहायता के लिये यहोवा पर आश्रित हुए और यहोवा ने तुम्हें उनको हराने दिया। 9यहोवा की आँखे सारी पृथ्वी पर उन लोगों को देखती फिरती है जो उसके प्रति श्द्धालु हैं जिससे वह उन लोगों को शक्तिशाली बना सके। आसा, तुमने मूर्खतापूर्ण काम किया। इसलिये अब से लेकर आगे तक तुमसे युद्ध होंगे।”

10आसा हनानी पर उस बात से क्रोधित हुआ जो उसने कहा। आसा इतना क्रोध से पागल हो उठा कि उसने हनानी को बन्दीगृह में डाल दिया। आसा उस समय कुछ लोगों के साथ नीचता और कठोरता का व्यवहार करता था।

11आसा ने जो कुछ आरम्भ से अन्त तक किया। वह इस्राएल और “यहूदा के राजाओं के इतिहास” की पुस्तक में लिखा है। 12आसा का पैर उसके राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष* में रोगग्रस्त हो गया। उसका रोग बहुत बुरा था किन्तु उसने यहोवा से सहायता नहीं चाही। आसा ने वैद्यों से सहायता चाही। 13आसा अपने राज्यकाल के इकतालीसवें वर्ष में मरा और इस प्रकार आसा ने अपने पूर्वजों के साथ विश्राम किया। 14लोगों ने आसा को उसकी अपनी कब्र में दफनाया जिसे उसने

राज्यकाल के छत्तीसवें वर्ष लगभग ई.पू. 879

राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष लगभग ई.पू. 875

स्वयं दाऊद के नगर में बनाया था। लोगों ने उसे एक अन्तिम शैया पर रखा जिस पर सुगन्धित द्रव्य और विभिन्न प्रकार के मिले इत्र रखे थे। लोगों ने आसा का सम्मान करने के लिये आग की महाज्वाला की।*

यहूदा का राजा यहोशापात

17 आसा के स्थान पर यहोशापात यहूदा का नया राजा हुआ। यहोशापात आसा का पुत्र था। यहोशापात ने यहूदा को शक्तिशाली बनाया जिससे वे इस्राएल के विरुद्ध लड़ सकते थे। 2उसने यहूदा के उन सभी नगरों में सेना की टुकड़ियाँ रखीं जो किले बना दिये गए थे। यहोशापात ने यहूदा और एप्रैम के उन नगरों में किले बनाए जिन्हें उसके पिता ने अपने अधिकार में किया था।

3यहोवा यहोशापात के साथ था क्योंकि उसने वे अच्छे काम किये जिन्हें उसके पूर्वज दाऊद ने किया था। यहोशापात ने बाल की मूर्तियों का अनुसरण नहीं किया। 4यहोशापात ने उस परमेश्वर को खोजा जिसका अनुसरण उसके पूर्वज करते थे। उसने परमेश्वर के आदेशों का पालन किया। वह उस तरह नहीं रहा जैसा इस्राएल के अन्य लोग रहते थे। 5यहोवा ने यहोशापात को यहूदा का शक्तिशाली राजा बनाया। यहूदा के सभी लोग यहोशापात को भेंट लाए। इस प्रकार यहोशापात के पास बहुत सी सम्पत्ति और सम्मान दोनों थे। 6यहोशापात का हृदय यहोवा के मार्ग पर चलने में आनन्दित था। उसने उच्च स्थानों और अशेरा के स्तम्भों को यहूदा देश से बाहर किया।

7यहोशापात ने अपने प्रमुखों को यहूदा के नगरों में उपदेश देने के लिये भेजा। यह यहोशापात के राज्यकाल के तीसरे वर्ष हुआ। वे प्रमुख बेन्हैल, ओबद्याह, जकर्याह, नतनेल और मीकायाह थे। 8यहोशापात ने इन प्रमुखों के साथ लेवीवंशियों को भी भेजा। ये लेवीवंशी शमायाह, नतन्याह, असाहेल, शमीरामोत, यहोनातान, अदोनिय्याह और तोबिय्याह थे। यहोशापात ने याजक एलीशामा और यहोराम को भेजा। 9उन प्रमुखों, लेवीवंशियों और याजकों ने यहूदा में लोगों को शिक्षा दी। उनके पास "यहोवा के नियमों की पुस्तक" थी। वे यहूदा के सभी नगरों में गये और लोगों को उन्होंने शिक्षा दी।

10यहूदा के आसपास के नगर यहोवा से डरते थे। यही कारण था कि उन्होनें यहोशापात के विरुद्ध युद्ध नहीं छेड़ा। 11कुछ पलिश्ती लोग यहोशापात के पास भेंट लाए। वे यहोशापात के पास चाँदी भी लाए क्योंकि वे जानते थे कि वह बहुत शक्तिशाली राजा है। कुछ अरब के लोग यहोशापात के पास रेवड़े लाये। वे उसके पास सात हजार सात सौ भेड़ें और सात हजार सात सौ बकरियाँ लाए।

12यहोशापात अधिक से अधिक शक्तिशाली होता गया। उसने किले और भण्डार नगर यहूदा देश में बनाये। 13उसने बहुत सी सामग्री भण्डार नगरों में रखी और यहोशापात ने यरुशलेम में प्रशिक्षित सैनिक रखे। 14उन सैनिकों की अपने परिवार समूह में गिनती थी। यरुशलेम के उन सैनिकों की सूची ये है:

यहूदा के परिवार समूह से ये सेनाध्यक्ष थे: अदना तीन लाख सैनिकों का सेनाध्यक्ष था। 15यहोहानान दो लाख अस्सी हजार सैनिकों का सेनाध्यक्ष था। 16अमस्याह दो लाख सैनिकों का सेनाध्यक्ष था। अमस्याह जिक्री का पुत्र था। अमस्याह अपने को यहोवा की सेवा में अर्पित करने में प्रसन्न था।

17बिन्यामीन के परिवार समूह से ये सेनाध्यक्ष थे: एल्यादा के पास दो लाख सैनिक थे जो धनुष, बाण और ढाल का उपयोग करते थे। एल्यादा एक साहसी सैनिक था। 18यहोजाबाद के पास एक लाख अस्सी हजार व्यक्ति युद्ध के लिये तैयार थे। 19वे सभी सैनिक यहोशापात की सेवा करते थे। राजा ने पूरे यहूदा देश के किलों में अन्य व्यक्तियों को भी रखा था।

मीकायाह राजा अहाब को चेतावनी देता है

18 यहोशापात के पास सम्पत्ति और सम्मान था। उसने राजा अहाब के साथ विवाह द्वारा एक सन्धि की।* 2कुछ वर्ष बाद, यहोशापात शोमरोन नगर में अहाब से मिलने गया। अहाब ने बहुत सी भेड़ों और पशुओं की बलि यहोशापात और उसके साथ के आदमियों के लिये चढ़ाई। अहाब ने यहोशापात को गिलाद के रामोत नगर पर आक्रमण के लिये प्रोत्साहित किया। 3अहाब ने यहोशापात से कहा, "क्या तुम मेरे साथ गिलाद के रामोत पर आक्रमण करने चलोगे?" अहाब इस्राएल का और यहोशापात यहूदा का राजा था। यहोशापात ने अहाब को उत्तर दिया, "मैं तुम्हारी तरह हूँ और हमारे लोग तुम्हारे लोगों की तरह हैं। हम युद्ध में तुम्हारा साथ देंगे।" 4यहोशापात ने अहाब से यह कहा, "आओ, पहले हम यहोवा से सन्देश प्राप्त करे।"

5इसलिए अहाब ने चार सौ नबियों को इकट्ठा किया। अहाब ने उनसे कहा, "क्या हमें गिलाद के रामोत नगर के विरुद्ध युद्ध में जाना चाहिये या नहीं?" नबियों ने अहाब को उत्तर दिया, "जाओ, क्योंकि यहोवा गिलाद के रामोत को तुम्हें पराजित करने देगा।"

6किन्तु यहोशापात ने कहा, "क्या कोई यहाँ यहोवा का नबी है? हम लोग नबियों में से एक के द्वारा यहोवा से पूछना चाहते हैं।"

लोगों ने ... महाज्वाला की सम्भवत: इसका तात्पर्य है कि आसा के सम्मान में लोगों ने सुगन्धित द्रव्य जलाए, किन्तु इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उन्होंने उसके शरीर को जलाया।

यहोशापात के ... सन्धि की यहोशापात के पुत्र यहोराम ने अहाब की पुत्री अतल्याह से विवाह किया। देखें 2 इति. 21:6

7तब राजा अहाब ने यहोशापात से कहा, “यहाँ पर
अभी एक व्यक्ति है। हम उसके माध्यम से यहोवा से
पूछ सकते हैं। किन्तु मैं इस व्यक्ति से घृणा करता हूँ
क्योंकि इसने कभी मेरे बारे में यहोवा से कोई अच्छा
सन्देश नहीं दिया। इसने सदैव बुरा ही सन्देश मेरे लिये
दिया है। इस आदमी का नाम मीकायाह है। यह यिम्ला
का पुत्र है।” किन्तु यहोशापात ने कहा, “अहाब, तुम्हें
ऐसा नहीं कहना चाहिये!”

8तब इस्राएल के राजा अहाब ने अपने अधिकारियों
में से एक को बुलाया और कहा, “शीघ्रता करो, यिम्ला
के पुत्र मीकायाह को यहाँ लाओ!”

9इस्राएल के राजा अहाब और यहूदा के राजा यहोशापात
ने अपने राजसी वस्त्र पहन रखे थे। वे अपने सिंहासनों
पर खलिहान में शोमरोन नगर के सम्मुख द्वार के
निकट बैठे थे। वे चार सौ नबी अपना सन्देश दोनों
राजाओं के सामने दे रहे थे। 10सिदकिय्याह कनाना
नामक व्यक्ति का पुत्र था। सिदकिय्याह ने लोहे की
कुछ सींगे बनाई। सिदकिय्याह ने कहा, “यही है जो
यहोवा कहता है: ‘तुम लोग लोहे की सींगों का
उपयोगतबतक अश्शूर के लोगों में घोंपने के लिये
करोगे जब तक वे नष्ट न हो जायें।’”

11सभी नबियों ने वही बात कही। उन्होंने कहा, “गिलाद
के रामोत नगर को जाओ। तुम लोग सफल होंगे और
जीतोगे। यहोवा राजा और अश्शूर के लोगों को हराने
देगा।”

12जो दूत मीकायाह को लाने गया था उसने उससे
कहा, “मीकायाह, सुनो, सभी नबी एक ही बात कह रहे
हैं। वे कह रहे हैं कि राजा को सफलता मिलेगी।
इसलिये वही कहो जो वे कह रहे हैं। तुम भी अच्छी
बात कहो।”

13किन्तु मीकायाह ने उत्तर दिया, “यह वैसे ही सत्य है
जैसा कि यहोवा शाश्वत है अत: मैं वही कहूँगा जो मेरा
परमेश्वर कहता है।”

14तब मीकायाह राजा अहाब के पास आया। राजा ने
उससे कहा, “मीकायाह, क्या हमें युद्ध करने के लिये
गिलाद के रामोत नगर को जाना चाहिये या नहीं?”
मीकायाह ने कहा, “जाओ और आक्रमण करो। यहोवा
तुम्हें उन लोगों को हराने देगा।”

15राजा अहाब ने मीकायाह से कहा, “कई बार मैंने
तुमसे प्रतिज्ञा करवायी थी कि तुम यहोवा के नाम पर
मुझे केवल सत्य बताओ!”

16तब मीकायाह ने कहा, “मैंने इस्राएल के सभी लोगों
को पहाड़ों पर बिखरे हुए देखा। वे गड़रिये के बिना भेड़
की तरह थे। यहोवा ने कहा, ‘उनका कोई नेता नहीं है।
हर एक व्यक्ति को सुरक्षित घर लौटने दो।’”

17इस्राएल के राजा अहाब ने यहोशापात से कहा,
“मैंने कहा था कि मीकायाह मेरे लिए यहोवा से अच्छा
सन्देश नहीं पाएगा। वह मेरे लिए केवल बुरे सन्देश
रखता है!”

18मीकायाह ने कहा, “यहोवा के सन्देश को सुनो:
मैंने यहोवा को अपने सिंहासन पर बैठे देखा। स्वर्ग की
पूरी सेना उसके चारों ओर खड़ी थी।* कुछ उसके
दाहिनी ओर और कुछ उसके बाँयीं ओर। 19यहोवा ने
कहा, ‘इस्राएल के राजा अहाब को कौन धोखा देगा?
जिससे वह गिलाद के रामोत के नगर पर आक्रमण
करे और वह वहाँ मार दिया जाये?’ यहोवा के चारों
ओर खड़े विभिन्न लोगों ने विभिन्न उत्तर दिये। 20तब
एक आत्मा आई और वह यहोवा के सामने खड़ी हुई।
उस आत्मा ने कहा, ‘मैं अहाब को धोखा दूँगी।’ यहोवा
ने आत्मा से पूछा, ‘कैसे?’ 21उस आत्मा ने उत्तर दिया,
‘मैं बाहर जाऊँगी और अहाब के नबियों के मुँह में झूठ
बोलने वाली आत्मा बनूँगी’ और यहोवा ने कहा, ‘तुम्हें
अहाब को धोखा देने में सफलता मिलेगी। इसलिये जाओ
और इसे करो।’

22“अहाब, अब ध्यान दो, यहोवा ने तुम्हारे नबियों’
के मुँह में झूठ बोलने बाली आत्मा प्रवेश कराई है।
यहोवा ने कहा है कि तुम्हारे साथ बुरा घटेगा।”

23तब सिदकिय्याह मीकायाह के पास गया और उसके
मुँह पर मारा। कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने कहा,
“मीकायाह, यहोवा की आत्मा मुझे त्याग कर तुझसे
वार्तालाप करने कैसे आई?” 24मीकायाह ने उत्तर दिया,
“सिदकिय्याह, तुम उस दिन इसे जानोगे जब तुम एक
भीतरी घर में छिपने जाओगे!”

25तब राजा अहाब ने कहा, “मीकायाह को लो और
इसे नगर के प्रशासक आमोन और राजा के पुत्र योआश
के पास भेज दो। 26आमोन और योआश से कहो, ‘राजा
यह कहते हैं: मीकायाह को बन्दीगृह में डाल दो। उसे
रोटी और पानी के अतिरिक्त तब तक कुछ खाने को न
दो जब तक मैं युद्ध से न लौटूँ।’”

27मीकायाह ने उत्तर दिया, “अहाब, यदि तुम युद्ध से
सुरक्षित लौट आते हो तो यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा
है। तुम सभी लोग सुनों और मेरे वचन को याद रखो!”

अहाब गिलाद के रामोत में मारा गया

28इसलिये इस्राएल के राजा अहाब और यहूदा के
राजा यहोशापात ने गिलाद के रामोत नगर पर आक्रमण
किया। 29इस्राएल के राजा अहाब ने यहोशापात से कहा,
“मैं युद्ध में जाने के पहले अपना रूप बदल लूँगा। किन्तु
तुम अपने राजवस्त्र ही पहनो।” इसलिये इस्राएल के
राजा अहाब ने अपना रुप बदल लिया और दोनों राजा
युद्ध में गए।

स्वर्ग की ... खड़ी थी हिब्रू पाठ है। स्वर्गों के सभी समूह उनके दायीं और बांयी ओर खड़े थे।

30अराम के राजा ने अपने रथों के रथपतियों को
आदेश दिया। उसने उनसे कहा, "चाहे जितना बड़ा या
छोटा कोई व्यक्ति हो उससे युद्ध न करो। किन्तु केवल
इस्राएल के राजा अहाब से युद्ध करो।" 31जब रथपतियों
ने यहोशापात को देखा उन्होंने सोचा, "वही इस्राएल का
राजा अहाब है!" वे यहोशापात पर आक्रमण करने के
लिये उसकी ओर मुड़े। किन्तु यहोशापात ने उद्घोष
किया और यहोवा ने उसकी सहायता की। परमेश्वर ने
रथपतियों को यहोशापात के सामने से दूर मुड़ जाने
दिया। 32जब उन्होंने समझा कि यहोशापात इस्राएल का
राजा नहीं है उन्होंने उसका पीछा करना छोड़ दिया।

33किन्तु एक सैनिक से बिना किसी लक्ष्य बेध के
धनुष से बाण छूट गया। उस बाण ने इस्राएल के राजा
अहाब को बेध दिया। इसने, अहाब के कवच के खुले
भाग में बेधा। अहाब ने अपने रथ के सारथी से कहा,
"पीछे मुड़ो और मुझे युद्ध से बाहर ले चलो। मैं घायल हो
गया हूँ!"

34उस दिन युद्ध अधिक बुरी तरह लड़ा गया। अहाब
ने अपने रथ में अरामियों का सामना करते हुए शाम
तक अपने को संभाले रखा। तब अहाब सूर्य डूबने पर
मर गया।

19 यहूदा का राजा यहोशापात सुरक्षित यरूशलेम
अपने घर लौटा। 2दृष्टा येहू यहोशापात से मिलने
गया। येहू के पिता का नाम हनानी था। येहू ने राजा
यहोशापात से कहा, "तुम बुरे आदमियों की सहायता
क्यों करते हो? तुम उन लोगों से क्यों प्रेम करते हो जो
यहोवा से घृणा करते हैं? यही कारण है कि यहोवा तुम
पर क्रोधित है। 3किन्तु तुम्हारे जीवन में कुछ अच्छी
बातें हैं। तुमने अशेरा–स्तम्भों को इस देश से बाहर
किया और तुमने हृदय से परमेश्वर का अनुसरण
करने का निश्चय किया।"

यहोशापात न्यायाधीशों को चुनता है

4यहोशापात यरूशलेम में रहता था। वह एप्रैम के
पहाड़ी प्रदेश में बेर्शेबा नगर के लोगों के साथ एक होने
के लिये फिर वहाँ गया। यहोशापात ने उन लोगों को
उस यहोवा परमेश्वर के पास लौटाया जिसका अनुसरण
उनके पूर्वज करते थे। 5यहोशापात ने यहूदा में न्यायधीश
चुने। उसने यहूदा के हर किले में रहने के लिये न्यायाधीश
चुने।

6यहोशापात ने इन न्यायाधीशों से कहा, "जो कुछ तुम
करो उसमें सावधान रहो क्योंकि तुम, लोगों के लिये
न्याय नहीं कर रहे हो अपितु यहोवा के लिये कर रहे
हो। जब तुम निर्णय करोगे तब यहोवा तुम्हारे साथ
होगा। 7तुम में से हर एक को अब यहोवा से डरना
चाहिए। जो करो उसमें सावधान रहो क्योंकि हमारा
यहोवा परमेश्वर न्यायी है। वह किसी व्यक्ति को अन्य
व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण मानकर व्यवहार नहीं करता।
वह अपने निर्णय को बदलने के लिये धन नहीं लेता।"

8और यहोशापात ने यरूशलेम में, लेवीवंशियों, याजकों
और इस्राएल के परिवार प्रमुखों को न्यायाधीश चुना।
उन लोगों को यहोवा के नियमों का उपयोग यरूशलेम
के लोगों की समस्याओं को निपटाने के लिये करना
था। 9यहोशापात ने उनको आदेश दिये। यहोशापात ने
कहा, "तुम्हें अपने पूरे हृदय से विश्वसनीय काम करना
चाहिए। तुम्हें यहोवा से अवश्य डरना चाहिए। 10तुम्हारे
पास हत्या, नियम, आदेश, शासन या किसी अन्य नियमों
के मामले आ सकते हैं। ये सभी मामले नगरों में रहने
वाले तुम्हारे भाईयों के यहाँ से आएंगे। इन सभी मामलों
में लोगों को इस बात की चेतावनी दो कि वे लोग यहोवा
के विरुद्ध पाप न करें। यदि तुम विश्वास योग्यता के
साथ यहोवा की सेवा नहीं करते तो तुम यहोवा के
क्रोध को अपने ऊपर और अपने भाईयों के ऊपर
लाने का कारण बनोगे। यह करो, तब तुम अपराधी
नहीं होगे। 11अमर्याह मार्गदर्शक याजक है। वह यहोवा
के सम्बन्ध की सभी बातों में तुम्हारे ऊपर रहेगा और
राजा सम्बन्धी सभी विषयों में जबद्याह तुम्हारे ऊपर
होगा। जबद्याह के पिता का नाम इश्माएल है। जबद्याह
यहूदा के परिवार समूह में प्रमुख है। लेवीवंशी शास्त्रियों
के रूप में भी तुम्हारी सेवा करेंगे। जो कुछ करो उसमें
साहस रखो। यहोवा उन लोगों के साथ हो, जो वही
करते हैं जो ठीक है।"

यहोशापात युद्ध का सामना करता है

20 कुछ समय पश्चात मोआबी, अम्मोनी और
कुछ मूनी लोग यहोशापात के साथ युद्ध
आरम्भ करने आए। 2कुछ लोग आए और उन्होंने
यहोशापात से कहा, "तुम्हारे विरुद्ध एदोम से एक
विशाल सेना आ रही है। वे मृत सागर की दूसरी ओर से
आ रहे हैं। वे हसासोन्तामार में पहले से ही है।
(हसासोन्तामार को एनगदी भी कहा जाता है)" 3यहोशापात
डर गया और उसने यहोवा से यह पूछने का निश्चय
किया कि मैं क्या करूँ? उसने यहूदा में हर एक के
लिये उपवास का समय घोषित किया। 4यहूदा के लोग
एक साथ यहोवा से सहायता माँगने आए। वे यहूदा के
सभी नगरों से यहोवा की सहायता माँगने आए।

5यहोशापात यहोवा के मन्दिर में नये आँगन के सामने
था। वह यरुशलेम और यहूदा से आए लोगों की सभा में
खड़ा हुआ। 6उसने कहा,

"हे हमारे पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर, तू स्वर्ग में
परमेश्वर है! तू सभी राष्ट्रों में सभी राज्यों पर शासन
करता है! तू प्रभुता और शक्ति रखता है! कोई व्यक्ति
तेरे विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकता! 7तू हमारा परमेश्वर
है। तूने इस प्रदेश में रहने वालों को इसे छोड़ने को

विवश किया। यह तूने अपने इस्राएली लोगों के सामने
किया। तूने यह भूमि इब्राहीम के वंशजों को सदैव के
लिये दे दी। इब्राहीम तेरा मित्र था। 8इब्राहीम के वंशज
इस देश में रहते थे और उन्होंने एक मन्दिर तेरे नाम
पर बनाया।"

9उन्होंने कहा, "यदि हम लोगों पर आपत्ति आएगी
जैसे तलवार, दण्ड, रोग या अकाल तो हम इस मन्दिर
के सामने और तेरे सामने खड़े होंगे। इस मन्दिर पर
तेरा नाम है। जब हम लोगों पर विपत्ति आएगी तो हम
लोग तुझको पुकारेंगे। तब तू हमारी सुनेगा और हमारी
रक्षा करेगा।

10"किन्तु इस समय यहाँ अम्मोन, मोआब और सेईर
पर्वत के लोग चढ़ आए हैं! तूने इस्राएल के लोगों को
उस समय उनकी भूमि में नहीं जाने दिया जब इस्राएल
के लोग मिस्र से आए। इसलिए इस्राएल के लोग मुड़ गए
थे और उन लोगों ने उनको नष्ट नहीं किया था।
11किन्तु देख कि वे लोग हमें उन्हें नष्ट न करने का
किस प्रकार का पुरस्कार दे रहे हैं। वे हमें तेरी भूमि से
बाहर होने के लिए विवश करने आए हैं। यह भूमि तूने
हमें दी है। 12हमारे परमेश्वर, उन लोगों को दण्ड दे!
हम लोग उस विशाल सेना के विरुद्ध कोई शक्ति नहीं
रखते जो हमारे विरुद्ध आ रही है! हम नहीं जानते कि
क्या करें! यही कारण है कि हम तुझसे सहायता की
आशा करते हैं।"

13यहूदा के सभी लोग यहोवा के सामने अपने शिशुओं,
पत्नियों और बच्चों के साथ खड़े थे। 14तब यहोवा की
आत्मा यहजीएल पर उतरी। यहजीएल जकर्याह का पुत्र
था। जकर्याह बनायाह का पुत्र था बनायाह यीएल का
पुत्र था और यीएल मत्तन्याह का पुत्र था। यहजीएल एक
लेवीवंशी था और आसाप का वंशज था। 15उस सभा
के बीच यहजीएल ने कहा, "राजा यहोशापात तथा
यहूदा और यरुशलेम में रहने वाले लोगों, मेरी सुनो!
यहोवा तुमसे यह कहता है: 'इस विशाल सेना से न तो
डरो, न ही परेशान होओ क्योंकि यह तुम्हारा युद्ध नहीं
है। यह परमेश्वर का युद्ध है! 16कल तुम वहाँ जाओ
और उन लोगों से लड़ो। वे सीस के दर्रे से होकर
आएँगे। तुम लोग उन्हें घाटी के अन्त में यरूएल मरुभूमि
की दूसरी ओर पाओगे। 17इस युद्ध में तुम्हें लड़ना नहीं
पड़ेगा। अपने स्थानों पर दृढ़ता से खड़े रहो। तुम देखोगे
कि यहोवा ने तुम्हें बचा लिया। यहूदा और यरूशलेम के
लोगों, डरो नहीं! परेशान मत हो! यहोवा तुम्हारे साथ है
अत: कल उन लोगों के विरुद्ध जाओ।'"

18यहोशापात अति नम्रता से झुका। उसका सिर भूमि
को छू रहा था और यहूदा तथा यरूशलेम में रहने वाले
सभी लोग यहोवा के सामने गिर गए और उन सभी ने
यहोवा की उपासना की। 19कहाती परिवार समूह के
लेवीवंशी और कहाती लोग, इस्राएल के यहोवा परमेश्वर
की स्तुति के लिये खड़े हुए। उन्होंने अत्यन्त उच्च स्वर
में स्तुति की।

20यहोशापात की सेना तकोआ मरुभूमि में बहुत सवेरे
गई। जब वे बढ़ना आरम्भ कर रहे थे, यहोशापात खड़ा
हुआ और उसने कहा, "यहूदा और यरुशलेम के लोगों,
मेरी सुनों। अपने यहोवा परमेश्वर में विश्वास रखो
और तब तुम शक्ति के साथ खड़े रहोगे। यहोवा के
नबियों में विश्वास रखो। तुम लोग सफल होगे!"
21यहोशापात ने लोगों का सुझाव सुना। तब उसने यहोवा
के लिये गायक चुने। वे गायक यहोवा की स्तुति के
लिये चुने गए थे क्योंकि वह पवित्र और अद्भुत है। वे
सेना के सामने कदम मिलाते हुए बढ़े और उन्होंने
यहोवा की स्तुति की। इन गायकों ने गाया, "परमेश्वर
को धन्यवाद दो क्योंकि उसका प्रेम सदैव रहता है!"*
22ज्योंही उन लोगों ने गाना गाकर यहोवा की स्तुति
आरम्भ की, यहोवा ने अज्ञात गुप्त आक्रमण अम्मोन,
मोआब और सेईर पर्वत के लोगों पर कराया। ये वे
लोग थे जो यहूदा पर आक्रमण करने आए थे। वे लोग
पिट गए। 23अम्मोनी और मोआबी लोगों ने सेईर पर्वत
से आये लोगों के विरुद्ध युद्ध आरम्भ किया। अम्मोनी
और मोआबी लोगों ने सेईर पर्वत से आए लोगों को मार
डाला और नष्ट कर दिया। जब वे सेईर के लोगों को
मार चुके तो उन्होंने एक दूसरे को मार डाला।

24यहूदा के लोग मरुभूमि में सामना करने के बिन्दु
पर आए। उन्होंने शत्रु की विशाल सेना को देखा।
किन्तु उन्होंने केवल शवों को भूमि पर पड़े देखा। कोई
व्यक्ति बचा न था। 25यहोशापात और उसकी सेना शवों
से बहुमूल्य चीजें लेने आई। उन्हें बहुत से जानवर, धन,
वस्त्र और कीमती चीजें मिलीं। यहोशापात और उसकी
सेना ने उन्हें अपने लिये ले लिया। चीज़ें उससे अधिक
थीं जितना यहोशापात और उसकी सेना ले जा सकती
थी। उनको शवों से कीमती चीज़ें इकट्ठी करने में
तीन दिन लगे, क्योंकि वे बहुत अधिक थीं। 26चौथे दिन
यहोशापात और उसकी सेना बराका की घाटी में मिले।
उन्होंने उस स्थान पर यहोवा की स्तुति की। यही कारण
है कि उस स्थान का नाम आज तक "बराका की
घाटी" है।

27तब यहोशापात यहूदा और यरूशलेम के लोगों को
यरुशलेम लौटा कर ले गया। यहोवा ने उन्हें अत्यन्त
प्रसन्न किया क्योंकि उनके शत्रु पराजित हो गये थे।
28वे यरुशलेम में वीणा सितार और तुरहियों के साथ
आये और यहोवा के मन्दिर में गए।

29सभी देशों के सारे राज्य यहोवा से भयभीत थे
क्योंकि उन्होंने सुना कि यहोवा इस्राएल के शत्रुओं से
लड़ा। 30यही कारण है कि यहोशापात के राज्य में

परमेश्वर को ... रहता है देखें भजन. 136

शान्ति रही। यहोशापात के परमेश्वर ने उसे चारों ओर
से शान्ति दी।

यहोशापात के शासन का अन्त

31यहोशापात ने यहूदा देश पर शासन किया। यहोशापात
ने जब शासन आरम्भ किया तो वह पैंतीस वर्ष का था।
उसने पच्चीस वर्ष यरूशलेम में शासन किया। उसकी
माँ का नाम अजूबा था। अजूबा शिल्ही की पुत्री थी।
32यहोशापात सच्चे मार्ग पर अपने पिता आसा की तरह
रहा। यहोशापात, आसा के मार्ग का अनुसरण करने से
मुड़ा नहीं। यहोशापात ने यहोवा की दृष्टि में उचित
किया। 33किन्तु उच्च स्थान नहीं हटाये गये और लोगों
ने अपना हृदय उस परमेश्वर का अनुसरण करने में
नहीं लगाया जिसका अनुसरण उनके पूर्वज करते थे।

34यहोशापात ने आरम्भ से अन्त तक जो कुछ किया
वह येहू की रचनाओं में लिखा है। येहू के पिता का नाम
हनानी था। ये बातें "इस्राएल के राजाओं के इतिहास"
नामक पुस्तक में लिखी हुई हैं।

35कुछ समय पश्चात यहूदा के राजा यहोशापात ने
इस्राएल के राजा अहज्याह के साथ सन्धि की। अहज्याह
ने बुरा किया। 36यहोशापात ने अहज्याह का साथ तर्शीश
नगर में जहाज जाने देने में दिया। उन्होंने जहाजों को
एस्योन गेबेर नगर में बनाया। 37तब एलीआजर ने
यहोशापात के विरुद्ध कहा। एलीआजर के पिता का
नाम दोदावाह था। एलीआजर मारेशा नगर का था।
उसने कहा, "यहोशापात, तुम अहज्याह के साथ मिल
गये हो, यही कारण है कि यहोवा तुम्हारे कार्य को नष्ट
करेगा।" जहाज टूट गए, अत: यहोशापात और अहज्याह
उन्हें तर्शीश नगर को न भेज सके।

21 तब यहोशापात मरा और अपने पूर्वजों के
साथ दफनाया गया। उसे दाऊद के नगर में
दफनाया गया। यहोराम यहोशापात के स्थान पर नया
राजा हुआ। यहोराम यहोशापात का पुत्र था। 2यहोराम
के भाई अजर्याह, यहीएल, जकर्याह, अजर्याह, मीकाएल
और शपत्याह थे। वे लोग यहोशापात के पुत्र थे। यहोशापात
यहूदा का राजा था। 3यहोशापात ने अपने पुत्रों को चाँदी,
सोना और कीमती चीजें भेंट में दीं। उसने उन्हें यहूदा में
शक्तिशाली किले भी दिये। किन्तु यहोशापात ने राज्य
यहोराम को दिया क्योंकि यहोराम सबसे बड़ा पुत्र था।

यहूदा का राजा यहोराम

4यहोराम ने अपने पिता का राज्य प्राप्त किया और
अपने को शक्तिशाली बनाया। तब उसने तलवार का
उपयोग अपने सभी भाईयों को मारने के लिये किया।
उसने इस्राएल के कुछ प्रमुखों को भी मार डाला। 5यहोराम
ने जब शासन आरम्भ किया तो वह बत्तीस वर्ष का था।
उसने यरुशलेम में आठ वर्ष तक शासन किया। 6वह
उसी तरह रहा जैसे इस्राएल के राजा रहते थे। वह उसी
प्रकार रहा जिस प्रकार अहाब का परिवार रहता था।
यह इसलिये हुआ कि यहोराम ने अहाब की पुत्री से
विवाह किया और यहोराम ने यहोवा की दृष्टि में बुरा
किया। 7किन्तु यहोवा दाऊद के परिवार को नष्ट नहीं
करना चाहता था क्योंकि उसने दाऊद के साथ वाचा
की थी। यहोवा ने वचन दिया था कि दाऊद और
उसकी सन्तान का एक वंश सदैव चलता रहेगा।

8यहोराम के समय में, एदोम यहूदा के अधिकार क्षेत्र
से बाहर निकल गया। एदोम के लोगों ने अपना राजा
चुन लिया। 9इसलिये यहोराम अपने सभी सेनापतियों
और रथों के साथ एदोम गया। एदोमी सेना ने यहोराम
और उसके रथ के रथपतियों को घेर लिया। किन्तु
यहोराम ने रात में युद्ध करके अपने निकलने का
रास्ता ढूँढ लिया। 10उस समय से अब तक एदोम का
देश यहूदा के विरुद्ध विद्रोही रहा है। लिब्ना नगर के
लोग भी यहोराम के विरुद्ध हो गए। यह इसलिए हुआ
कि यहोराम ने पूर्वजों के, यहोवा परमेश्वर को छोड़
दिया। 11यहोराम ने उच्च स्थान भी यहूदा के पहाड़ियों
पर बनाए। यहोराम ने यरूशलेम के लोगों को, परमेश्वर
जो चाहता है उसे करने से मना किया वह यहूदा के
लोगों को यहोवा से दूर ले गया।

12एलिय्याह नबी से यहोराम को एक सन्देश मिला।
सन्देश में यह कहा गया था: "यह वह है जो परमेश्वर
यहोवा कहता है। यही वह परमेश्वर है जिसका अनुसरण
तुम्हारा पूर्वज दाऊद करता था। यहोवा कहता है, 'यहोराम,
तुम उस प्रकार नहीं रहे जिस प्रकार तुम्हारा पिता
यहोशापात रहा। तुम उस प्रकार नहीं रहे जिस प्रकार
यहूदा का राजा आसा रहा। 13किन्तु तुम उस प्रकार रहे
जिस प्रकार इस्राएल के राजा रहे। तुमने यहूदा और
यरुशलेम के लोगों को वह काम करने से रोका है जो
यहोवा चाहता है। यही अहाब और उसके परिवार ने
किया। वे यहोवा के प्रति विश्वासयोग्य न रहे। तुमने
अपने भाईयों को मार डाला। तुम्हारे भाई तुमसे अच्छे
थे। 14अत: अब यहोवा शीघ्र ही तुम्हारे लोगों को बहुत
अधिक दण्ड देगा। यहोवा तुम्हारे बच्चों, पत्नियों और
तुम्हारी सारी सम्पत्ति को दण्ड देगा। 15तुम्हें आँतों की
भंयकर बीमारी होगी। यह प्रतिदिन अधिक बिगड़ती
जायेगी। तब तुम्हारी भंयकर बीमारी के कारण तुम्हारी
आँतें बाहर निकल आएंगी।'"

16यहोवा ने पलिश्तियों और कूशी लोगों के पास
रहने वाले अरब लोगों को यहोराम से रूष्ट किया।
17उन लोगों ने यहूदा देश पर आक्रमण कर दिया। वे
राजमहल की सारी सम्पत्ति और यहोराम के पुत्रों और
पत्नियों को ले गए। केवल यहोराम का सबसे छोटा पुत्र
छोड़ दिया गया। यहोराम के सबसे छोटे पुत्र का नाम
यहोआहाज था।

18उन चीज़ों के होने के बाद यहोवा ने यहोराम की
आँतों में ऐसा रोग उत्पन्न किया जिसका उपचार न हो
सका। 19तब यहोराम की आँतें, दो वर्ष बाद, उसकी
बीमारी के कारण, बाहर आ गई। वह बहुत बुरी पीड़ा
में मरा। यहोराम के सम्मान में लोगों ने आग की
महाज्वाला नहीं जलाई जैसा उन्होंने उसके पिता के
लिये किया था। 20यहोराम उस समय बत्तीस वर्ष का था
जब वह राजा हुआ था। उसने यरुशलेम में आठ वर्ष
शासन किया। जब यहोराम मरा तो कोई व्यक्ति दु:खी
नहीं हुआ। लोगों ने यहोराम को दाऊद के नगर में
दफनाया किन्तु उन कब्रों में नहीं जहाँ राजा दफनाये
जाते हैं।

यहूदा का राजा अहज्याह

22 यरूशलेम के लोगों ने अहज्याह को यहोराम
के स्थान पर नया राजा होने के लिये चुना।
अहज्याह यहोराम का सबसे छोटा पुत्र था। अरब लोगों
के साथ जो लोग यहोराम के डेरों पर आक्रमण करने
आए थे उन्होंने यहोराम के अन्य पुत्रों को मार डाला
था। अत: यहूदा में अहज्याह ने शासन करना आरम्भ
किया। 2अहज्याह ने जब शासन करना आरम्भ किया
तब वह बाईस वर्ष का था।* अहज्याह ने यरुशलेम में
एक वर्ष शासन किया। उसकी माँ का नाम अतल्याह
था। अतल्याह के पिता का नाम ओम्री था। 3अहज्याह
भी वैसे ही रहा जैसे अहाब का परिवार रहता था। वह
उस प्रकार रहा क्योंकि उसकी माँ ने उसे गलत काम
करने के लिये प्रोत्साहित किया। 4अहज्याह ने यहोवा
की दृष्टि में बुरे काम किये। यही अहाब के परिवार ने
किया था। अहाब के परिवार ने अहज्याह को उसके
पिता के मरने के बाद सलाह दी। उन्होंने अहज्याह को
बुरी सलाह दी। उस बुरी सलाह ने उसे मृत्यु तक पहुँचा
दिया।। 5अहज्याह ने उसी सलाह का अनुसरण किया
जो अहाब के परिवार ने उसे दी। अहज्याह राजा योराम
के साथ अराम के राजा हज़ाएल के विरुद्ध गिलाद के
रामोत नगर में गया। योराम के पिता का नाम अहाब
था जो इस्राएल का राजा था। किन्तु अर्मिया के लोगों ने
योराम को युद्ध में घायल कर दिया। 6योराम लौटकर
यिज्रेल नगर को स्वस्थ होने के लिये गया। वह तब
घायल हुआ था जब वह अराम के राजा हजाएल के
विरुद्ध रामोत में युद्ध कर रहा था।

तब अहज्याह योराम से मिलने यिज्रेल नगर को गया।
अहज्याह के पिता का नाम यहोराम था। वह यहूदा का
राजा था। योराम के पिता का नाम अहाब था। योराम
यिज्रेल नगर में था क्योंकि वह घायल था।

अहज्याह ... वर्ष का था कुछ प्राचीन प्रतियों में है 'बयालिस
वर्ष का' 2राजा 8:26 में यह लिखा है कि अहज्याह बाईस वर्ष
का था जब उसने शासन करना आरम्भ किया।

7परमेश्वर ने अहज्याह की मृत्यु तब करवा दी जब
वह योराम से मिलने गया। अहज्याह पहुँचा और योराम
के साथ येहू से मिलने गया। येहू के पिता का नाम
निमशी था। यहोवा ने येहू को अहाब के परिवार को
नष्ट करने के लिये चुना। 8येहू अहाब के परिवार को
दण्ड दे रहा था। येहू ने यहूदा के प्रमुखों और अहज्याह
के उन सम्बन्धियों का पता लगाया जो अहज्याह की
सेवा करते थे। येहू ने यहूदा के उन प्रमुखों और अहज्याह
के सम्बन्धियों को मार डाला। 9तब येहू अहज्याह की
खोज में था। येहू के लोगों ने उसे उस समय पकड़ लिया
जब वह शोमरोन नगर में छिपने का प्रयत्न कर रहा
था। वे अहज्याह को येहू के पास लाए। उन्होंने अहज्याह
को मार दिया और उसे दफना दिया। उन्होंने कहा,
"अहज्याह यहोशापात का वंशज है। यहोशापात ने पूरे
हृदय से यहोवा का अनुसरण किया था।" अहज्याह के
परिवार में वह शक्ति नहीं थी कि यहूदा के राज्य को
अखण्ड रख सके।

रानी अतल्याह

10अतल्याह अहज्याह की माँ थी। जब उसने देखा
कि उसका पुत्र मर गया तो उसने यहूदा में राजा के
सभी पुत्रों को मार डाला। 11किन्तु यहोशावत ने अहज्याह
के पुत्र योआश को लिया और उसे छिपा दिया। यहोशावत
ने योआश और उसकी धाय को अपने शयनकक्ष के
भीतर रखा। यहोशावत राजा यहोराम की पुत्री थी। वह
यहोयादा की पत्नी भी थी। यहोयादा एक याजक था
और यहोशावत अहज्याह की बहन थी। अतल्याह ने
योआश को नहीं मारा क्योंकि यहोशावत ने उसे छिपा
दिया था। 12योआश याजक के साथ परमेश्वर के मन्दिर
में छ: वर्ष तक छिपा रहा। उस काल में अतल्याह ने
रानी के रूप में देश पर शासन किया।

23 छ: वर्ष, बाद यहोयादा ने अपनी शक्ति दिखाई।
उसने नायकों के साथ सन्धि की। वे नायक:
यरोहाम का पुत्र अजर्याह यहोहानान का पुत्र इश्माएल,
ओबेद का पुत्र अजर्याह, अदायाह का पुत्र मासेयाह और
जिक्री का पुत्र एलीशापात थे। 2वे यहूदा के चारों ओर
गए और यहूदा के सभी नगरों से उन्होंने लेवीवंशियों
को इकट्ठा किया। उन्होंने इस्राएल के परिवारों के
प्रमुखों को भी इकट्ठा किया। तब वे यरूशलेम गए।
3सभी लोगों ने एक साथ मिलकर राजा के साथ परमेश्वर
के मन्दिर में एक सन्धि की।

यहोयादा ने इन लोगों से कहा, "राजा का पुत्र शासन
करेगा। यही वह वचन है जो यहोवा ने दाऊद के वंशजों
को दिया था। 4अब, तुम्हें यह अवश्य करना चाहिए:
याजकों और लेवीयों सब्त के दिन तुममें से जो काम पर
जाते हैं उनका एक तिहाई द्वार की रक्षा करेगा। 5तुम्हारा
एक तिहाई राजमहल पर रहेगा और तुम्हारा एक तिहाई

प्रारम्भिक फाटक पर रहेगा। किन्तु अन्य सभी लोग
यहोवा के मन्दिर के आँगन में रहेंगे। 6किसी भी व्यक्ति
को यहोवा के मन्दिर में न आने दो। केवल सेवा करने
वाले याजकों और लेवीवंशियों को पवित्र होने के कारण,
यहोवा के मन्दिर में आने की स्वीकृति है। किन्तु अन्य
लोग वह कार्य करेंगे जो यहोवा ने दे रखा है। 7लेवीवंशी
राजा के साथ रहेंगे। हर एक व्यक्ति अपनी तलवार
अपने साथ रखेगा। यदि कोई व्यक्ति मन्दिर में प्रवेश
करने की कोशिश करता है तो उस व्यक्ति को मार
डालो। तुम्हें राजा के साथ रहना है, वह जहाँ कहीं भी
जाये।"

8लेवीवंशी और यहूदा के सभी लोगों ने याजक यहोयादा
ने जो आदेश दिया, उसका पालन किया। याजक यहोयादा
ने याजकों के समूह में से किसी को छूट न दी। इस
प्रकार हर एक नायक और उसके सभी लोग सब्त के
दिन उनके साथ अन्दर आए जो सब्त के दिन बाहर गए
थे। 9याजक यहोयादा ने वे भाले तथा बड़ी और छोटी
ढालें अधिकारियों को दीं जो राजा दाऊद की थीं। वे
हथियार परमेश्वर के मन्दिर में रखे थे। 10तब यहोयादा
ने लोगों को बताया कि उन्हें कहाँ खड़ा होना है। हर
एक व्यक्ति अपने हथियार अपने हाथ में लिये था। पुरुष
मन्दिर की दाँयी ओर से बाँयी ओर तक लगातार खड़े
थे। वे वेदी, मन्दिर और राजा के निकट खड़े थे। 11वे
राजा के पुत्र को बाहर लाए और उसे मुकुट पहना
दिया। उन्होंने उसे व्यवस्था के पुस्तक की एक प्रति
दी।* तब उन्होंने योआश को राजा बनाया। यहोयादा
और उसके पुत्रों ने योआश का अभिषेक किया। उन्होंने
कहा, "राजा दीर्घायु हो!"

12अतल्याह ने मन्दिर की ओर दौड़ते हुए और राजा
की प्रशंसा करते हुए लोगों का शोर सुना। वह यहोवा
के मन्दिर पर लोगों के पास आई। 13उसने नजर दौड़ाई
और राजा को देखा। राजा राज स्तम्भ के साथ सामने
वाले द्वार पर खड़ा था। अधिकारी और लोग जो तुरही
बजाते थे, राजा के पास थे। देश के लोग प्रसन्न थे और
तुरही बजा रहे थे। गायक संगीत वाद्यों को बजा रहे थे।
गायक प्रशंसा के गायन में लोगों का नेतृत्व कर रहे थे।
तब अतल्याह ने अपने वस्त्रों को फाड़ डाला, और
उसने कहा, "षड़यन्त्र! षड़यन्त्र!"

14याजक यहोयादा सेना के नायकों को बाहर लाया।
उसने उनसे कहा, "अतल्याह को, सेना से, बाहर ले
आओ। अपनी तलवार का उपयोग उस व्यक्ति को मार
डालने के लिये करो जो उसके साथ जाता है।" तब
याजक ने सैनिकों को चेतावनी दी, "अतल्याह को
यहोवा के मन्दिर में मत मारो।" 15तब उन लोगों ने
अतल्याह को वश में कर लिया जब वह राजमहल के
अश्व द्वार पर आई। तब उन्होंने उसी स्थान पर उसे
मार डाला।

16तब यहोयादा ने राजा और सभी लोगों के साथ एक
सन्धि की। सभी ने स्वीकार किया कि वे यहोवा के
लोग रहेंगे। 17सभी लोग बाल की मूर्ति के मन्दिर में गए
और उसे उखाड़ डाला। उन्होंने बाल के मन्दिर की
वेदियों और मूर्तियों को तोड़ डाला। उन्होंने बाल की
वेदी के सामने बाल के याजक मत्तान को मार डाला।

18तब यहोयादा ने यहोवा के मन्दिर के लिये उत्तरदायी
याजकों को चुना। वे याजक लेवीवंशी थे और दाऊद ने
उन्हें यहोवा के मन्दिर के प्रति उत्तरदायी होने का कार्य
सौंपा था। उन याजकों को होमबलि मूसा के आदेश के
अनुसार यहोवा को चढ़ानी थी। वे अति प्रसन्नता से
दाऊद के आदेश के अनुसार गाते हुए बलि चढ़ाते थे।
19यहोयादा ने यहोवा के मन्दिर के द्वार पर द्वारपाल
रखे जिससे कोई व्यक्ति जो किसी दृष्टि से शुद्ध नहीं था
मन्दिर में नहीं जा सकता था। 20यहोयादा ने सेना के
नायकों, प्रमुखों, लोगों के प्रशासकों और देश के सभी
लोगों को अपने साथ लिया। तब यहोयादा ने राजा को
यहोवा के मन्दिर से बाहर निकाला और वे ऊपरी द्वार
से राजमहल में गए। उस स्थान पर उन्होंने राजा को
गद्दी पर बिठाया। 21यहूदा के सभी लोग बहुत प्रसन्न थे
और यरूशलेम नगर में शान्ति रही क्योंकि अतल्याह
तलवार से मार दी गई थी।

योआश फिर मन्दिर बनाता है

24 योआश जब राजा बना सात वर्ष का था। उसने
यरूशलेम में चालीस वर्ष तक शासन किया।
उसकी माँ का नाम सिब्या था। सिब्या बेर्शेबा नगर की
थी। 2योआश यहोवा के सामने तब तक ठीक काम
करता रहा जब तक याजक यहोयादा जीवित रहा।
3यहोयादा ने योआश के लिये दो पत्नियाँ चुनीं। योआश
के पुत्र और पुत्रियाँ थीं।

4तब कुछ समय बाद, योआश ने यहोवा का मन्दिर
दुबारा बनाने का निश्चय किया।

5योआश ने याजकों और लेवीवंशियों को एक साथ
बुलाया। उसने उनसे कहा, "यहूदा के नगरों में जाओ
और उस धन को इकट्ठा करो जिसका भुगतान इस्राएल
के लोग हर वर्ष करते हैं। उस धन का उपयोग परमेश्वर
के मन्दिर को दुबारा बनाने में करो। शीघ्रता करो और
इसे पूरा कर लो।" किन्तु लेवीवंशियों ने शीघ्रता नहीं
की।

6इसलिये राजा योआश ने प्रमुख याजक यहोयादा को
बुलाया। राजा ने कहा, "यहोयादा, तुमने लेवीवंशियों को
यहूदा और यरूशलेम से कर का धन लाने को प्रेरित
क्यों नहीं किया? यहोवा के सेवक मूसा और इस्राएल

उन्होंने उसे ... प्रति दी हिब्रू में पाठ है "उन्होंने उसे प्रमाण पत्र दिया।" यहाँ शब्द का अर्थ उन नियमों की प्रति है जिनका पालन राजा को करना था। देखें व्यवस्था. 17:18

के लोगों ने पवित्र तम्बू के लिये इस कर के धन का
उपयोग किया था।”
7बीते काल में अतल्याह के पुत्र, परमेश्वर के मन्दिर
में बलपूर्वक घुस गए थे। उन्होंने यहोवा के मन्दिर की
पवित्र चीज़ों का उपयोग अपने बाल देवताओं की पूजा
के लिये किया था। अतल्याह एक दुष्ट स्त्री थी।
8राजा योआश ने एक सन्दूक बनाने और उसे यहोवा
के मन्दिर के द्वार के बाहर रखने का आदेश दिया।
9तब लेवीवंशियों ने यहूदा और यरूशलेम में यह घोषणा
की। उन्होंने लोगों से कर का धन यहोवा के लिये लाने
को कहा। यहोवा के सेवक मूसा ने इस्राएल के लोगों से
मरुभूमि में रहते समय जो कर के रूप में धन माँगा था
उतना ही यह धन है। 10सभी प्रमुख और सभी लोग
प्रसन्न थे। वे धन लेकर आए और उन्होंने उसे सन्दूक
में डाला। वे तब तक देते रहे जब तक सन्दूक भर नहीं
गया। 11तब लेवीवंशियों को राजा के अधिकारियों के
सामने सन्दूक ले जानी पड़ी। उन्होंने देखा कि सन्दूक
धन से भर गया है। राजा के सचिव और प्रमुख याजक
के अधिकारी आए और उन्होंने धन को सन्दूक से
निकाला। तब वे सन्दूक को अपनी जगह पर फिर
वापस ले गए। उन्होंने यह बार–बार किया और बहुत
धन बटोरा। 12तब राजा योआश और यहोयादा ने वह
धन उन लोगों को दिया जो यहोवा के मन्दिर को बनाने
का कार्य कर रहे थे और यहोवा के मन्दिर बनाने में
कार्य करने वालों ने यहोवा के मन्दिर को दुबारा
बनाने के लिये कुशल बढ़ई और लकड़ी पर खुदाई का
काम करने वालों को मजदूरी पर रखा। उन्होंने यहोवा
के मन्दिर को दुबारा बनाने के लिये कांसे और लोहे
का काम करने की जानकारी रखने वालों को भी
मजदूरी पर रखा।
13काम की निगरानी रखने वाले व्यक्ति विश्वसनीय
थे। यहोवा के मन्दिर को दुबारा बनाने का काम सफल
हुआ। उन्होंने परमेश्वर के मन्दिर को जैसा वह पहले
था, वैसा ही बनाया और पहले से अधिक मजबूत बनाया।
14जब कारीगरों ने काम पूरा कर लिया तो वे उस धन
को जो बचा था, राजा योआश और यहोयादा के पास ले
आए। उसका उपयोग उन्होंने यहोवा के मन्दिर के लिये
चीजें बनाने के लिये किया। वे चीज़ें मन्दिर के सेवाकार्य
में और होमबलि चढ़ाने में काम आती थीं। उन्होंने सोने
और चाँदी के कटोरे और अन्य वस्तुएँ बनाई। याजकों
ने यहोवा के मन्दिर में हर एक संध्या को होमबलि तब
तक चढ़ाई जब तक यहोयादा जीवित रहा।
15यहोयादा बूढ़ा हुआ। उसने बहुत लम्बी उम्र बिताई
तब वह मरा। यहोयादा जब मरा, वह एक सौ तीस वर्ष
का था। 16लोगों ने यहोयादा को दाऊद के नगर में वहाँ
दफनाया जहाँ राजा दफनाए जाते हैं। लोगों ने यहोयादा
को वहाँ दफनाया क्योंकि अपने जीवन में उसने परमेश्वर
और परमेश्वर के मन्दिर के लिये इस्राएल में बहुत
अच्छे कार्य किये।
17यहोयादा के मरने के बाद यहूदा के प्रमुख आए
और वे राजा योआश के सामने झुके। राजा ने इन
प्रमुखों की सुनी। 18राजा और प्रमुखों ने उस यहोवा,
परमेश्वर के मन्दिर को अस्वीकार कर दिया जिसका
अनुसरण उनके पूर्वज करते थे। उन्होंने अशेरा–स्तम्भ
और अन्य मूर्तियों की पूजा आरम्भ की। परमेश्वर
यहूदा और यरूशलेम के लोगों पर क्रोधित हुआ क्योंकि
राजा और वे प्रमुख अपराधी थे। 19परमेश्वर ने लोगों
के पास नबियों को उन्हें यहोवा की ओर लौटाने के
लिये भेजा। नबियों ने लोगों को चेतावनी दी। किन्तु
लोगों ने सुनने से इन्कार कर दिया।
20परमेश्वर की आत्मा जकर्याह पर उतरी। जकर्याह
का पिता याजक यहोयादा था। जकर्याह लोगों के सामने
खड़ा हुआ और उसने कहा, “जो यहोवा कहता है वह
यह है: ‘तुम लोग यहोवा का आदेश पालन करने से
क्यों इन्कार करते हो? तुम सफल नहीं होगे। तुमने
यहोवा को छोड़ा है। इसलिये यहोवा ने भी तुम्हें छोड़
दिया है!’”
21लेकिन लोगों ने जकर्याह के विरुद्ध योजना बनाई।
राजा ने जकर्याह को मार डालने का आदेश दिया, अत:
उन्होंने उस पर तब तक पत्थर मारे जब तक वह मर
नहीं गया। लोगों ने यह मन्दिर के आँगन में किया।
22राजा योआश ने अपने ऊपर यहोयादा की दयालुता
को भी याद नहीं रखा। यहोयादा जकर्याह का पिता था।
किन्तु योआश ने यहोयादा के पुत्र जकर्याह को मार
डाला। मरने के पहले जकर्याह ने कहा, “यहोवा उस
पर ध्यान दे जो तुम कर रहे हो और तुम्हें दण्ड दे!”
23वर्ष के अन्त में अराम की सेना योआश के विरुद्ध
आई। उन्होंने यहूदा और यरुशलेम पर आक्रमण किया
और लोगों के सभी प्रमुखों को मार डाला। उन्होंने सारी
कीमती चीजें दमिश्क के राजा के पास भेज दीं।
24अराम की सेना बहुत कम समूहों में आई थी किन्तु
यहोवा ने उसे यहूदा की बहुत बड़ी सेना को हराने
दिया। यहोवा ने यह इसलिये किया कि यहूदा के लोगों
ने यहोवा परमेश्वर को छोड़ दिया जिसका अनुसरण
उनके पूर्वज करते थे। इस प्रकार योआश को दण्ड
मिला। 25जब अराम के लोगों ने योआश को छोड़ा, वह
बुरी तरह घायल था। योआश के अपने सेवकों ने
उसके विरुद्ध योजना बनाई। उन्होंने ऐसा इसलिये किया
कि योआश ने याजक यहोयादा के पुत्र जकर्याह को
मार डाला था। सेवकों ने योआश को उसकी अपनी
शैया पर ही मार डाला। योआश के मरने के बाद
लोगों ने उसे दाऊद के नगर में दफनाया। किन्तु लोगों
ने उसे उस स्थान पर नहीं दफनाया जहाँ राजा दफनाये
जाते हैं।

26जिन सेवकों ने योआश के विरुद्ध योजना बनाई, वे
ये हैं जाबाद और यहोजाबाद। जाबाद की माँ का नाम
शिमात था। शिमात अम्मोन की थी। यहोजाबाद की माँ
का नाम शिम्रित था। शिम्रित मोआब की थी। 27योआश
के पुत्रों की कथा, उसके विरुद्ध बड़ी भविष्यवाणियाँ
और उसने फिर परमेश्वर का मन्दिर कैसे बनाया,
“राजाओं के व्याख्या” नामक पुस्तक में लिखा है।
उसके बाद अमस्याह नया राजा हुआ। अमस्याह योआश
का पुत्र था।

यहूदा का राजा अमस्याह

25 अमस्याह राजा बनने के समय पच्चीस वर्ष
का था। उसने यरूशलेम में उन्तीस वर्ष तक
शासन किया। उसकी माँ का नाम यहोअद्दान था।
यहोअद्दान यरूशलेम की थी। 2अमस्याह ने वही किया
जो यहोवा उससे करवाना चाहता था। किन्तु उसने उन्हें
पूरे हृदय से नहीं किया। 3अमस्याह के हाथ में राज्यसत्ता
सुदृढ़ हो गयी। तब उसने उन अधिकारियों को मार
डाला जिन्होंने उसके पिता राजा को मारा था। 4किन्तु
अमस्याह ने उन अधिकारियों के बच्चों को नहीं मारा।
क्यों? क्योंकि उसने मूसा के पुस्तक में लिखे नियमों
को माना। यहोवा ने आदेश दिया था, “पिताओं को
अपने पुत्रों के पाप के लिये नहीं मारना चाहिए। बच्चों
को अपने पिता के पापों के लिये नहीं मरना चाहिए।
हर एक व्यक्ति को अपने स्वयं के पाप के लिये मरना
चाहिए।”

5अमस्याह ने यहूदा के लोगों को इकट्ठा किया।
उसने उनके परिवारों का वर्ग बनाया और उन वर्गों के
अधिकारी सेनाध्यक्ष और नायक नियुक्त किये। वे प्रमुख
यहूदा और बिन्यामीन के सभी सैनिकों के अधिकारी
हुए। सभी लोग जो सैनिक होने के लिये चुने गए, बीस
वर्ष के या उससे अधिक के थे। वे सब तीन लाख
प्रशिक्षित सैनिक भाले और ढाल के साथ लड़ने वाले
थे। 6अमस्याह ने एक लाख सैनिकों को इस्राएल से
किराये पर लिया। उसने पौने चार टन चाँदी का भुगतान
उन सैनिकों को किराये पर लेने के लिये किया। 7किन्तु
परमेश्वर का एक व्यक्ति अमस्याह के पास आया।
परमेश्वर के व्यक्ति ने कहा, “राजा, अपने साथ इस्राएल
की सेना को न जाने दो। परमेश्वर इस्राएल के साथ
नहीं है। परमेश्वर एप्रैम के लोगों के साथ नहीं है।
8सम्भव है तुम अपने को शक्तिशाली बनाओ और युद्ध
की तैयारी करो, किन्तु परमेश्वर तुम्हें जिता या हरा
सकता है। 9अमस्याह ने परमेश्वर के व्यक्ति से कहा,
“किन्तु हमारे धन का क्या होगा जो मैंने पहले ही
इस्राएल की सेना को दे दिया है?” परमेश्वर के व्यक्ति
ने उत्तर दिया, “यहोवा के पास बहुत अधिक है। वह
उससे भी अधिक तुमको दे सकता है!”

10इसलिए अमस्याह ने इस्राएल की सेना को वापस
घर एप्रैम को भेज दिया। वे लोग राजा और यहूदा के
लोगों के विरुद्ध बहुत क्रोधित हुए। वे बहुत अधिक
क्रोधित होकर अपने घर लौटे।

11तब अमस्याह बहुत साहसी हो गया और वह अपनी
सेना को एदोम देश में नमक की घाटी में ले गया। उस
स्थान पर अमस्याह की सेना ने सेईर के दस हजार
सैनिकों को मार डाला। 12यहूदा की सेना ने सेईर से दस
हजार आदमी पकड़े। वे उन लोगों को सेईर से एक
ऊँची चट्टान की चोटी पर ले गए। वे लोग तब तक
जीवित थे। तब यहूदा की सेना ने उन व्यक्तियों को उस
ऊँची चट्टान की चोटी से नीचे फेंक दिया और उनके
शरीर नीचे की चट्टानों पर चूर चूर हो गए।

13किन्तु उसी समय इस्राएली सेना यहूदा के कुछ
नगरों पर आक्रमण कर रही थी। वे शोमरोन से बेथोरोन
नगर तक के नगरों पर आक्रमण कर रहे थे। उन्होंने
तीन हजार लोगों को मार डाला और वे बहुत सी कीमती
चीज़ें ले गए। उस सेना के लोग इसलिये क्रोधित थे
क्योंकि अमस्याह ने उन्हें युद्ध में अपने साथ सम्मिलित
नहीं होने दिया।

14अमस्याह एदोमी लोगों को हराने के बाद घर लौटा।
वह सेइर के लोगों की उन देवमूर्तियों को लाया जिनकी
वे पूजा करते थे। अमस्याह ने उन देवमूर्तियों को पूजना
आरम्भ किया। उसने उन देवताओं को प्रणाम किया
और उनको सुगन्धि भेंट की। 15यहोवा अमस्याह पर
बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने अमस्याह के पास एक
नबी भेजा। नबी ने कहा, “अमस्याह, तुमने उन देवताओं
की क्यों पूजा की जिन्हें वे लोग पूजते थे? वे देवता तो
अपने लोगों की भी तुमसे रक्षा न कर सके!”

16जब नबी ने यह बोला, अमस्याह ने नबी से कहा,
“हम लोगों ने तुम्हें कभी राजा का सलाहकार नहीं
बनाया! चुप रहो! यदि तुम चुप नहीं रहे तो मार डाले
जाओगे।” नबी चुप हो गया, किन्तु उसने तब कहा,
“परमेश्वर ने सचमुच तुमको नष्ट करने का निश्चय
कर लिया है। क्योंकि तुम वे बुरी बातें करते हो और
मेरी सलाह नहीं सुनते।”

17यहूदा के राजा अमस्याह ने अपने सलाहकार के
साथ सलाह की। तब उसने योआश के पास सन्देश
भेजा। अमस्याह ने योआश से कहा, “हम लोग
आमने-सामने मिलें।” योआश यहोआहाज का पुत्र था।
यहोआहाज येहू का पुत्र था। येहू इस्राएल का राजा था।

18तब योआश ने अपना उत्तर अमस्याह को भेजा।
योआश इस्राएल का राजा था और अमस्याह यहूदा का
राजा था। योआश ने यह कथा सुनाई: “लबानोन की
एक छोटी कंटीली झाड़ी ने लबानोन के एक विशाल
देवदारु के वृक्ष को सन्देश भेजा। छोटी कंटीली झाड़ी ने
कहा, ‘अपनी पुत्री का विवाह मेरे पुत्र के साथ कर दो,’

किन्तु एक जंगली जानवर निकला और उसने कंटीली
झाड़ी को कुचला और उसे नष्ट कर दिया। 19तुम
कहते हो, 'मैंने एदोम को हराया है!' तुम्हें उसका घंमड
है और उसकी डींग हाँकते हो। किन्तु तुम्हें घर में घुसे
रहना चाहिए। तुम्हें खतरा मोल लेने की आवश्यकता
नहीं है। यदि तुम मुझसे युद्ध करोगे तो तुम और यहूदा
नष्ट हो जाएंगे।"

20किन्तु अमस्याह ने सुनने से इन्कार कर दिया। यह
परमेश्वर की ओर से हुआ। परमेश्वर ने यहूदा को
इस्राएल द्वारा हराने की योजना बनाई क्योंकि यहूदा के
लोग उन देवताओं का अनुसरण कर रहे थे जिनका
अनुसरण एदोम के लोग करते थे। 21इसलिये इस्राएल
का राजा योआश बेतशेमेश नगर में यहूदा के राजा
अमस्याह से आमने–सामने मिला। बेतशेमेश यहूदा में
है। 22इस्राएल ने यहूदा को हराया। यहूदा का हर एक
व्यक्ति अपने घरों को भाग गया। 23योआश ने अमस्याह
को बेतशेमेश में पकड़ा और उसे यरूशलेम ले गया।
अमस्याह के पिता का नाम योआश था। योआश के
पिता का नाम यहोआहाज था। योआश ने छ: सौ फुट
लम्बी यरूशलेम की उस दीवार को जो एप्रैम फाटक से
कोने के फाटक तक थी, गिरा दिया। 24तब योआश ने
परमेश्वर के मन्दिर का सोना, चाँदी तथा कई अन्य
सामान ले लिया। ओबेदेदोम मन्दिर में उन चीजों की
सुरक्षा का उत्तरदायी था। किन्तु योआश ने उन सभी
चीजों को ले लिया। योआश ने राजमहल से भी कीमती
चीज़ों को लिया। तब योआश ने कुछ व्यक्तियों को
बन्दी बनाया और शोमरोन लौट गया।

25अमस्याह योआश के मरने के बाद पन्द्रह वर्ष
जीवित रहा। अमस्याह का पिता यहूदा का राजा योआश
था। 26अमस्याह ने आरम्भ से अन्त तक अन्य जो कुछ
किया वह सब "इस्राएल और यहूदा के राजा के इतिहास"
नामक पुस्तक में लिखा है। 27जब अमस्याह ने यहोवा
की आज्ञा का पालन करना छोड़ दिया, यरूशलेम के
लोगों ने उसके विरुद्ध एक योजना बनाई। वह लाकीश
नगर को भाग गया। किन्तु लोगों ने लाकीश में व्यक्तियों
को भेजा और उन्होंने अमस्याह को वहाँ मार डाला।
28तब वे अमस्याह के शव को घोड़ों पर ले गए और
उसे उसके पूर्वजों के साथ यहूदा में दफनाया।

यहूदा का राजा उज्जिय्याह

26 तब यहूदा के लोगों ने अमस्याह के स्थान पर
नया राजा होने के लिये उज्जिय्याह को चुना।
अमस्याह उज्जिय्याह का पिता था। जब यह हुआ तो
उज्जिय्याह सोलह वर्ष का था। 2उज्जिय्याह ने एलोत
नगर को दुबारा बनाया और इसे यहूदा को लौटा दिया।
उज्जिय्याह ने यह अमस्याह के मर जाने और पूर्वजों के
साथ उसके दफनाए जाने के बाद किया।

3उज्जिय्याह जब राजा हुआ तो वह सोलह वर्ष का
था। उसने यरुशलेम में बावन वर्ष तक राज्य किया।
उसकी माँ का नाम यकील्याह था। यकील्याह
यरूशलेम की थी। 4उज्जिय्याह ने वह किया जो यहोवा
उससे करवाना चाहता था। उसने यहोवा का अनुसरण
वैसे ही किया जैसे उसके पिता अमस्याह ने किया था।
5उज्जिय्याह ने परमेश्वर का अनुसरण जकर्याह के
जीवन–काल में किया। जकर्याह ने उज्जिय्याह को शिक्षा
दी कि परमेश्वर का सम्मान और उसकी आज्ञा का
पालन कैसे किया जाता है। जब उज्जिय्याह यहोवा की
आज्ञा का पालन कर रहा था तब परमेश्वर ने उसे
सफलता दिलाई।

6उज्जिय्याह ने पलिश्ती लोगों के विरुद्ध एक युद्ध
किया। उसने गत, यब्ने, और अशदोद नगर की दीवारों
को गिरा दिया। उज्जियाह ने अश्दोद नगर के पास और
पलिश्ती लोगों के बीच अन्य स्थानों में नगर बसाये।
7परमेश्वर ने उज्जिय्याह की सहायता पलिश्तियों के
गूर्बाल नगर में रहने वाले अरबों और मूनियों के साथ
युद्ध करने में की। 8अम्मोनी उज्जिय्याह को राज्य कर
देते थे। उज्जिय्याह का नाम मिस्र की सीमा तक प्रसिद्ध
हो गया। वह प्रसिद्ध था क्योंकि वह बहुत शक्तिशाली
था।

9उज्जिय्याह ने यरूशलेम में कोने के फाटक, घाटी
के फाटक और दीवार के मुड़ने के स्थानों पर मीनारें
बनवाई। उज्जिय्याह ने उन मीनारों को दृढ़ बनाया।
10उज्जिय्याह ने मीनारों को मरुभूमि में बनाया। उसने
बहुत से कुँए भी खुदवाए। उसके पास पहाड़ी और
मैदानी प्रदेशों में बहुत से पशु थे। उज्जिय्याह के पास
पर्वतों में और जहाँ अच्छी उपज होती थी, उस भूमि में
किसान थे। वह ऐसे व्यक्तियों को भी रखे हुए था जो
उन खेतों की रखवाली करते थे जिनमें अँगूर होते थे।
उसे कृषि से प्रेम था।

11उज्जिय्याह के पास प्रशिक्षित सैनिकों की एक सेना
थी। वे सैनिक सचिव यीएल और अधिकारी मासेयाह
द्वारा वर्गो में बँटे थे। हनन्याह उनका प्रमुख था। यीएल
और मासेयाह ने उन सैनिकों को गिना और उन्हें वर्गो
में रखा। हनन्याय राजा के अधिकारियों में से एक था।
12सैनिकों के ऊपर दो हजार छ: सौ प्रमुख थे। 13वे
परिवार प्रमुख तीन लाख सात हजार पाँच सौ पुरुषों की
उस सेना के अधिपति थे जो बड़ी शक्ति से लड़ती थी। वे
सैनिक राजा को शत्रुओं के विरुद्ध सहायता करते थे।
14उज्जिय्याह ने सेना को ढाल, भाले, टोप, कवच, धनुष
और गुलेलों के लिये पत्थर दिये थे। 15यरूशलेम में
उज्जियायाह ने जो यन्त्र बनाए वह बुद्धिमानों के अविष्कार
थे। वे यन्त्र मीनारों तथा कोने की दीवारों पर रखे गए
थे। ये यन्त्र बाण और बड़े पत्थर फेंकते थे। उज्जिय्याह
प्रसिद्ध हो गया। लोग उसका नाम दूर–दूर के देशों में

जानते थे। उसके पास बड़ी सहायता थी और वह शक्तिशाली राजा हो गया।

16किन्तु जब उज्जिय्याह शक्तिशाली हो गया, उसके घमण्ड ने उसे नष्ट किया। वह यहोवा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहा। वह यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि जलाने की वेदी पर गया। 17याजक अजर्याह और यहोवा के अस्सी साहसी याजक सेवक उज्जिय्याह के पीछे मन्दिर में गए। 18उन्होंने उज्जिय्याह से कहा कि तुम गलती कर रहे हो। उन्होंने उससे कहा, "उज्जिय्याह, यहोवा के लिये सुगन्धि जलाना तुम्हारा काम नहीं है। यह करना तुम्हारे लिये ठीक नहीं है। याजक और हारून के वंशज ही केवल यहोवा के लिये सुगन्धि जलाते हैं। इन याजकों को सुगन्धि जलाने की पवित्र सेवा के लिये प्रशिक्षण दिया गया है। सर्वाधिक पवित्र स्थान से बाहर निकल जाओ। तुम विश्वासयोग्य नहीं रहे हो। यहोवा परमेश्वर तुमको इसके लिये सम्मान नहीं देगा!"

19किन्तु उज्जिय्याह क्रोधित हुआ। उसके हाथ में सुगन्धि जलाने के लिये एक कटोरा था। जिस समय उज्जिय्याह याजकों पर बहुत क्रोधित था, उसी समय उसके माथे पर कुष्ठ हो गया। यह याजकों के सामने यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि जलाने के वेदी के पास हुआ। 20प्रमुख याजक अजर्याह और सभी याजकों ने उज्जिय्याह को देखा। वे उसके ललाट पर कुष्ठ देख सकते थे। याजकों ने शीघ्रता से उज्जियाह को मन्दिर से बाहर जाने को विवश किया। उज्जिय्याह ने स्वयं शीघ्रता की, क्योंकि यहोवा ने उसे दण्ड दे दिया था। 21राजा उज्जिय्याह मृत्यु पर्यन्त कोढ़ी था। वह यहोवा के मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकता था। उज्जिय्याह के पुत्र योताम ने राजमहल को व्यवस्थित रखा और लोगों का प्रशासक बना।

22उज्जिय्याह ने आरम्भ से लेकर अन्त तक जो कुछ किया वह यशायाह नबी द्वारा लिखा गया। यशायाह का पिता आमोस था। 23उज्जिय्याह मरा और अपने पूर्वजों के पास दफनाया गया। उज्जिय्याह को राजाओं के कब्रिस्तान के पास मैदान में दफनाया गया। क्यों? क्योंकि लोगों ने कहा, "उज्जिय्याह को कोढ़ है।" योताम उज्जिय्याह के स्थान पर नया राजा हुआ। योताम उज्जिय्याह का पुत्र था।

यहूदा का राजा योताम

27 योताम पच्चीस वर्ष का था जब वह राजा हुआ। उसने सोलह वर्ष तक यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ का नाम यरूशा था। यरूशा सादोक की पुत्री थी। 2योताम ने वह किया, जो यहोवा उससे करवाना चाहता था। उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन वैसे ही किया जैसे उसके पिता उज्जिय्याह ने किया था। किन्तु योताम यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि जलाने के लिये उसी प्रकार नहीं घुसा जैसे उसका पिता घुसा था। किन्तु लोगों ने पाप करना जारी रखा। 3योताम ने यहोवा के मन्दिर के ऊपरी द्वार को दुबारा बनाया। उसने ओपेल नामक स्थान में दीवार पर बहुत से निर्माण कार्य किये। 4योताम ने यहूदा के पहाड़ी प्रदेश में भी नगर बनाए। योताम ने मीनार और किले जंगलों में बनाए। 5योताम अम्मोनी लोगों के राजा और उसके सेना के विरुद्ध लड़ा और उन्हें हराया। इसलिये हर वर्ष तीन वर्ष तक अम्मोनी लोग योताम को पौने चार टन चाँदी, बासठ हजार बुशल गेहूँ और बासठ बुशल जौ देते रहे।

6योताम शक्तिशाली हो गया क्योंकि उसने विश्वासपूर्वक यहोवा, अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। 7योताम ने अन्य जो कुछ भी किया तथा उसके सभी युद्ध "यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए हैं। 8योताम जब राजा हुआ था, पच्चीस वर्ष का था। उसने यरूशलेम पर सोलह वर्ष शासन किया। 9तब योताम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों ने उसे दाऊद के नगर में दफनाया। योताम के स्थान पर आहाज राजा हुआ। आहाज योताम का पुत्र था।

यहूदा का राजा आहाज

28 आहाज बीस वर्ष का था, जब वह राजा हुआ। उसने यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य किया। आहाज अपने पूर्वज दाऊद की तरह सच्चाई से नहीं रहा। आहाज ने वह नहीं किया जो कुछ यहोवा चाहता था कि वह करे। 2आहाज ने इस्राएली राजाओं के बुरे उदाहरणों का अनुसरण किया। उसने बाल–देवता की पूजा के लिये मूर्तियों को बनाने के लिये साँचे का उपयोग किया। 3आहाज ने हिन्नोम की घाटी में सुगन्धि जलाई। उसने अपने पुत्रों को आग में जलाकर बलि भेंट की। उसने वे सब भयंकर पाप किये जिसे उस प्रदेश में रहने वाले व्यक्तियों ने किया था। यहोवा ने उन व्यक्तियों को बाहर जाने को विवश किया था जब इस्राएल के लोग उस भूमि में आए थे। 4आहाज ने बलि भेंट की और सुगन्धि को उच्चस्थानों अर्थात् पहाड़ियों और हर एक हरे पेड़ के नीचे जलाया।

5-6आहाज ने पाप किया, इसलिये यहोवा, उसके परमेश्वर ने अराम के राजा को उसे पराजित करने दिया। अराम के राजा और उसकी सेना ने आहाज को हराया और यहूदा के अनेक लोगों को बन्दी बनाया। अराम का राजा उन बन्दियों को दमिश्क नगर को ले गया। यहोवा ने इस्राएल के राजा पेकह को भी आहाज को पराजित करने दिया। पेकह के पिता का नाम रमल्याह था। पेकह और उसकी सेना ने एक दिन में यहूदा के एक लाख बीस हजार वीर सैनिकों को मार

डाला। पेकह ने यहूदा के उन लोगों को इसलिये हराया
कि उन्होंने उस यहोवा, परमेश्वर की आज्ञा मानना
अस्वीकार कर दिया जिसकी आज्ञा उनके पूर्वज मानते
थे। 7जिक्री एप्रैमी का एक वीर सैनिक था। जिक्री ने
राजा आहाज के पुत्र मासेयाह और राजमहल के संरक्षक
अधिकारी अज्रीकाम और एलकाना को मार डाला।
एलकाना राजा के ठीक बाद द्वितीय शक्ति था।

8इस्राएल की सेना ने यहूदा में रहने वाले दो लाख
अपने निकट सम्बन्धियों को पकड़ा। उन्होंने स्त्रियों,
बच्चे और यहूदा से बहुत कीमती चीज़ें लीं। इस्राएली उन
बन्दियों और उन चीजों को शोमरोन नगर को ले आए।
9किन्तु वहाँ यहोवा का एक नबी था। इस नबी का नाम
ओदेद था। ओदेद इस्राएल की इस सेना से मिला जो
शोमरोन लौट आई। ओदेद ने इस्राएल की सेना से कहा,
"यहोवा, परमेश्वर ने जिसकी आज्ञा तुम्हारे पूर्वजों ने
मानी, तुम्हें यहूदा के लोगों को हराने दिया क्योंकि वह
उन पर क्रोधित था। तुम लोगों ने यहूदा के लोगों को
बहुत नीच ढंग से मारा और दण्डित किया। अब परमेश्वर
तुम पर क्रोधित है। 10तुम यहूदा और यरूशलेम के
लोगों को दास की तरह रखने की योजना बना रहे हो।
तुम लोगों ने भी यहोवा, अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप
किया है। 11अब मेरी सुनो। अपने जिन भाई बहनों को
तुम लोगों ने बन्दी बनाया है उन्हें वापस कर दो। यह
करो क्योंकि यहोवा का भयंकर क्रोध तुम्हारे विरुद्ध
है।"

12तब एप्रैम के कुछ प्रमुखों ने इस्राएल के सैनिकों
को युद्ध से लौटकर घर आते देखा। वे प्रमुख इस्राएल
के सैनिकों से मिले और उन्हें चेतावनी दी। वे प्रमुख
योहानान का पुत्र अजर्याह, मशिल्लेमोत का पुत्र बेरेक्याह,
शल्लूम का पुत्र यहिजकिय्याह और हदलै का पुत्र अमासा
थे। 13उन प्रमुखों ने इस्राएली सैनिकों से कहा, "यहूदा
के बन्दियों को यहाँ मत लाओ। यदि तुम यह करते हो
तो यह हम लोगों को यहोवा के विरुद्ध बुरा पाप करायेगा।
वह हमारे पाप और अपराध को और अधिक बुरा
करेगा तथा यहोवा हम लोगों के विरुद्ध बहुत क्रोधित
होगा!" 14इसलिए सैनिकों ने बन्दियों और कीमती चीजों
को उन प्रमुखों और इस्राएल के लोगों को दे दिया।
15पहले गिनाए गए प्रमुख (अजर्याह, बेरेक्याह,
यहिजकिय्याह और अमास) खड़े हुए और उन्होंने बन्दियों
की सहायता की। इन चारों व्यक्तियों ने उन वस्त्रों को
लिया जो इस्राएली सेना ने लिये थे और इसे उन लोगों
को दिया जो नंगे थे। उन प्रमुखों ने उन लोगों को जूते
भी दिये। उन्होंने यहूदा के बन्दियों को कुछ खाने और
पीने को दिया। उन्होंने उन लोगों को तेल मला। तब
एप्रैम के प्रमुखों ने कमजोर बन्दियों को खच्चरों पर
चढ़ाया और उन्हें उनके घर यरीहो में उनके परिवारों
के पास ले गये। यरीहो का नाम ताड़ के पेड़ का नगर
था। तब वे चारों प्रमुख अपने घर शोमरोन को लौट
गए।

16-17उसी समय, एदोम के लोग फिर आए और उन्होंने
यहूदा के लोगों को हराया। एदोमियों ने लोगों को बन्दी
बनाया और उन्हें बन्दी के रूप में ले गए। इसलिये राजा
आहाज ने अश्शूर के राजा से सहायता माँगी। 18पलिश्ती
लोगों ने भी पहाड़ी के नगरों और दक्षिण यहूदा पर
आक्रमण किया। पलिश्ती लोगों ने बेतशेमेश, अय्यालोन,
गदेरोत, सोको, तिम्ना और गिमजो नामक नगरों पर
अधिकार कर लिया। उन्होंने उन नगरों के पास के
गाँवों पर भी अधिकार कर लिया। तब उन नगरों में
पलिश्ती रहने लगे। 19यहोवा ने यहूदा को कष्ट दिया
क्योंकि यहूदा के राजा आहाज ने यहूदा के लोगों को
पाप करने के लिये प्रोत्साहित किया। वह यहोवा के
प्रति बहुत अधिक अविश्वास योग्य था। 20अश्शूर का
राजा तिलगतपिलनेसेर आया और आहाज को सहायता
देने के स्थान पर उसने कष्ट दिया। 21आहाज ने कुछ
कीमती चीजें यहोवा के मन्दिर, राजमहल और राजकुमार
भवन से इकट्ठा कीं। आहाज ने वे चीजें अश्शूर के
राजा को दीं। किन्तु उसने आहाज को सहायता नहीं दी।

22आहाज की परेशानियों के समय में उसने और
अधिक बुरे पाप किये और यहोवा का और अधिक
अविश्वास योग्य बन गया। 23उसने दमिश्क के लोगों
द्वारा पूजे जाने वाले देवताओं को बलिभेंट की। दमिश्क
के लोगों ने आहाज को पराजित किया था। इसलिए
उसने मन ही मन सोचा था, "अराम के लोगों के
देवताओं की पूजा ने उन्हें सहायता दी। यदि मैं उन
देवताओं को बलिभेंट करूँ तो संभव है, वे मेरी भी
सहायता करें।" आहाज ने उन देवताओं की पूजा की।
इस प्रकार उसने पाप किया और उसने इस्राएल के
लोगों को पाप करने वाला बनाया।

24आहाज ने यहोवा के मन्दिर से चीज़ें इकट्ठी कीं
और उनके टुकड़े कर दिये। तब उसने यहोवा के
मन्दिर का द्वार बन्द कर दिया। उसने वेदियाँ बनाई
और यरूशलेम में सड़क के हर मोड़ पर उन्हें रखा।
25आहाज ने यहूदा के हर नगर में अन्य देवताओं की
पूजा के लिये उच्च स्थान सुगन्धि जलाने के लिये बनाए।
आहाज ने यहोवा, परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर
दिया जिसकी आज्ञा का पालन उसके पूर्वज करते थे।

26आहाज ने आरम्भ से अन्त तक जो कुछ अन्य
किया वह "यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास"
नामक पुस्तक में लिखा है। 27आहाज मरा और अपने
पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों ने आहाज को
यरूशलेम नगर में दफनाया। किन्तु उन्होंने आहाज को
उसी कब्रिस्तान में नहीं दफनाया जहाँ इस्राएल के राजा
दफनाये गए थे। आहाज के स्थान पर हिजकिय्याह नया
राजा बना। हिजकिय्याह आहाज का पुत्र था।

यहूदा का राजा हिजकिय्याह

29 हिजकिय्याह जब पच्चीस वर्ष का था, राजा
हुआ। उसने उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में
शासन किया। उसकी माँ का नाम अबिय्याह था।
अबिय्याह जकर्याह की पुत्री थी। 2हिजकिय्याह ने वही
किया जो यहोवा चाहता था कि वह करे। उसने अपने
पूर्वज दाऊद की तरह, जो उचित था, वही किया।

3हिजकिय्याह ने यहोवा के मन्दिर के दरवाजों को
जोड़ा और उन्हें मजबूत किया। हिजकिय्याह ने मन्दिर
को फिर खोला। उसने राजा होने के बाद, वर्ष के पहले
महीने में यह किया। 4-5हिजकिय्याह ने याजकों और
लेवीवंशियों को एक बैठक में एक साथ बिठाया। वह
मन्दिर के पूर्व की दिशा में खुले आँगन में उनके साथ
बैठक में शामिल हुआ। हिजकिय्याह ने उनसे कहा,
“मेरी सुनों, लेवीवंशियों! पवित्र सेवा के लिये अपने को
तैयार करो। यहोवा, परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र
सेवा के लिये तैयार करो। वह परमेश्वर है जिसकी
आज्ञा का पालन तुम्हारे पूर्वजों ने किया। मन्दिर से उन
चीज़ों को बाहर करो जो वहाँ के लिये नहीं हैं। वे चीजें
मन्दिर को शुद्ध नहीं बनाती। 6हमारे पूर्वजों ने यहोवा
को छोड़ा और यहोवा के भवन से मुख मोड़ लिया।
7उन्होंने मन्दिर के स्वागत–कक्ष के दरवाजे को बन्द
कर दिया और दीपकों को बुझा दिया। उन्होंने सुगन्धि
का जलाना और इस्राएल के परमेश्वर को पवित्र स्थान
में होमबलि भेंट करना बन्द कर दिया। 8इसलिये, यहोवा
यहूदा और यरूशलेम के लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ।
यहोवा ने उन्हें दण्ड दिया। अन्य लोग भयभीत हुए और
दुःखी हुए जब उन्होंने देखा कि यहोवा ने यहूदा और
यरूशलेम के लोगों के साथ क्या किया। अन्य लोगों ने
यहूदा के लोगों के लिये लज्जा और घृणा से अपने सिर
झुका लिये। तुम जानते हो कि यह सब सच है। तुम
अपनी आँखों से इसे देख सकते हो। 9यही कारण है कि
हमारे पूर्वज युद्ध में मारे गये। हमारे पुत्र, पुत्रियाँ और
पत्नियाँ बन्दी बनाई गई। 10इसलिये मैं हिजकिय्याह ने
यह निश्चय किया है कि मैं यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर
के साथ एक वाचा करूँ। तब वह हम लोगों पर आगे
क्रोधित नहीं होगा। 11इसलिए मेरे पुत्रों तुम लोग सुस्त न
हो या और अधिक समय नष्ट न करो। यहोवा ने तुम
लोगों को अपनी सेवा के लिये चुना है। तुम्हें उसकी
सेवा करनी चाहिए और उसके लिये सुगन्धि जलानी
चाहिए।”

12-14उन लेवीवंशियों की यह सूची है जो वहाँ थे और
जिन्होंने कार्य आरम्भ किया। कहाती परिवार के अमासै
का पुत्र महत और अजर्याह का पुत्र योएल थे। मरारीत
परिवार के अब्दी का पुत्र कीश और यहल्लेलेल का
पुत्र अजर्याह थे। गेर्शोनी परिवार से जिम्मा का पुत्र
योआह और योआह का पुत्र एदेन थे। एलीसापान के
वंशजों में से शिम्री और यूएल थे। आसाप के वंशजों में
जकर्याह और मत्तन्याह थे। हेमान के वंशजों में से
यहूएल और शिमी थे। यदूतून के वंशजों में से शमायाह
और उज्जीएल थे। 15तब इन लेवीवंशियों ने अपने भाइयों
को इकट्ठा किया और मन्दिर में पवित्र सेवा करने
के लिये अपने को तैयार किया। उन्होंने राजा के उन
आदेशों का पालन किया जो यहोवा के पास से आये थे।
वे यहोवा के मन्दिर में उसे स्वच्छ करने गए। 16याजक
यहोवा के मन्दिर के भीतरी भाग में उसे स्वच्छ करने
गए। उन्होंने सभी अशुद्ध चीज़ों को बाहर निकाला
जिन्हें उन्होंने मन्दिर में पाया। वे अशुद्ध चीज़ों को
यहोवा के मन्दिर के आँगन में ले आए। तब लेवीवंशी
अशुद्ध चीजों को किद्रोन की घाटी में ले गए। 17पहले
महीने के पहले दिन लेवीवंशी अपने को पवित्र सेवा के
लिये तैयार करने लगे। महीने के आठवें दिन लेवीवंशी
यहोवा के मन्दिर के द्वार–मण्डप में आए। आठ दिन
और, वे यहोवा के मन्दिर को पवित्र उपयोग के लिये
स्वच्छ करते रहे। उन्होंने पहले महीने के सोलहवें दिन
यह काम पूरा किया।

18तब वे राजा हिजकिय्याह के पास गए। उन्होंने
उससे कहा, “राजा हिजकिय्याह, हम लोगों ने यहोवा
के पूरे मन्दिर और भेंट जलाने के लिये वेदी को स्वच्छ
कर दिया। हम लोगों ने रोटी को पक्तियों में रखने की
मेज और उस के लिये उपयोग में आने वाली सभी चीज़ों
को स्वच्छ कर दिया। 19उन दिनों जब आहाज राजा था
उसने परमेश्वर के प्रति विरोध किया। उसने बहुत सी
चीज़ें फेंक दी थीं। जो मन्दिर में थीं। किन्तु हम लोगों ने
फिर उन चीज़ों को रख दिया है और उन्हें पवित्र कार्य
के लिये तैयार कर दिया है। वे अब यहोवा की वेदी के
सामने हैं।”

20राजा हिजकिय्याह ने नगर अधिकारियों को इकट्ठा
किया और अगली सुबह वह यहोवा के मन्दिर गया।
21वे सात बैल, सात मेढ़े, सात मेमने और सात छोटे
बकरे लाए। वे जानवर यहूदा के राज्य की पापबलि,
पवित्र स्थान को शुद्ध करने और यहूदा के लोगों के
लिये थे। राजा हिजकिय्याह ने उन याजकों को जो
हारून के वंशज थे, आदेश दिया कि वे उन जानवरों
को यहोवा की वेदी पर चढ़ाऐं। 22इसलिये याजकों ने
बैलों को मार डाला और उनका खून रख लिया। तब
उन्होंने बैलों का खून वेदी पर छिड़का। तब याजकों ने
मेढ़ों को मारा और वेदी पर मेढ़ों का खून छिड़का। तब
याजकों ने मेमनों को मारा और उनका खून वेदी पर
छिड़का। 23-24तब याजक बकरों को राजा और एक
साथ इकट्ठे लोगों के सामने लाए। बकरे पापबलि थे।
याजकों ने अपने हाथ बकरों पर रखे और उन्हें मारा।
याजकों ने बकरों के खून से वेदी पर पापबलि चढ़ाई।
उन्होंने यह इसलिये किया कि यहोवा इस्राएल के लोगों

को क्षमा कर देगा। राजा ने कहा कि होमबलि और
पापबलि इस्राएल के सभी लोगों के लिये होंगी।

25राजा हिजकिय्याह ने लेवीवंशियों को यहोवा के
मन्दिर में मंजीरों, तम्बूरों और वीणा के साथ रखा जैसा
दाऊद, राजा का दृष्टा गाद और नातान नबी ने आदेश
दिया था। यह आदेश नबियों द्वारा यहोवा के यहाँ से
आया था। 26इस प्रकार लेवीवंशी, दाऊद के गीत के
वाद्यों के साथ और याजक अपनी तुरहियों के साथ खड़े
हुए। 27तब हिजकिय्याह ने होमबलि की बलि वेदी पर
चढ़ाने के लिये आदेश दिया। जब होमबलि देना आरम्भ
हुआ, यहोवा के लिये गायन भी आरम्भ हुआ। तुरहियाँ
बजाई गई और इस्राएल के राजा दाऊद के वाद्ययन्त्र
बजे। 28सारी सभा ने दण्डवत किया, गायकों ने गाया
और तुरही वादकों ने अपनी तुरहियाँ तब तक बजाई
जब तक होमबलि का चढ़ाया जाना पूरा नहीं हुआ।

29बलिदानों के पूरे होने के बाद राजा हिजकिय्याह
और उसके साथ के सभी लोग झुके और उन्होनें
उपासना की। 30राजा हिजकिय्याह और उसके
अधिकारियों ने लेवीवंशियों को यहोवा की स्तुति का
आदेश दिया। उन्होंने उन गीतों को गाया जिन्हें दाऊद
और दृष्टा आसाप ने लिखा था। उन्होंने यहोवा की
स्तुति की और प्रसन्न हुए। वे सभी झुके और उन्होंने
यहोवा की उपासना की।

31हिजकिय्याह ने कहा, "यहूदा के लोगों, अब तुम
लोग स्वयं को यहोवा को अर्पित कर चुके हो। निकट
आओ, बलि और धन्यवाद की भेंट यहोवा के मन्दिर में
लाओ।" तब लोग बलि और धन्यवाद की भेंट लाये।
कोई व्यक्ति, जो चाहता था, वह होमबलि भी लाया।
32सभा द्वारा मन्दिर में लाई गई होमबलि ये हैं: सत्तर
बैल, सौ मेढ़े और दो सौ मेमने। ये सभी जानवर यहोवा
को होमबलि के रुप में बलि किये गये। 33यहोवा के
लिये पवित्र भेंटें छ: सौ बैल और तीन हजार भेंड़–बकरे
थे। 34किन्तु वहाँ पर्याप्त याजक नहीं थे जो होमबलि के
लिये जानवरों की खाल उतार सकें और सभी जानवरों
को काट सकें। इसलिये उनके सम्बन्धी लेवीवंशियों ने
उनकी सहायता तब तक की जब तक काम पूरा न
हुआ और जब तक दूसरे याजक अपने को पवित्र
सेवा के लिये तैयार न कर सके। लेवीवंशी यहोवा
की सेवा के लिये अपने को तैयार करने में अधिक दृढ़
थे। वे याजकों की अपेक्षा अधिक दृढ़ थे। 35वहाँ
अनेक होमबिल, मेलबलि की चर्बी और पेय भेंट चढ़ीं।
इस प्रकार यहोवा के मन्दिर में सेवा फिर आरम्भ
हुई।

36हिजकिय्याह और सभी लोग उन चीजों के लिये
प्रसन्न थे जिन्हें यहोवा ने अपने लोगों के लिये बनाई
और वे प्रसन्न थे कि उन्होंने उन्हें इतनी शीघ्रता से
किया!

हिजकिय्याह फसहपर्व मनाता है

30 हिजकिय्याह ने इस्राएल और यहूदा के सभी
लोगों को सन्देश भेजा। उसने एप्रैम और मनश्शे
के लोगों को भी पत्र लिखा। हिजकिय्याह ने उन सभी
लोगों को यरुशलेम में यहोवा के मन्दिर में आने के
लिये निमन्त्रित किया जिससे वे सभी फसहपर्व यहोवा,
इस्राएल के परमेश्वर के लिये मना सकें। 2हिजकिय्याह
ने सभी अधिकारियों और यरूशलेम की सभा से यह
सलाह की कि फसह पर्व दूसरे महीने में मनाया जाय।
3वे फसह पर्व को नियमित समय से न मना सके। क्यों?
क्योंकि याजक पर्याप्त संख्या में पवित्र सेवा के लिये
अपने को तैयार न कर सके और दूसरा कारण यह था
कि लोग यरूशलेम में इकट्ठे नहीं हो सके थे। 4इस
सुझाव ने राजा हिजकिय्याह और पूरी सभा को सन्तुष्ट
किया। 5इसलिये उन्होंने इस्राएल में बेर्शेबा नगर से लेकर
लगातार दान नगर तक हर एक स्थान पर घोषणा की।
उन्होंने लोगों से कहा कि वे यरूशलेम में यहोवा, इस्राएल
के परमेश्वर के लिये फसह पर्व मनाने आएं। इस्राएल
के बहुत बड़े समूह ने बहुत समय से फसह पर्व उस
प्रकार नहीं मनाया था, जिस प्रकार मूसा के नियमों ने
इसे मनाने को कहा था। 6इसलिये दूत राजा का पत्र पूरे
इस्राएल और यहूदा में ले गए। उन पत्रों में यह लिखा था:

इस्राएल की सन्तानों, इब्राहीम, इसहाक और
इस्राएल (याकूब), जिस यहोवा, परमेश्वर की आज्ञा
मानते थे उसके पास लौटो। तब यहोवा तुम लोगों
के पास वापस आयेगा जो अश्शूर के राजा से बच
गए हैं और अभी तक जीवित हैं। 7अपने पिता
और भाइयों की तरह न बनो। यहोवा उनका
परमेश्वर था, किन्तु वे उसके विरुद्ध हो गए।
इसलिये यहोवा ने उनके प्रति लोगों के हृदय में
घृणा पैदा की और उनके बारे में बुरा कहलवाया।
तुम स्वयं अपनी आँखों से देख सकते हो कि यह
सत्य है। 8अपने पूर्वजों की तरह हठी न बनो।
अपितु सच्चे हृदय से यहोवा की आज्ञा मानो।
सर्वाधिक पवित्र स्थान पर आओ। यहोवा ने
सर्वाधिक पवित्र स्थान को सदैव के लिये पवित्र
बनाया है। अपने यहोवा, परमेश्वर की सेवा करो।
तब यहोवा का डरावना क्रोध तुम पर से हट
जाएगा। 9यदि तुम लौटोगे और यहोवा की आज्ञा
मानोगे तब तुम्हारे सम्बन्धी और बच्चे उन लोगों
की कृपा पाएंगे जिन्होंने उन्हें बन्दी बनाया है और
तुम्हारे सम्बन्धी और बच्चे इस देश में लौटेंगे।
यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर कृपालु है। यदि तुम उसके
पास लौटोगे तो वह तुमसे दूर नहीं जायेगा।

10दूत एप्रैम और मनश्शे के क्षेत्रों के सभी नगरों में
गए। वे लगातार पूरे जबूलून देश में गए। किन्तु लोगों ने

दूतों की हँसी उड़ाई और उनका मजाक उड़ाया। 11किन्तु
आशेर, मनश्शे और जबूलून देश के कुछ लोग विनम्र
हुए और यरूशलेम गए। 12 यहूदा में परमेश्वर की
शक्ति ने लोगों को संगठित किया ताकि वे राजा
हिजकिय्याह और उसके अधिकारियों की आज्ञा का
पालन करें। इस तरह उन्होंने यहोवा के आज्ञा का
पालन किया।

13बहुत से लोग एक साथ यरूशलेम, दूसरे महीने में
अखमीरी रोटी का उत्सव मनाने आए। यह बहुत बड़ी
भीड़ थी। 14उन लोगों ने यरूशलेम में असत्य देवताओं
की वेदियों को हटा दिया। उन्होंने असत्य देवताओं के
लिये सुगन्धि भेंट की वेदियों को भी हटा दिया। उन्होंने
उन वेदियों को किद्रोन की घाटी में फेंक दिया। 15तब
उन्होंने फसह पर्व के मेमने को दूसरे महीने के चौदहवें
दिन मारा। याजक और लेवीवंशी लज्जित हुए। उन्होंने
अपने को पवित्र सेवा के लिये तैयार किया। याजक
और लेवीवंशी होमबलि यहोवा के मन्दिर में ले आए।
16मन्दिर में अपने लिए निर्धारित स्थान पर वे वैसे ही
बैठे जैसा परमेश्वर के व्यक्ति मूसा के नियम में कहा
गया था। लेवीवंशियों ने याजकों को खून दिया। तब
याजकों ने खून को वेदी पर छिड़का। 17उस समूह में
बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने अपने को पवित्र सेवा के
लिये तैयार नहीं किया था अत: वे फसह पर्व के मेमने
को मारने की स्वीकृति नहीं पा सके। यही कारण था
कि लेवीवंशी उन सभी लोगों के लिए फसह पर्व के
मेमने को मारने के उत्तरदायी थे जो शुद्ध नहीं थे।
लेवीवंशी ने हर एक मेमने को यहोवा के लिये पवित्र
बनाया।

18-19एप्रैम, मनश्शे, इस्साकार और जबूलून के बहुत
से लोग फसह पर्व उत्सव के लिये अपने को ठीक
प्रकार से तैयार नहीं किया था। उन्होंने फसह पर्व मूसा
के नियम के अनुसार ठीक ढंग से नहीं मनाया। किन्तु
हिजकिय्याह ने उन लोगों के लिए प्रार्थना की। इसलिये
हिजकिय्याह ने यह प्रार्थना की, "यहोवा, परमेश्वर तू
अच्छा है। ये लोग तेरी उपासना ठीक ढंग से करना
चाहते थे, किन्तु वे अपने को नियम के अनुसार शुद्ध
न कर सके, कृपया उन लोगों को क्षमा कर। तू
परमेश्वर है जिसकी आज्ञा का पालन हमारे पूर्वजों ने
किया। यदि किसी ने सर्वाधिक पवित्र स्थान के नियम
के अनुसार अपने को शुद्ध न किया तो भी क्षमा कर।"
20यहोवा ने राजा हिजकिय्याह की प्रार्थना सुनी। यहोवा
ने लोगों को क्षमा कर दिया। 21इस्राएल की सन्तानों ने
यरूशलेम में अखमीरी रोटी का उत्सव सात दिन तक
मनाया। वे बहुत प्रसन्न थे। लेवीवंशी और याजकों ने
अपनी पूरी शक्ति से हर एक दिन यहोवा की स्तुति की।
22राजा हिजकिय्याह ने उन सभी लेवीवंशियों को उत्साहित
किया जो अच्छी तरह समझ गये थे कि यहोवा की सेवा
कैसे की जाती है। लोगों ने सात दिन तक पर्व मनाया
और मेलबलि चढ़ाई। उन्होंने अपने पूर्वजों के यहोवा
परमेश्वर को धन्यवाद दिया और उसकी स्तुति की।

23सभी लोग सात दिन और ठहरने को सहमत हो
गए। वे फसहपर्व मनाते समय सात दिन तक बड़े प्रसन्न
रहे। 24यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने उस सभा को
एक हजार बैल तथा सात हजार भेड़ें मारने और खाने
के लिये दिये। प्रमुखों ने सभा को एक हजार बैल और
दस हजार भेड़ें दीं। बहुत से याजकों ने पवित्र सेवा के
लिये अपने को तैयार किया। 25यहूदा की पूरी सभा,
याजक, लेवीवंशी, इस्राएल से आने वाली पूरी सभा और
वे यात्री जो इस्राएल से आए थे तथा यहूदा पहुँच गए थे,
सभी लोग अत्यन्त प्रसन्न थे। 26इस प्रकार यरूशलेम में
बहुत आनन्द था। इस पर्व के समान कोई भी पर्व
इस्राएल के राजा, दाऊद के पुत्र सुलैमान के समय के
बाद से नहीं हुआ था। 27याजक और लेवीवंशी खड़े हुए
और यहोवा से लोगों को आशीर्वाद देने को कहा।
परमेश्वर ने उनकी सुनी। उनकी प्रार्थना स्वर्ग में यहोवा
के पवित्र निवास तक पहुँची।

राजा हिजकिय्याह सुधार करता है

31 फसह पर्व का उत्सव पूरा हुआ। इस्राएल के
जो लोग फसह पर्व के लिये यरूशलेम में थे,
वे यहूदा के नगरों को चले गए। तब उन्होंने पत्थर की
उन मूर्तियों को ध्वस्त किया जो उन नगरों में थी। उन
पत्थर की मूर्तियों का पूजन असत्य देवताओं के रूप में
होता था। उन लोगों ने अशेरा के स्तम्भों को भी काट
डाला और उन्होंने उन उच्चस्थानों और वेदियों को भी
तोड़ डाला जो बिन्यामीन और यहूदा के पूरे देशों में थे।
लोगों ने एप्रैम और मनश्शे के क्षेत्र में भी वही किया।
लोगों ने यह तब तक किया जब तक उन्होंने असत्य
देवताओं की पूजा की सभी चीज़ों को नष्ट नहीं कर
दिया। तब सभी इस्राएली अपने नगरों को घर लौट गए।

2राजा हिजकिय्याह ने फिर याजकों और लेवीवंशियों
को समूहों में बाँटा और प्रत्येक समूह को अपना विशेष
कार्य करना होता था। अत: राजा हिजकिय्याह ने उन
समूहों को अपना कार्य फिर से आरम्भ करने को
कहा। अत: याजकों और लेवीवंशियों का फिर से होमबलि
और मेलबलि चढ़ाने का काम था। उन का काम
मन्दिर में सेवा करना, गाना और यहोवा के भवन के
द्वार पर परमेश्वर की स्तुति करना था। 3हिजकिय्याह
ने अपने पशुओं में से कुछ को होमबलि के लिये दिया।
ये पशु प्रतिदिन प्रात: और सन्ध्या को होमबलि के लिये
प्रयोग में आते थे। ये पशु सब्त के दिनों में और नवचन्द्र
के समय और अन्य विशेष उत्सवों पर दी जाती थीं। यह
वैसे ही किया जाता था जैसा यहोवा के व्यवस्था में
लिखा है। 4हिजकिय्याह ने यरूशलेम में रहने वाले लोगों

को आदेश दिया कि जो हिस्सा याजकों और लेवीवंशियों
का है वह उन्हें दें। तभी याजक और लेवीवंशी पूरे
समय अपने को यहोवा के नियम के अनुसार दे सकते
हैं। 5देश के चारों ओर के लोगों ने इस आदेश के बारे
में सुना। अत: इस्राएल के लोगों ने अपने अन्न, अंगूर,
तेल, शहद और जो कुछ भी वे अपने खेतों में उगाते थे
उन सभी फसलों का पहला भाग दिया। वे स्वेच्छा से इन
सभी चीजों का दसवाँ भाग लाए । 6इस्राएल और यहूदा
के लोग जो यहूदा के नगरों में रहते थे, अपने पशुओं
और भेड़ों का दसवाँ भाग भी लाए। वे उन चीज़ों का
दसवाँ भाग भी लाए जो उस विशेष स्थान में रखी जाती
थी जो केवल यहोवा के लिये था। वे उन सभी चीज़ों
को अपने यहोवा, परमेश्वर के लिये ले कर आए।
उन्होंने उन सभी चीज़ों को ढेरों में रखा।

7लोगों ने तीसरे महीने (मई/जून) में अपनी चीज़ों के
संग्रह को लाना आरम्भ किया और उन्होंने संग्रह का
लाना सातवें महीने (सित्मबर/अक्टूबर) में पूरा किया।
8जब हिजकिय्याह और प्रमुख आए तो उन्होंने संग्रह की
गई चीजों के ढेरों को देखा। उन्होंने यहोवा की स्तुति
की और इस्राएल के लोगों अर्थात् यहोवा के लोगों की
प्रशंसा की।

9तब हिजकिय्याह ने याजकों और लेवीवंशियों से ढेरों
के सम्बन्ध में पूछा। 10सादोक परिवार के मुख्य याजक
अजर्याह ने हिजकिय्याह से कहा, "क्योंकि लोगों ने भेंटों
को यहोवा के मन्दिर में लाना आरम्भ कर दिया है
अत: हम लोगों के पास खाने के लिये बहुत अधिक है।
हम लोगों ने पेट भर खाया और अभी तक हम लोगों
के पास बहुत बचा है! यहोवा ने अपने लोगों को सच में
आशीष दी है। इसलिये हम लोगों के पास यह सब बचा
है।"

11तब हिजकिय्याह ने याजकों को आदेश दिया कि वे
यहोवा के मन्दिर में भण्डार गृह तैयार रखें। अत: यह
किया गया। 12तब याजक भेंटे दशमांश और अन्य वस्तुएं
लाए जो केवल यहोवा को दी जानी थीं। वे सभी संग्रह
की गई चीजें मन्दिर के भण्डारगृहों में रख दी गई।
लेवीवंशी कोनन्याह सभी संग्रह की गई चीजों का अधीक्षक
था। शिमी उन चीज़ों का उपाधीक्षक था। शिमी कोनन्याह
का भाई था। 13कोनन्याह और उसका भाई इन व्यक्तियों
के निरीक्षक थे: अहीएल, अजज्याह, नहत, असाहेल,
यरीमेत, योजाबाद, एलीएल, यिस्मक्याह, महत और
बनायाह। राजा हिजकिय्याह और यहोवा के मन्दिर का
अधीक्षक अधिकारी अजर्याह ने उन व्यक्तियों को चुना।
14कोरे उन भेंटों का अधीक्षक था जिन्हें लोग स्वेच्छा
से यहोवा को चढ़ाते थे। वह उन संग्रहों को देने का
उत्तरदायी था जो यहोवा को चढ़ाये जाते थे और वह
उन उपहारों को वितरित करने का उत्तरदायी था जो
यहोवा के लिये पवित्र बनाई जाती थीं। कोरे पूर्वी द्वार
का द्वारपाल था। उसके पिता का नाम यिम्ना था जो
लेवीवंशी था। 15एदेन, मिन्यामीन, येशू, शमायाह, अमर्याह
और शकन्याह कोरे की सहायता करते थे। वे लोग
ईमानदारी से उन नगरों में सेवा करते थे जहाँ याजक
रहते थे। वे संग्रह की गई चीजों को हर एक याजकों के
समूह में उनके सम्बन्धियों को देते थे। वे वही चीजें,
अधिक या कम महत्व के हर व्यक्ति को देते थे। 16ये
लोग संग्रह की हुई चीज़ों को तीन वर्ष के लड़के और
उससे अधिक उम्र के उन लड़कों को भी देते थे
जिनका नाम लेवीवंश के इतिहास में होता था। इन सभी
पुरुषों को यहोवा के मन्दिर में अपनी नित्य सेवाओं को
करने के लिये जाना होता था जिनको करना उनका
उत्तरदायित्व था। लेवीवंशियों के हर एक समूह का
अपना उत्तरदायित्व था। 17याजकों को संग्रह का उनका
हिस्सा दिया जाता था। यह परिवार के क्रम से वैसे ही
किया जाता था जैसे वे अपने परिवार इतिहास में लिखे
रहते थे। बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के लेवीवंशियों
को संग्रह का उनका हिस्सा दिया जाता था। यह उनके
उत्तरदायित्व और वर्ग के अनुसार किया जाता था।
18लेवीवंशियों के बच्चे, पत्नियाँ, पुत्र तथा पुत्रियाँ भी
संग्रह का अपना हिस्सा पाते थे। यह उन सभी लेवीवंशियों
के लिये किया जाता था जो परिवार के इतिहास में
अंकित थे। यह इसलिये हुआ कि लेवीवंशी अपने को
पवित्र और सेवा के लिये तैयार रखने में दृढ़ विश्वास
रखते थे। 19याजक हारून के कुछ वंशजों के पास
कुछ कृषि योग्य खेत नगर के समीप वहाँ थे जहाँ
लेवीवंशी रहते थे और हारून के वंशजों में से कुछ
नगरों में भी रहते थे। उन नगरों में से हर एक में
हारून के इन वंशजों को संग्रह का हिस्सा देने के लिये
व्यक्ति नामांकन द्वारा चुने जाते थे। पुरुष तथा वे सभी
जिनका नाम लेवीवंश के इतिहास में था सभी संग्रह का
हिस्सा पाते थे।

20इस प्रकार राजा हिजकिय्याह ने पूरे यहूदा में वे
सब अच्छे कार्य किये। उसने वही किया जो यहोवा,
उसके परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा, ठीक और विश्वास
योग्य था। 21उसने जो भी कार्य परमेश्वर के मन्दिर की
सेवा में, नियमों व आज्ञाओं का पालन करने में और
अपने परमेश्वर का अनुसरण करने में किये उसमें
उसे सफलता मिली। हिजकिय्याह ने ये सभी कार्य अपने
पूरे हृदय से किया।

अराम का राजा हिजकिय्याह को परेशान करने का प्रयत्न करता है

32 हिजकिय्याह ने ये सब कार्य जो विश्वासपूर्वक
पूरे किये। अश्शूर का राजा सन्हेरीब यहूदा
देश पर आक्रमण करने आया। सन्हेरीब और उसकी
सेना ने किले के बाहर डेरा डाला। उसने यह इसलिये

किया कि वह नगरों को जीतने की योजना बना सके।
सन्हेरीब इन नगरों को अपने लिये जीतना चाहता था।
2हिजकिय्याह जानता था कि वह यरूशलेम, इस पर
आक्रमण करने आया है। 3तब हिजकिय्याह ने अपने
अधिकारियों और सेना के अधिकारियों से सलाह ली।
वे एकमत हो गए कि नगर के बाहर के सोतों का पानी
रोक दिया जाये। उन अधिकारियों और सेना के
अधिकारियों ने हिजकिय्याह की सहायता की। 4बहुत
से लोग एक साथ आए और उन्होंने सभी सोतों और
नालों को जो देश के बीच से होकर बहते थे, रोक
दिया। उन्होंने कहा, "अश्शूर के राजा को यहाँ आने
पर पर्याप्त पानी नहीं मिलेगा!" 5हिजकिय्याह ने यरूशलेम
को पहले से अधिक मजबूत बनाया। यह उसने इस
प्रकार किया: उसने दीवार के टूटे भागों को फिर
बनवाया। उसने दीवारों पर मीनारें बनाई। उसने पहली
दीवार के बाहर दूसरी दीवार बनाई। उसने फिर पुराने
यरूशलेम के पूर्व की ओर के स्थानों को मजबूत
किया। उसने अनेकों हथियार और ढालें बनवाई।
6-7हिजकिय्याह ने युद्ध के अधिकारियों को लोगों का
अधीक्षक होने के लिये चुना। वह इन अधिकारियों से
नगर द्वार के बाहर खुले स्थान में मिला। हिजकिय्याह
ने उन अधिकारियों से सलाह की और उन्हें उत्साहित
किया। उसने कहा, "दृढ़ और साहसी बनो। अश्शूर के
राजा या उसके साथ की विशाल सेना से मत डरना, न
ही उससे परेशान होना। अश्शूर के राजा के पास जो
शक्ति है उससे भी बड़ी शक्ति हम लोगों के साथ है!
8अश्शूर के राजा के पास केवल व्यक्ति हैं। किन्तु हम
लोगों के साथ यहोवा, अपना परमेश्वर है। हमारा
परमेश्वर हमारी सहायता करेगा। वह हमारा युद्ध स्वयं
लड़ेगा।" इस प्रकार यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने
लोगों को उत्साहित किया और उन्हें पहले से अधिक
शक्तिशाली होने का अनुभव कराया।

9अश्शूर के राजा सन्हेरीब और उसकी सारी सेना
लाकीश नगर के पास डेरा डाले पड़ी थी। ताकि वे इसे
हरा सकें तब अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यरूशलेम में
यहूदा के राजा हिजकिय्याह के पास और यहूदा के
सभी लोगों के पास अपने सेवक भेजे। सन्हेरीब के
सेवक हिजकिय्याह और यरूशलेम के सभी लोगों के
लिये एक सन्देश ले गए। 10उन्होंने कहा, "अश्शूर का
राजा सन्हेरीब यह कहता है: 'तुम किसमें विश्वास करते
हो जो तुम्हें यरूशलेम में युद्ध की स्थिति में ठहरना
सिखाता है? 11हिजकिय्याह तुम्हें मूर्ख बना रहा है। तुम्हें
यरूशलेम में ठहरे रखने के लिये धोखा दिया जा रहा
है। इस प्रकार तुम भूख–प्यास से मर जाओगे। हिजकिय्याह
तुमसे कहता है, "यहोवा, हमारा परमेश्वर हमें अश्शूर
के राजा से बचायेगा।" 12हिजकिय्याह ने स्वयं यहोवा
के उच्चस्थानों और वेदियों को हटाया है। उसने यहूदा
और इस्राएल के तुम लोगों से कहा कि तुम लोगों को
केवल एक वेदी पर उपासना करनी और सुगन्धि चढ़ानी
चाहिए। 13निश्चय ही, तुम जानते हो कि मेरे पूर्वजों
और मैंने अन्य देशों के लोगों के साथ क्या किया है?
अन्य देशों के देवता अपने लोगों को नहीं बचा सके। वे
देवता मुझे उनके लोगों को नष्ट करने से न रोक
सके। 14मेरे पूर्वजों ने उन देशों को नष्ट किया। कोई
भी ऐसा देवता नहीं जो मुझसे अपने लोगों को नष्ट होने
से बचा ले। फिर भी तुम सोचते हो कि तुम्हारा देवता
तुम्हें मुझसे बचा लेगा? 15हिजकिय्याह को तुम्हें मूर्ख
बनाने और धोखा देने मत दो। उस पर विश्वास न करो
क्योंकि किसी राष्ट्र या राज्य का कोई देवता कभी
हमसे या हमारे पूर्वजों से अपने लोगों को बचाने में
समर्थ नहीं हुआ है। इसलिये यह मत सोचो कि तुम्हारा
देवता मुझे तुमको नष्ट करने से रोक लेगा।'"

16अश्शूर के राजा के सेवकों ने इससे भी बुरी बातें
यहोवा परमेश्वर तथा परमेश्वर के सेवक हिजकिय्याह
के विरुद्ध कहीं। 17अश्शूर के राजा ने ऐसे पत्र भी
लिखे जो इस्राएल के यहोवा परमेश्वर का अपमान
करते थे। अश्शूर के राजा ने उन पत्रों में जो कुछ
लिखा था वह यह है: "अन्य राज्यों के देवता मुझसे नष्ट
होने से अपने लोगों को न बचा सके। उसी प्रकार
हिजकिय्याह का परमेश्वर अपने लोगों को मेरे द्वारा
नष्ट किये जाने से नहीं रोक सकता।" 18तब अश्शूर
के राजा के सेवक यरूशलेम के उन लोगों पर जोर से
चिल्लाये जो नगर की दीवार पर थे। उन सेवकों ने उस
समय हिब्रू भाषा का प्रयोग किया जब वे दीवार पर के
लोगों के प्रति चिल्लाये। अश्शूर के राजा के उन सेवकों
ने यह सब इसलिये किया कि यरूशलेम के लोग डर
जायें। उन्होंने वे बातें इसलिये कहीं कि यरूशलेम नगर
पर अधिकार कर सकें।

19उन सेवकों ने उन देवताओं के विरुद्ध बुरी बातें
कहीं जिनकी पूजा संसार के लोग करते थे। वे देवता
सिर्फ ऐसी चीजें हैं जिन्हें मनुष्यों ने अपने हाथ से बनाया
है। इस प्रकार उन सेवकों ने वे ही बुरी बातें यरूशलेम
के परमेश्वर के विरुद्ध कहीं।

20राजा हिजकिय्याह और आमोस के पुत्र यशायाह
नबी ने इस समस्या के बारे में प्रार्थना की। उन्होंने जोर
से स्वर्ग को पुकारा। 21तब यहोवा ने अश्शूर के राजा
के खेमे में एक स्वर्गदूत को भेजा। उस स्वर्गदूत ने
अश्शूर की सेना के सब अधिकारियों, प्रमुखों और
सैनिकों को मार डाला। इसलिये अश्शूर का राजा अपने
देश में अपने घर लौट गया और उसके लोग उसकी
वजह से बहुत लज्जित हुए। वह अपने देवता के मन्दिर
में गया और उसी के पुत्रों में से किसी ने उसे वहीं
तलवार से मार डाला। 22इस प्रकार यहोवा ने हिजकिय्याह
और यरूशलेम के लोगों को अश्शूर के राजा सन्हेरीब

और सभी अन्य लोगों से बचाया। यहोवा ने हिजकिय्याह
और यरूशलेम के लोगों की देखभाल की। 23बहुत से
लोग यरूशलेम में यहोवा के लिये भेंट लाए। वे यहूदा के
राजा हिजकिय्याह के पास बहुमूल्य चीजें ले आए। उस
समय के बाद सभी राष्ट्रों ने हिजकिय्याह को सम्मान
दिया।

24उन दिनों हिजकिय्याह बहुत बीमार पड़ा और मृत्यु
के निकट था। उसने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा
हिजकिय्याह से बोला और उसे एक चिन्ह दिया।*
25किन्तु हिजकिय्याह का हृदय घमण्ड से भर गया
इसलिये उसने परमेश्वर की कृपा के लिये परमेश्वर
को धन्यवाद नहीं किया। यही कारण था कि परमेश्वर
हिजकिय्याह और यरूशलेम तथा यहूदा के लोगों पर
क्रोधित हुआ। 26किन्तु हिजकिय्याह और यरूशलेम में
रहने वाले लोगों ने अपने हृदय तथा जीवन को बदल
दिया। वे विनम्र हो गये और घमण्ड करना छोड़ दिया।
इसलिये जब तक हिजकिय्याह जीवित रहा यहोवा का
क्रोध उस पर नहीं उतरा।

27हिजकिय्याह को बहुत धन और सम्मान प्राप्त था।
उसने चाँदी, सोने, कीमती रत्न, मसालें, ढालें और सभी
प्रकार की चीज़ों के रखने के लिये स्थान बनाए।
28हिजकिय्याह के पास लोगों द्वारा भेजे गये अन्न, नया
दाखमधु और तेल के लिये भंडारण भवन थे। उसके
पास पशुओं के लिये पशुशालायें और भेड़ों के लिये
भेड़शालायें थीं। 29हिजकिय्याह ने बहुत से नगर भी
बनाये और उसे अनेक पशुओं के झुंड और भेड़ों के
रेवड़ें मिलीं। परमेश्वर ने हिजकिय्याह को बहुत अधिक
धन दिया। 30यह हिजकिय्याह ही था जिसने यरूशलेम
में गिहोन सोते की ऊपरी जल धाराओं के उदगमों को
रोका और उन जल धाराओं को दाऊद नगर के ठीक
पश्चिम को बहाया और हिजकिय्याह उन सबमें सफल
रहा जो कुछ उसने किया।

31किसी समय बाबुल के प्रमुखों ने हिजकिय्याह के
पास दूत भेजे। उन दूतों ने एक विचित्र दृश्य के विषय में
पूछा जो राष्ट्रों में प्रकट हुआ था। जब वे आए तो
परमेश्वर ने हिजकिय्याह को अकेले छोड़ दिया जिससे
कि वह अपनी जाँच कर सके और वह सब कुछ जान
सके जो हिजकिय्याह के हृदय में था।*

32हिजकिय्याह का शेष इतिहास और कैसे उसने
यहोवा को प्रेम किया, का विवरण आमोस के पुत्र
यशायाह नबी के दर्शन ग्रन्थ और "यहूदा और इस्राएल
के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में मिलता है।
33हिजकिय्याह मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया
गया। लोगों ने हिजकिय्याह को उस पहाड़ी पर दफनाया
जहाँ दाऊद के पुत्रों की कब्रें हैं। जब वह मरा तो यहूदा
के सभी लोगों ने तथा यरूशलेम के रहने वालों ने
हिजकिय्याह को सम्मान दिया। हिजकिय्याह के स्थान
पर मनश्शे नया राजा हुआ। मनश्शे हिजकिय्याह का
पुत्र था।

यहूदा का राजा मनश्शे

33 मनश्शे जब यहूदा का राजा हुआ वह बारह
वर्ष का था। वह यरूशलेम में पचपन वर्ष तक
राजा रहा। 2मनश्शे ने वे सब कार्य किये जिन्हें यहोवा
ने गलत कहा था। उसने अन्य राष्ट्रों के भयंकर और
पापपूर्ण तरीकों का अनुसरण किया। यहोवा ने उन
राष्ट्रों को इस्राएल के लोगों के सामने बाहर निकल
जाने के लिये विवश किया था। 3मनश्शे ने फिर उन
उच्च स्थानों को बनाया जिन्हें उसके पिता हिजकिय्याह
ने तोड़ गिराया था। मनश्शे ने बाल देवताओं की वेदियाँ
बनाई और अशेरा-स्तम्भ खड़े किये। वह नक्षत्र-समूह
को प्रणाम करता था तथा उन्हें पूजता था। 4मनश्शे ने
यहोवा के मन्दिर में असत्य देवताओं के लिये वेदियाँ
बनाई। यहोवा ने मन्दिर के बारे में कहा था, "मेरा नाम
यरूशलेम में सदैव रहेगा।" 5मनश्शे ने सभी नक्षत्र-समूहों
के लिये यहोवा के मन्दिर के दोनों आँगनों में वेदियाँ
बनाई। 6मनश्शे ने अपने बच्चों को भी बलि के लिये
हिन्नोम की घाटी में जलाया। मनश्शे ने शान्तिपाठ,
दैवीकरण और भविष्य कथन के रूप में जादू का
उपयोग किया। उसने ओझाओं और भूत सिद्धि करने
वालों के साथ बातें कीं। मनश्शे ने यहोवा की दृष्टि में
बहुत पाप किया। मनश्शे के पापों ने यहोवा को क्रोधित
किया। 7उसने एक देवता की मूर्ति बनाई और उसे
परमेश्वर के मन्दिर में रखा। परमेश्वर ने दाऊद और
उसके पुत्र सुलैमान से मन्दिर के बारे में कहा था, "मैं
इस भवन तथा यरूशलेम में अपना नाम सदा के लिये
अंकित करता हूँ। मैंने यरूशलेम को इस्राएल के सभी
परिवार समूहों में से चुना। 8मैं फिर इस्राएलियों को उस
भूमि से बाहर नहीं करूँगा जिसे मैंने उनके पूर्वजों को
देने के लिये चुना। किन्तु उन्हें उन नियमों का पालन
करना चाहिए जिनका आदेश मैंने दिया है। इस्राएल के
लोगों को उन सभी विधियों, नियमों और आदेशों का
पालन करना चाहिए जिन्हें मैंने मूसा को उन्हें देने के
लिये दिया।"

9मनश्शे ने यहूदा के लोगों और यरूशलेम में रहने
वाले लोगों को पाप करने के लिये उत्साहित किया।
उसने उन राष्ट्रों से भी बड़ा पाप किया जिन्हें यहोवा ने
नष्ट किया था और जो इस्राएलियों से पहले उस प्रदेश में
थे!

यहोवा ... चिन्ह दिया देखें यशा. 38:1-8 हिजकिय्याह के विषय की कहानी और कैसे यहोवा ने हिजकिय्याह को पन्द्रह वर्ष और जीवित रहने दिया।

हिजकिय्याह के हृदय में देखें 2राजा 20:12-19

10यहोवा ने मनश्शे और उसके लोगों से बातचीत
की। किन्तु उन्होंने सुनने से इन्कार कर दिया। 11इसलिये
यहोवा ने यहूदा पर आक्रमण करने के लिये अश्शूर
के राजा के सेनापतियों को वहाँ पहुँचाया। इन सेनापतियों
ने मनश्शे को पकड़ लिया और उसे बन्दी बना लिया।
उन्होंने उसको बेड़ियाँ पहना दीं और उसके हाथों में
पीतल की जंजीरें डालीं। उन्होंने मनश्शे को बन्दी बनाया
और उसे बाबुल देश ले गए।

12मनश्शे को कष्ट हुआ। उस समय उसने यहोवा
अपने परमेश्वर से याचना की। मनश्शे ने स्वयं को
अपने पूर्वजों के परमेश्वर के सामने विनम्र बनाया।
13मनश्शे ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर से
सहायता की याचना की। यहोवा ने मनश्शे की याचना
सुनी और उसे उस पर दया आई। यहोवा ने उसे यरूशलेम
अपने सिंहासन पर लौटने दिया। तब मनश्शे ने समझा
कि यहोवा सच्चा परमेश्वर है।

14जब यह सब हुआ तो मनश्शे ने दाऊद नगर के
लिये बाहरी दीवार बनाई। बाहरी दीवार गिहोन सोते के
पश्चिम की ओर घाटी (किद्रोन) में मछली द्वार के साथ
थी। मनश्शे ने इस दीवार को ओपेल पहाड़ी के चारों
ओर बना दिया। उसने दीवार को बहुत ऊँचा बनाया।
तब उसने अधिकारियों को यहूदा के सभी किलों में
रखा। 15मनश्शे ने विचित्र देवमूर्तियों को हटाया। उसने
यहोवा के मन्दिर से देवमूर्ति को बाहर किया। उसने
उन सभी वेदियों को हटाया जिन्हें उसने मन्दिर की
पहाड़ी पर और यरूशलेम में बनाया था। मनश्शे ने उन
सभी वेदियों को यरूशलेम नगर से बाहर फेंका। 16तब
उसने यहोवा की वेदी स्थापित की और मेलबलि तथा
धन्यवाद भेंट इस पर चढ़ाई। मनश्शे ने यहूदा के सभी
लोगों को इस्राएल के यहोवा परमेश्वर की सेवा करने
का आदेश दिया। 17लोगों ने उच्च स्थानों पर बलि देना
जारी रखा, किन्तु उनकी भेंटे केवल यहोवा उनके
परमेश्वर के लिये थीं।

18मनश्शे ने जो कुछ अन्य किया और उसकी परमेश्वर
से प्रार्थनाएं और उन दृष्टाओं के कथन जिन्होंने इस्राएल
के यहोवा परमेश्वर के नाम पर उससे बातें की थी, वे
सभी इस्राएल के राजा नामक पुस्तक में लिखी हैं।
19मनश्शे ने कैसे प्रार्थना की और परमेश्वर ने वह
कैसे सुनी और उस पर दया की, यह "दृष्टाओं की
पुस्तक" में लिखा है। मनश्शे के सभी पाप और बुराईयाँ
जो उसने स्वयं को विनम्र करने से पूर्व कीं और वे
स्थान जहाँ उसने उच्च स्थान बनाए और अशेरा–स्तम्भ
खड़े किये, "दृष्टाओं की पुस्तक" में लिखे हैं। 20अन्त
में मनश्शे मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफना दिया
गया। लोगों ने मनश्शे को उसके अपने राजभवन में
दफनाया। मनश्शे के स्थान पर आमोन नया राजा
हुआ। आमोन मनश्शे का पुत्र था।

यहूदा का राजा आमोन

21आमोन जब यहूदा का राजा हुआ, बाईस वर्ष का
था। वह दो वर्ष तक यरूशलेम का राजा रहा। 22आमोन
ने यहोवा के सामने बुरे काम किये। यहोवा उससे जो
कराना चाहता था उन्हें उसने ठीक अपने पिता मनश्शे
की तरह नहीं किया। आमोन ने सभी खुदी हुई मूर्तियों
तथा अपने पिता मनश्शे की बनाई मूर्तियों को बलि
चढ़ाई। आमोन ने उन मूर्तियों की पूजा की। 23आमोन
ने स्वयं को अपने पिता मनश्शे की तरह यहोवा के
सामने विनम्र नहीं बनाया। किन्तु आमोन अधिक से
अधिक पाप करता गया। 24आमोन के सेवकों ने उसके
विरुद्ध योजना बनाई। उन्होंने आमोन को उसके घर में
मार डाला। 25किन्तु यहूदा के लोगों ने उन सभी सेवकों
को मार डाला जिन्होंने राजा आमोन के विरुद्ध योजना
बनाई थी। तब लोगों ने योशिय्याह को नया राजा चुना।
योशिय्याह आमोन का पुत्र था।

यहूदा का राजा योशिय्याह

34 योशिय्याह जब राजा बना, आठ वर्ष का था।
वह यरूशलेम में इकतीस वर्ष तक राजा रहा।
2योशिय्याह ने वही किया जो उचित था। उसने वही
किया जो यहोवा उससे करावाना चाहता था। उसने
अपने पूर्वज दाऊद की तरह अच्छे काम किये। योशिय्याह
उचित काम करने से नहीं हटा। 3जब योशिय्याह आठ
वर्ष तक राजा रह चुका तो वह अपने पूर्वज दाऊद के
अनुसार परमेश्वर का अनुसरण करने लगा। योशिय्याह
बच्चा ही था जब उसने परमेश्वर की आज्ञा माननी
आरम्भ की। जब योशिय्याह राजा के रूप में बारह वर्ष
का हुआ, उसने उच्च स्थानों, अशेरा–स्तम्भों पर खुदी
मूर्तियों और यहूदा और यरूशलेम में ढली मूर्तियों को
नष्ट करना आरम्भ कर दिया। 4लोगों ने बाल देवताओं
की वेदियाँ तोड़ दीं। उन्होंने यह योशिय्याह के सामने
किया। तब योशिय्याह ने सुगन्धि के लिये बनी उन
वेदियों को नष्ट कर डाला जो लोगों से भी बहुत ऊँची
उठी थीं। उसने खुदी मूर्तियों तथा ढली मूर्तियों को तोड़
डाला। उसने उन मूर्तियों को पीटकर चूर्ण बना दिया।
तब योशिय्याह ने उस चूर्ण को उन लोगों की कब्रों पर
डाला जो बाल देवताओं को बलि चढ़ाते थे। 5योशिय्याह
ने उन याजकों की हड्डियों तक को जलाया जिन्होंने
अपनी वेदियों पर बाल–देवताओं की सेवा की थी। इस
प्रकार योशिय्याह ने मूर्तियों और मूर्ति पूजा को यहूदा
और यरूशलेम से नष्ट किया। 6योशिय्याह ने यही काम
मनश्शे, एप्रैम, शिमोन और नप्ताली तक के राज्यों के
नगरों में किया। उसने वही उन सब नगरों के पास के
खंडहरों के साथ किया। 7योशिय्याह ने वेदियों और
अशेरा–स्तम्भों को तोड़ दिया। उसने मूर्तियों को पीटकर
चूर्ण बना दिया। उसने पूरे इस्राएल देश में उन सुगन्धि–

वेदियों को काट डाला जो बाल की पूजा में काम आती
थीं। तब योशिय्याह यरूशलेम लौट गया।

8जब योशिय्याह यहूदा के राजा के रूप में अपने
अट्ठारहवें वर्ष में था, उसने शापान, मासेयाह और
योआह को अपने यहोवा परमेश्वर के मन्दिर की
मरम्मत करने के लिये भेजा। शापान के पिता का नाम
असल्याह था। मासेयाह नगर प्रमुख था और योआह के
पिता का नाम योआहाज था। योआह वह व्यक्ति था
जिसने जो कुछ हुआ उसे लिखा। (वह लेखक था)।
योशिय्याह ने मन्दिर को स्थापित करने का आदेश
दिया जिससे वह यहूदा और मन्दिर दोनों को स्वच्छ
रख सके। 9वे लोग महा याजक हिल्किय्याह के पास
आए। उन्होंने वह धन उसे दिया जो लोगों ने परमेश्वर
के मन्दिर के लिये दिया था। लेवीवंशी द्वारपालों ने यह
धन मनश्शे, एप्रैम और बचे सभी इस्राएलियों से इकट्ठा
किया। उन्होंने यह धन सारे यहूदा, बिन्यामीन और
यरूशलेम में रहने वाले सभी लोगों से भी इकट्ठा
किया। 10तब लेवीवंशियों ने उन व्यक्तियों को यह धन
दिया जो यहोवा के मन्दिर के काम की देख-रेख कर
रहे थे और निरीक्षकों ने उन मज़दूरों को यह धन दिया
जो यहोवा के मन्दिर को फिर बना कर स्थापित कर
रहे थे। 11उन्होंने बढ़ईयों और राजगीरों को पहले से
कटी बड़ी चट्टानों को खरीदने के लिये और लकड़ी
खरीदने के लिये धन दिया। लकड़ी का उपयोग भवनों
को फिर से बनाने और भवन के शहतीरों के लिये
किया गया। भूतकाल में यहूदा के राजा मन्दिरों की
देखभाल नहीं करते थे। वे भवन पुराने और खंडहर हो
गए थे। 12-13लोगों ने विश्वासपूर्वक काम किया। उनके
निरीक्षक यहत और ओबद्याह थे। यहत और ओबद्याह
लेवीवंशी थे और वे मरारी के वंशज थे। अन्य निरीक्षक
जकर्याह और मशुल्लाम थे। वे कहात के वंशज थे। जो
लेवीवंशी संगीत-वाद्य बजाने में कुशल थे, वे भी चीजों
को ढोने वाले तथा अन्य मज़दूरों का निरीक्षण करते
थे। कुछ लेवीवंशी सचिव, अधिकारी और द्वारपाल का
काम करते थे।

व्यवस्था की पुस्तक मिली

14लेवीवंशियों ने उस धन को निकाला जो यहोवा के
मन्दिर में था। उस समय याजक हिल्किय्याह ने यहोवा
के व्यवस्था की वह पुस्तक प्राप्त की जो मूसा द्वारा दी
गई थी। 15हिल्किय्याह ने सचिव शापान से कहा, "मैंने
यहोवा के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है!"
हिल्किय्याह ने शापान को पुस्तक दी। 16शापान उस
पुस्तक को राजा योशिय्याह के पास लाया। शापान ने
राजा को सूचना दी, "तुम्हारे सेवक हर काम कर रहे
हैं जो तुमने करने को कहा है। 17उन्होंने यहोवा के
मन्दिर से धन को निकाला और उसे निरीक्षकों एवं
मज़दूरों को दे रहे हैं।" 18तब शापान ने राजा योशिय्याह
से कहा, "याजक हिल्किय्याह ने मुझे एक पुस्तक दी
है।" तब शापान ने पुस्तक से पढ़ा। जब वह पढ़ रहा था,
तब वह राजा के सामने था। 19जब राजा योशिय्याह ने
नियमों को पढ़े जाते हुए सुना, उसने अपने वस्त्र फाड़
लिये। 20तब राजा ने हिल्किय्याह शापान के पुत्र अहीकाम,
मीका के पुत्र अब्दोन, सचिव शापान और सेवक असायाह
को आदेश दिया। 21राजा ने कहा, "जाओ, मेरे लिये
तथा इस्राएल और यहूदा में जो लोग बचे हैं उनके लिये
यहोवा से याचना करो। जो पुस्तक मिली है उसके
कथनों के बारे में पूछो। यहोवा हम लोगों पर बहुत
क्रोधित है क्योंकि हमारे पूर्वजों ने यहोवा के कथनों
का पालन नहीं किया। उन्होंने वे सब काम नहीं किये
जो यह पुस्तक करने को कहती है!"

22हिल्किय्याह और राजा के सेवक नबिया हुल्दा के
पास गए, हुल्दा शल्लूम की पत्नी थी। शल्लूम तोखत
का पुत्र था। तोखत हस्रा का पुत्र था। हस्रा राजा के
वस्त्रों की देखरेख करता था। हुल्दा यरूशलेम के नये
भाग में रहती थी। हिल्किय्याह और राजा के सेवकों ने
हुल्दा को सब कुछ बताया जो हो चुका था। 23हुल्दा ने
उनसे कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जो कहता है
वह यह है: राजा योशिय्याह से कहो: 24यहोवा जो कहता
है वह यह है, 'मैं इस स्थान और यहाँ के निवासियों पर
विपत्ति डालूँगा। मैं सभी भंयकर विपत्तियों को जो यहूदा
के राजा के सामने पढ़ी पुस्तक में लिखी गई हैं, लाऊँगा।
25मैं यह इसलिये करूँगा कि लोगों ने मुझे छोड़ा और
अन्य देवताओं के लिये सुगन्धि जलाई। उन लोगों ने
मुझे क्रोधित किया क्योंकि उन्होंने सभी बुरी बातें की
हैं। इसलिये मैं अपना क्रोध इस स्थान पर उतारुँगा। मेरा
क्रोध तप्त अग्निज्वाला की तरह बुझाया नहीं जा सकता!'
26"किन्तु यहूदा के राजा योशिय्याह से कहो। उसने
यहोवा से पूछने के लिये तुम्हें भेजा। इस्राएल का यहोवा
परमेश्वर, 'जिन कथनों को तुमने कुछ समय पहले
सुना है, उनके विषय में कहता है: 27योशिय्याह तुमने
पश्चाताप किया और तुमने अपने को विनम्र किया
और अपने वस्त्रों को फाड़ा, तथा तुम मेरे सामने चिल्लाए।
अत: क्योंकि तुम्हारा हृदय कोमल है। 28मैं तुम्हें तुम्हारे
पूर्वजों के पास ले जाऊँगा। तुम अपनी कब्र में शान्तिपूर्वक
जाओगे। तुम्हें उन विपत्तियों में से कोई भी नहीं देखनी
पड़ेंगी जिन्हें मैं इस स्थान और यहाँ रहने वाले लोगों पर
लाऊँगा।'" हिल्किय्याह और राजा के सेवक योशिय्याह
के पास यह सन्देश लेकर लौटे। 29राजा योशिय्याह ने
यहूदा और यरूशलेम के सभी अग्रजों को अपने पास
आने और मिलने के लिये बुलाया। 30राजा, यहोवा के
मन्दिर में गया। यहूदा के सभी लोग, यरूशलेम में रहने
वाले लोग, याजक, लेवीवंशी और सभी साधारण व
असाधारण लोग योशिय्याह के साथ थे। योशिय्याह ने

उन सबके सामने साक्षी की पुस्तक के कथन पढ़े। वह
पुस्तक यहोवा के मन्दिर में मिली थी। 31तब राजा
अपने स्थान पर खड़ा हुआ। उसने यहोवा के साथ
वाचा की। उसने यहोवा का अनुसरण करने की और
यहोवा के आदेशों, विधियों और नियमों का पालन
करने की वाचा की। योशिय्याह पूरे हृदय और आत्मा
से आज्ञा पालन करने को सहमत हुआ। वह पुस्तक में
लिखे वाचा के कथनों का पालन करने को सहमत
हुआ। 32तब योशिय्याह ने यरूशलेम और बिन्यामीन के
सभी लोगों से वाचा को स्वीकार करने की प्रतिज्ञा
कराई। यरूशलेम में लोगों ने परमेश्वर की वाचा का
पालन किया, उस परमेश्वर की वाचा का जिसकी
आज्ञा का पालन उनके पूर्वजों ने किया था। 33योशिय्याह
ने उन सभी स्थानों से मूर्तियों को फेंक दिया जो स्थान
इस्राएल के लोगों के थे। यहोवा उन मूर्तियों से घृणा
करता है। योशिय्याह ने इस्राएल के हर एक व्यक्ति को
अपने यहोवा परमेश्वर की सेवा में पहुँचाया। जब तक
योशिय्याह जीवित रहा, लोगों ने पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर
की आज्ञा का पालन करना बन्द नहीं किया।

योशिय्याह फसह पर्व मनाता है

35 यरूशलेम में राजा योशिय्याह ने यहोवा के
लिये फसह पर्व मनाया। पहले महीने के चौदहवें
दिन फसह पर्व का मेमना मारा गया। 2योशिय्याह ने
अपना अपना कार्य पूरा करने के लिये याजकों को
चुना। उसने याजकों को उत्साहित किया, जब वे यहोवा
के मन्दिर में सेवा कर रहे थे। 3योशिय्याह ने उन
लेवीवंशियों से बातें की जो इस्राएल के लोगों को उपदेश
देते थे तथा जो यहोवा की सेवा के लिये पवित्र बनाए गए
थे। उसने उन लेवीवंशियों से कहा: "पवित्र सन्दूक को
उस मन्दिर में रखो जिसे सुलैमान ने बनाया। सुलैमान
दाऊद का पुत्र था। दाऊद इस्राएल का राजा था। पवित्र
सन्दूक को अपने कंधों पर फिर एक स्थान से दूसरे
स्थान पर मत ले जाओ। अब अपने यहोवा परमेश्वर
की सेवा करो। परमेश्वर के लोगों अर्थात् इस्राएल के
लोगों की सेवा करो। 4अपने को, अपने परिवार समूहों
के क्रम में, मन्दिर की सेवा के लिये तैयार करो। उन
कार्यों को करो जिन्हें राजा दाऊद और उसके पुत्र राजा
सुलैमान ने तुम्हें करने के लिये दिया था। 5पवित्र स्थान
में लेवीवंशियों के समूह के साथ खड़े हो। लोगों के हर
एक भिन्न परिवार समूह के साथ ऐसा ही करो, इस
प्रकार तुम उनकी सहायता कर सकते हो। 6फसह पर्व
के मेमनों को मारो और यहोवा के प्रति अपने को
पवित्र करो। मेमनों को अपने भाई इस्राएलियों के लिये
तैयार करो। सब कुछ वैसे ही करो जैसा करने का
आदेश यहोवा ने दिया है। यहोवा ने उन सभी आदेशों
को हमें मूसा द्वारा दिया था।"

7योशिय्याह ने इस्राएल के लोगों को तीस हजार
भेड़–बकरियाँ फसह पर्व की बलि के लिये दीं। उसने
लोगों को तीन हजार पशु भी दिये। ये सभी जानवर
राजा योशिय्याह के अपने जानवरों में से थे। 8योशिय्याह
के अधिकारियों ने भी, स्वेच्छा से लोगों को याजकों
और लेवीवंशियों को फसह पर्व में उपयोग करने के
लिये जानवर और चीजें दीं। प्रमुख याजक हिल्किय्याह,
जकर्याह और यहीएल मन्दिर के उत्तरदायी अधिकारी
थे। उन्होंने याजकों को दो हजार छ: सौ मेमने और
बकरे और तीन सौ बैल फसह पर्व बलि के लिये दिये।
9कोनन्याह ने भी शमायाह, नतनेल, तथा उसके भाईयों
के साथ और हसब्याह, यीएल तथा योजाबाद ने पाँच सौ
भेड़ें–बकरियाँ, पाँच सौ बैल फसह पर्व बलि के लिये
लेवीवंशियों को दिये। वे लोग लेवीवंशियों के प्रमुख थे।

10जब हर एक चीज फसह पर्व की सेवा आरम्भ
करने के लिये तैयार हो गई, तो याजक और लेवीवंशी
स्थानों पर गए। यह वही हुआ जो राजा का आदेश था।
11फसह पर्व के मेमने मारे गए। तब लेवीवंशियों ने
जानवरों के चमड़े उतारे और याजकों को खून दिया।
याजकों ने खून को वेदी पर छिड़का। 12तब उन्होंने
जानवरों को विभिन्न परिवार समूहों की होमबलि में
उपयोग के लिये दिया। यह इसलिये किया गया कि
होमबलि उस प्रकार दी जा सके जिस प्रकार मूसा के
नियमों ने सिखाया था। 13लेवीवंशियों ने फसह पर्व
फसह पर्व की बलियों को आग पर इस प्रकार भूना
जैसा उन्हें आदेश दिया गया था और उन्होंने पवित्र भेंटों
को हंडिया, देग और कढ़ाहियों में पकाया। तब उन्होंने
लोगों को शीघ्रता से माँस दिया। 14जब यह पूरा हुआ तब
लेवीवंशियों को अपने लिये और उन याजकों के लिये
माँस मिला जो हारून के वंशज थे। उन याजकों को
काम करते हुए अंधेरा होने तक काम में बहुत अधिक
लगाए रखा गया। उन्होंने होमबलि और बलिदानों की
चर्बी को जलाते हुए कड़ा परिश्रम किया। 15आसाप के
परिवार के लेवीवंशी गायक उन स्थानों पर पहुँचे जिन्हें
राजा दाऊद ने उनके खड़े होने के लिये चुना था। वे:
आसाप , हेमान और राजा का नबी यदूतून थे। हर एक
द्वार पर द्वारपाल अपना स्थान नहीं छोड़ सकते थे
क्योंकि उनके लेवीवंशी भाईयों ने हर एक चीज
उनके फसह पर्व के लिये तैयार कर दी थी।

16इस प्रकार उस दिन सब कुछ यहोवा की उपासना
के लिये वैसे ही किया गया था जैसा राजा योशिय्याह ने
आदेश दिया। फसह पर्व का त्यौहार मनाया गया और
होमबलि यहोवा की वेदी पर चढ़ाई गई। 17इस्राएल के
जो लोग वहाँ थे उन्होंने फसह पर्व मनाया और अखमीरी
रोटी का पर्व सात दिन तक मनाया। 18शमूएल नबी
जब जीवित था तब से फसह पर्व इस प्रकार नहीं मनाया
गया था। इस्राएल के किसी राजा ने कभी इस प्रकार

फसह पर्व नहीं मनाया था। राजा योशिय्याह, याजक,
लेवीवंशी और इस्राएल और यहूदा के लोगों ने, यरूशलेम
में सभी लोगों के साथ, फसह पर्व को बहुत ही विशेष
रुप में मनाया। **19**यह फसह पर्व योशिय्याह के राज्यकाल
के अट्ठारहवें वर्ष मनाया गया।

योशिय्याह की मृत्यु

20योशिय्याह जब मन्दिर के लिये उन अच्छे कामों
को कर चुका, उस समय राजा नको परात नदी पर
स्थित कर्कमीश नगर के विरुद्ध युद्ध करने के लिये
सेना लेकर आया। नको मिस्र का राजा था। राजा
योशिय्याह नको के विरुद्ध लड़ने बाहर निकला। **21**किन्तु
नको ने योशिय्याह के पास दूत भेजे। उन्होंने कहा,
"राजा योशिय्याह, यह युद्ध तुम्हारे लिये समस्या नहीं है।
मैं तुम्हारे विरुद्ध लड़ने नहीं आया हूँ। मैं अपने शत्रुओं
से लड़ने आया हूँ। परमेश्वर ने मुझे शीघ्रता करने को
कहा है। परमेश्वर मेरी ओर है अत: मुझे परेशान न
करो। यदि तुम हमारे विरुद्ध लड़ोगे, परमेश्वर तुम्हें
नष्ट कर देगा!" **22**किन्तु योशिय्याह हटा नहीं। उसने
नको से युद्ध करने का निश्चय किया, इसलिये उसने
अपना वेश बदला और युद्ध करने गया। योशिय्याह ने
उसे सुनने से इन्कार कर दिया जो नको ने परमेश्वर
के आदेश के बारे में कहा। योशिय्याह मगिद्दो के मैदान
में युद्ध करने गया। **23**जिस समय योशिय्याह युद्ध में था,
वह बाणों से बेध दिया गया। उसने अपने सेवकों से
कहा, "मुझे निकाल ले चलो। मैं बुरी तरह घायल हूँ!"

24अत: सेवकों ने योशिय्याह को रथ से बाहर निकाला,
और उसे दूसरे रथ में बैठाया जिसे वह अपने साथ युद्ध
में लाया था। तब वे योशिय्याह को यरूशलेम ले गए।
राजा योशिय्याह यरूशलेम में मरा। योशिय्याह को वहाँ
दफनाया गया जहाँ उसके पूर्वज दफनाये गए थे। यहूदा
और यरूशलेम के सभी लोग योशिय्याह के मरने पर
बहुत दु:खी थे। **25**यिर्मयाह ने योशिय्याह के लिये कुछ
बहुत अधिक करुण गीत* लिखे। आज भी सभी
स्त्री–पुरुष गायक उन "करुण गीतों" को गाते हैं। यह
ऐसा हुआ जिसे इस्राएल के लोग सदा करते रहे अर्थात
योशिय्याह के करुण गीत गाते रहे। वे गीत "करुण
गीतों" के संग्रह में लिखे हैं।

26-27अन्य जो कुछ योशिय्याह ने अपने राज्यकाल
में, शासन के आरम्भ से अन्त तक किया, वह यहूदा
और इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक
में लिखा गया है। वह पुस्तक यहोवा के प्रति उसकी
भक्ति और उसने यहोवा के नियमों का पालन कैसे
किया, बताती है।

यहूदा का राजा यहोआहाज

36 यहूदा के लोगों ने यरूशलेम में नया राजा होने
के लिये यहोआहाज को चुना। यहोआहाज
योशिय्याह का पुत्र था। **2**यहोआहाज जब यहूदा का राजा
हुआ, वह तेईस वर्ष का था। वह यरूशलेम में तीन
महीने राजा रहा। **3**तब मिस्र के राजा नको ने यहोआहाज
को बन्दी बना लिया। नको ने यहूदा के लोगों को पौने
चार टन चाँदी और पचहत्तर पौंड सोना दण्डराशि देने
को विवश किया। **4**नको ने यहोआहाज के भाई को
यहूदा और यरूशलेम का नया राजा होने के लिये चुना।
यहोआहाज के भाई का नाम एल्याकीम था। तब नको
ने एल्याकीम को एक नया नाम दिया। उसने उसका
नाम यहोयाकीम रखा किन्तु नको यहोआहाज को मिस्र
ले गया।

यहूदा का राजा यहोयाकीम

5यहोयाकीम उस समय पच्चीस वर्ष का था जब वह
यहूदा का नया राजा हुआ। वह ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम
में राजा रहा। यहोयाकीम ने वह नहीं किया जिसे यहोवा
चाहता था कि वह करे। उसने अपने यहोवा परमेश्वर
के विरुद्ध पाप किया।

6बाबेल से नबूकदनेस्सर ने यहूदा पर आक्रमण किया।
उसने यहोयाकीम को बन्दी बनाया और उसे काँसे की
जंजीरों में डाला। तब नबूकदनेस्सर राजा यहोयाकीम
को बाबेल ले गया। **7**नबूकदनेस्सर यहोवा के मन्दिर से
कुछ चीजें ले गया। वह उन चीज़ों को बाबेल ले गया
और अपने घर अर्थात राजमहल में रखा। **8**यहोयाकीम
ने जो अन्य काम किये, जो भंयकर पाप उसने किये
तथा हर एक काम जिसे करने का वह अपराधी था, ये
सब "यहूदा और इस्राएल के राजाओं का इतिहास" नाम
पुस्तक में लिखे हैं।

यहोयाकीन, यहोयाकीम के स्थान पर नया राजा
हुआ। यहोयाकीन, यहोयाकीम का पुत्र था।

यहूदा का राजा यहोयाकीन

9यहोयाकीन जब यहूदा का राजा हुआ, अट्ठारह
वर्ष का था। वह यरूशलेम में तीन महीने दस दिन
राजा रहा। उसने वे काम नहीं किये जिसे यहोवा
चाहता था कि वह करे। यहोयाकीन ने यहोवा के
विरुद्ध पाप किया। **10**बसन्त में राजा नबूकदनेस्सर ने
कुछ सेवकों को यहोयाकीन को पकड़ने को भेजा।
वे यहोयाकीन और यहोवा के मन्दिर से कुछ
कीमती खजाने बाबेल ले गए। नबूकदनेस्सर ने
सिदकिय्याह को यहूदा और यरूशलेम का नया राजा
होने के लिये चुना। सिदकिय्याह यहोयाकीन का
सम्बन्धीथा।

योशिय्याह ... करुण गीत दूसरा शब्द यिर्मयाह के शोक–गीत है। देखें यिर्म. 22:10

यहूदा का राजा सिदकिय्याह

11सिदकिय्याह जब यहूदा का राजा बना, इक्कीस वर्ष का था। वह यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राजा रहा। 12सिदकिय्याह ने वह नहीं किया जिसे उसका यहोवा परमेश्वर चाहता था कि वह करे। सिदकिय्याह ने अपने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। यिर्मयाह नबी ने यहोवा की ओर से सन्देश दिये किन्तु उसने अपने को विनम्र नहीं बनाया और यिर्मयाह नबी ने जो कहा उसका पालन नहीं किया।

यरूशलेम ध्वस्त हुआ

13सिदकिय्याह ने नबूकदनेस्सर के विरुद्ध विद्रोह किया। कुछ समय पहले नबूकदनेस्सर ने सिदकिय्याह से प्रतिज्ञा कराई थी कि वह नबूकदनेस्सर का विश्वासपात्र रहेगा। सिदकिय्याह ने परमेश्वर का नाम लिया और नबूकदनेस्सर के प्रति विश्वासपात्र बने रहने की प्रतिज्ञा की। किन्तु सिदकिय्याह बहुत अड़ियल था और उसने अपना जीवन बदलने, इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के पास लौटने तथा उसकी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया। 14याजकों के सभी प्रमुखों और यहूदा के लोगों के प्रमुखों ने अधिक पाप किये और यहोवा के बहुत अधिक अविश्वसनीय हो गए। उन्होंने अन्य राष्ट्रों के बुरे उदाहरणों की नकल की। उन प्रमुखों ने यहोवा के मन्दिर को ध्वस्त कर दिया। यहोवा ने मन्दिर को यरूशलेम में पवित्र बनाया था। 15उनके पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर ने अपने लोगों को चेतावनी देने के लिये बार बार सन्देशवाहक को भेजा। यहोवा ने यह इसलिये किया कि उसे उन पर करुणा थी और मन्दिर के लिये दुःख था। यहोवा उनको या अपने मन्दिर को नष्ट नहीं करना चाहता था। 16किन्तु परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के संदेशवाहकों (नबियों) का मजाक उड़ाया। उन्होंने परमेश्वर के संदेशवाहकों (नबियों) की अनसुनी कर दी। उन्होंने परमेश्वर के संदेश से घृणा की। अन्त में परमेश्वर और अधिक अपना क्रोध न रोक सका। परमेश्वर अपने लोगों पर क्रोधित हुआ और उसे रोकने के लिये कुछ भी नहीं था जिसे किया जा सके।

17इसलिये परमेश्वर बाबेल के राजा को यहूदा के लोगों पर आक्रमण करने के लिये लाया। बाबेल के राजा ने युवकों को मन्दिर में होने पर भी मार डाला। उसने यहूदा और यरूशलेम के लोगों पर दया नहीं की। बाबेल के राजा ने युवा और वृद्ध सभी लोगों को मारा। परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर को यहूदा और यरूशलेम के लोगों को दण्ड देने दिया। 18नबूकदनेस्सर परमेश्वर के मन्दिर की सभी चीज़ें बाबेल ले गया। उसने परमेश्वर के मन्दिर, राजा तथा राजा के अधिकारियों की सभी कीमती चीज़ें ले लीं।

19नबूकदनेस्सर और उसकी सेना ने मन्दिर को आग लगा दी। उन्होंने यरूशलेम की चहारदीवारी गिरा दी और राजा तथा उसके अधिकारियों के सभी घरों को जला दिया। उन्होंने यरूशलेम से हर एक कीमती चीज़

ली या उसे नष्ट कर दिया। 20नबूकदनेस्सर इसके बाद भी जीवित बचे लोगों को, बाबुल ले गया और उन्हें दास होने को विवश किया। वे लोग बाबेल में दास की तरह तब तक रहे जब तक फारस के सम्राट ने बाबेल के राज्य को पराजित नहीं किया।

21इस प्रकार यहोवा ने, इस्राएल के लोगों को जो कुछ यिर्मयाह नबी से कहलवाया, वह सब ठीक घटित हुआ। यहोवा ने यिर्मयाह द्वारा कहा था: "यह स्थान सत्तर वर्ष तक सूना उजाड़ देश रहेगा।* यह सब्त विश्राम* की क्षतिपूर्ति के रूप में होगा जिसे लोग नहीं करते।"

22यह तब पहले वर्ष हुआ जब फारस का राजा कुस्रू शासन कर रहा था। यहोवा ने यिर्मयाह नबी के माध्यम से जो वचन दिये वे सत्य घटित हुए। यहोवा ने कूस्रू के हृदय को कोमल बनाया जिससे उसने आदेश लिखा और अपने राज्य में हर एक स्थान पर भेजा: 23फारस का राजा कूस्रू यही कहता है: स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा ने मुझे पूरी पृथ्वी का राजा बनाया है। उसने मुझे एक मन्दिर यरूशलेम में अपने लिये बनाने का उत्तरदायित्व दिया है। अब तुम सभी, जो परमेश्वर के लोग हो, यरूशलेम जाने के लिये स्वतन्त्र हो। यहोवा परमेश्वर तुम्हारे साथ हो।

यह स्थान ... रहेगा देखे यिर्म. 25:11; 29:10

सब्त विश्राम नियम कहता था कि हर सातवें वर्ष भूमि में खेती नहीं करनी चाहिए। देखें लैव्य. 25:1–7